

JOINT BANK A/C

	Rs.		Rs.
To A	30,000	By Joint Venture A/c	50,000
To B	20,000	By A	74,930
To C	10,000	By B	42,490
To Joint Venture A/c	1,25,000	By C	18,330
To Joint Venture A/c	750		
	<u>1,85,750</u>		<u>1,85,750</u>

JOINT VENTURE'S (PARTNER'S ACCOUNT)

	A Rs.	B Rs.	C Rs.		A Rs.	B Rs.	C Rs.
To Joint Bank	74,930	42,490	18,330	By Joint Bank	30,000	20,000	10,000
				By Joint Venture	2,450	1,250	1,250
				By Joint Venture	42,480	21,240	7,080
	<u>74,930</u>	<u>42,490</u>	<u>18,330</u>		<u>74,930</u>	<u>42,490</u>	<u>18,330</u>

II. एक ही भागीदार द्वारा संयुक्त साहस का हिसाब रखना—

(When one Vantürer Keeeps the Account of Joint Venture)

इस विधि के अनुसार संयुक्त साहस व्यवसाय का कार्य एकही भागीदार को सौंप दिया जाता है, शेष भागीदार केवल अपनी पूंजी की लगाते हैं। संयुक्त साहस व्यवसाय के समाप्त हो जाने पर प्रत्येक भागीदार की जितनी रकम निकलती है उनको चका दी जाती है। कार्यकारी भागीदार को उसकी सेवाओं के प्रतिफल में अतिरिक्त वेतन या कमीशन दिया जाता है।

संयुक्त साहसी के द्वारा निम्नलिखित प्रविष्टियां अपनी पुस्तकों में की जाती हैं—

- दूसरे सह-साहसियों द्वारा अपने हिस्से की पूंजी लगाने पर—  
Cash or Bank A/c Dr. ....  
    To other Co-adventurers .....  
(Being cash received from other co-adventurers.)
- मान के नकद क्रय किए जाने पर—  
Joint Venture A/c Dr. ....  
    To Cash/Bank .....  
(Being goods purchased for joint venture.)
- उधार माल क्रय किए जाने पर—  
Joint venture A/c Dr. ....  
    To Supplier .....  
(Being goods purchased on credit for joint venture.)
- कार्यकर्ता सह-साहसी द्वारा अपने स्टॉक से माल लाने पर—  
Joint Venture A/c Dr. ....  
    To Purchases A/c .....  
(Being goods supplied from own stock to joint venture.)
- अन्य सह-साहसियों द्वारा माल देने पर—  
Joint Venture A/c Dr. ....  
    To Other Co-adventure A/c .....  
(Being goods supplied into joint venture from other co-adventures).

6. संयुक्त साहस के लिए व्यय का भुगतान करने पर—  
 Joint Venture A/c Dr. ....  
     To Cash or Bank A/c  
 (Being expenses paid for on joint venture.)
7. माल के नकद बेचे जाने पर—  
 Cash or Bank A/c Dr. ....  
     To Joint Venture A/c  
 (Being goods sold for cash.)
8. माल के उधार बेचे जाने पर—  
 Debtors' A/c Dr. ....  
     To Joint Venture A/c  
 (Being goods sold on credit for joint venture.)
9. कार्यकर्ता सह साहसी द्वारा कमीशन प्राप्त करने पर—  
 Joint Venture A/c Dr. ....  
     To Commission A/c  
 (Being commission charged on joint venture.)
10. बिना बिका माल सह-साहसियों द्वारा बांटने पर—  
 (a) कार्यकर्ता साहसी द्वारा माल लेने पर—  
 Purchases A/c Dr. ....  
     To Joint Venture A/c  
 (Being unsold goods taken by working partners.)  
 (b) अन्य सह साहसियों द्वारा माल लेने पर—  
 Other Co-adventurers A/c Dr. ....  
     To Joint Venture A/c  
 (Being unsold goods taken by other co-adventurers.)
11. लाभ का बंटवारा करने पर—  
 Joint Venture A/c Dr. ....  
     To Profit and Loss A/c  
     To Other Co-adventurer's A/c  
 (Being the amount of profit distributed.)
12. हानि का बंटवारा करने पर—  
 Profit and Loss A/c Dr. ....  
 Other Co-adventurers' A/c Dr. ....  
     To Joint Venture A/c  
 (Being the amount of loss distributed.)
13. अन्य सह-साहसियों की रकम लौटाने पर—  
 Co-adventurer's A/c Dr. ....  
     To Cash/Bank  
 (Being amount paid in full settlement.)

**उदाहरण 6—**सुबोध ने 20,000 रुपए के मूल्य का माल खरीदा और उसे गीता एण्ड सन्स को बेचने के लिए भेज दिया। काम का विभाजन बराबर-बराबर होता है। सुबोध ने माल पर 300 रु. किराया और बीमे के व्यय किए। उसने

गीता एण्ड सन्स पर तीन माह का 9000 रुपए का एक बिल लिखा और उसे 8880 रुपए में भुना लिया। माल की प्राप्ति पर गीता ने 200 रु. किराया व 60 रुपए संग्रह व्यय भुगतान किए। उसने सारा माल 31000 रु. में बेच दिया। और उसके इस सम्बन्ध में 170 रु. वितरण व्यय हुए। विक्रय राशि प्राप्त होने के फौरन बाद उसने सुबोध को देय राशि का एक बैंक ड्रॉफ्ट संलग्न करके विक्रय विवरण सहित भेजा।

आप सुबोध की पुस्तकों में जनरल प्रविष्टियां कीजिए ओर संयुक्त साहस खाता व गीता एण्ड सन्स का खाता बनाइए।

**Solution:**

**In the Books of Subodh  
JOURNAL**

	Dr.	Rs.	Rs.
Joint Venture A/c To Cash A/c (Being goods purchased for joint venture.)	Dr.	20,000	20,000
Joint Venture A/c To Cash A/c (Being expenses paid.)	Dr.	300	300
Bill Receivable A/c To Geeta & Sons (Being acceptance received at three months.)	Dr.	9,000	9,000
Bank A/c Discount A/c To Bill receivable (Being Bill receivable discountred)	Dr. Dr.	8,880 120	9,000
Joint Venture A/c To Discount A/c (Being discount charged from joint Venture A/c)	Dr.	120	120
Joint Venture A/c To Geeta & Sons (Being expenses Rs. 200 for freight and Rs. 60 for storage paid by Geeta & sons)	Dr.	260	260
Geeta & sons To Joint Venture A/c (Being goods sold by Geeta & Sons.)	Dr.	31,000	31,000
Joint Venture A/c To Geeta & Sons (Being disbursement expenses paid by Geeta & Sons.)	Dr.	170	170
Joint Venture A/c To Profit and Loss A/c To Geeta & Sons (Being profit distributed.)	Dr.	10,200	5,100 5,100

Dr.

## JOINT VENTURE ACCOUNT

Dr.

	Rs.		Rs.
To Cash (Purchases)	20,000	By Geeta & Sons	31,000
To Cash (expenses)	300		
To Discount (on B/R discounted)	120		
Top Geeta & Sons—	Rs.		
Freight	200		
Storage	60		
Disbursement Exp.	170	430	
To Profit :			
Prifit & Loss A/c (½)	5075		
Geeta & Sons (½)	5075		
	<u>10,150</u>	<u>31,000</u>	<u>31,000</u>

Dr.

## GEETA &amp; SONS ACCOUNT

Cr.

	Rs.		Rs.
To Joint Venture A/c (Sales)	31,000	By Bill Receivable A/c	9,000
		By Joint Venture A/c	
		Rs.	
		Freight	200
		Storage	60
		Disbursement Expenses	170
			<u>430</u>
		By Joint Ventre A/c (Shareof Profit)	5,075
		By Bank A/c	16,495
	<u>31,000</u>		<u>31,000</u>

**III. जब प्रत्येक सह-साहसी पृथक-पृथक हिसाब रखता हो—**इस विधि में प्रत्येक साहसी संयुक्त उपक्रम का कोई कार्य अवश्य करता है। इसलिए प्रत्येक साहसी संयुक्त उपक्रम के सम्बन्ध में अपनी-अपनी पुस्तकों में समस्त हिसाब-किताब रखता है। इसलिस प्रत्येक साहसी को अपनी-अपनी बही में एक संयुक्त उपक्रम खाता तथा अन्य सह-साहसियों के व्यक्तिगत खाते खोलने पड़ते हैं और उनमें आवश्यक जमा खर्च करना पड़ता है क्योंकि प्रत्येक सह-साहसी की पुस्तकों में हिसाब पूर्ण होना चाहिए, इसलिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक सह-साहसी अपने कार्य की गई क्रय-विक्रय तथा खर्चों से सम्बन्धित सूचना की अन्य सह-साहसियों की नियमित रूप से भेजे। इस विधि में निम्न प्रकार से हिसाब-किताब रखा जाता है—

**1. माल क्रय करने पर—**माल का क्रय करने वाला साहसी क्रय की रकम से निम्न प्रविष्टियां करेगा।

(i) नकद माल खरीदने पर—

Joint Venture A/c	Dr.
To cash A/c	
(Being goods purchased for Cash)	

(ii) उधर माल खरीदने पर—

Joint Venture A/c	Dr.
To Seller's A/c	
(Being goods purchased on credit)	

(iii) यदि कोई साहसी अपने स्टॉक से माल देता है—

Joint Venture A/c  
To goods a/c  
(Being goods bought from his personal stock) Dr.

2. क्रय की सूचना देना—प्रत्येक सह-साहसी अपनी क्रय की सूचना दूसरे सह-साहसियों को भेजेगा तथा इसी प्रकार दूसरे साहसी अपनी क्रय की सूचना अन्य सह-साहसियों को भेजेंगे। अन्य साहसियों से क्रय की सूचना प्राप्त होने पर निम्न प्रविष्टि की जाती है—

Joint Venture A/c  
To other Venturer's  
(Being goods purchased by other venturer's on Joint A/c) Dr.

3. संयुक्त उपक्रम पर व्यय—संयुक्त उपक्रम पर यदि किसी प्रकार का कोई खर्च होता है। खर्च करने वाला साहसी इसके लिए निम्न प्रविष्टि होती है—

Joint Venture A/c  
To Cash  
(Being expenses incurred on J.V.) Dr.

4. व्यय की सूचना—जब अन्य साहसियों द्वारा संयुक्त उपक्रम के सम्बन्ध में किए गए व्यय की सूचना प्राप्त होती है तो उस रकम से संयुक्त उपक्रम खाते को डेबिट करते हैं तथा साहसियों के व्यक्तिगत खाते को क्रेडिट करते हैं इसके लिए निम्न प्रविष्टि करते हैं—

Joint Venture A/c  
To other venturers  
(Being Expenses incurred on J.V. other partners) Dr.

5. माल का विक्रय—माल की बिक्री पर बेचने वाला साहसी बिक्री की रकम से निम्न प्रविष्टि करेगा।

(i) नकद विक्रय पर—

Cash A/c  
To Joint Venture A/c  
(Being goods sold for cash) Dr.

(ii) उधार विक्रय पर—

Purchaser's A/c  
To Joint Venture A/c  
(Being goods sold by partners) Dr.

6. बिक्री की सूचना—जब अन्य साहसियों से बिक्री की सूचना प्राप्त होती है तो बिक्री की रकम से संयुक्त उपक्रम खाते को क्रेडिट करते हैं तथा सह-साहसी के व्यक्तिगत खाते को डेबिट करते हैं—

Other Partner  
To Joint Venture A/c  
(Being goods sold by other partners) Dr.

7. विनिमय बिल को भुनाना—यदि संयुक्त उपक्रम में एक साहसी दूसरे साहसी पर एक विपत्र (B/E) लिखता है और बाद में उस विपत्र को बैंक से भुना लेता है तो कटौती की रकम संयुक्त उपक्रम खाते के डेबिट में लिखी जाती है। इसके सम्बन्ध में निम्न प्रविष्टियां की जाती हैं—

(i) बिल के स्वीकार होकर आने पर—

Bills Receivable A/c  
To Other Venturer  
(Being acceptance received from venturer). Dr.

(ii) बिल के भुनाने पर—

Bank A/c or Cash A/c	Dr.
Joint Venture A/c	Dr.
To Bills Receivable A/c	
(Being bill discounted with the bank on Joint A/c)	

8. एजेन्ट द्वारा विक्रय—यदि कभी समस्त साहसियों की ओर से किसी एजेन्ट को माल बेचने के लिए नियुक्त कर लिया जाता है तो माल की बिक्री होने पर समस्त साहसी एजेन्ट के खाते को डेबिट करते हैं तथा संयुक्त उपक्रम खाते को क्रेडिट करते हैं—

Agent	Dr.
To Joint Venture A/c	
(Being Goods sold by Agent)	

9. संयुक्त उपक्रम पर लाभ—उपरोक्त सभी प्रविष्टियां करने पर संयुक्त उपक्रम खाता पूर्ण हो जाता है तथा यदि उसकी क्रेडिट साइड का योग अधिक होता है तो लाभ होता है, यदि डेबिट साइड का योग अधिक होता है तो हानि होती है। और इस लाभ या हानि को समस्त साहसियों के खाते में हस्तांतर कर दिया जाता है—

(i) लाभ होने पर—

Joint Venture A/c	Dr.
To Profit & Loass A/c	
To other venture A/c	
(Being profit transferred to venture A/c)	

(ii) हानि होने पर—

Profit & Loss a/c	Dr.
Other Venturer A/c	Dr.
To Joint Venture A/c	
(Being Loss transferred to venture A/c)	

नोट—प्रत्येक सह-साहसी अपने हिस्से की लाभ-हानि की रकम को लाभ-हानि खाते में हस्तांतर करेगा तथा अन्य साहसियों के व्यक्तिगत खातों में।

10. खातों का निपटारा—इसके पश्चात साहसियों के व्यक्तिगत खातों का बैलेंस यह प्रदर्शित करेगा कि किस साझी से क्या लेना है या क्या देना है और इसके पश्चात प्रत्येक साझी को या तो भुगतान कर दिया जाएगा अथवा उससे पैसे प्राप्त कर लिए जाएंगे।

(i) अन्य साहसियों को भुगतान करने पर—

Other Ventures	Dr.
To Cash A/c	
(Being amount paid in full settlement of J.V.)	

(ii) अन्य साहसियों से प्राप्त करने पर—

Cash A/c	Dr.
To Other Venturers	
(Being amount received in full Settlement)	

उदाहरण 7: सिरधर एण्ड सन्स ने 7,500 रु. का माल खरीदा तथा उसे ठाकुर एण्ड कम्पनी को प्रेषित किया जिसे संयुक्त साहस के तहत बेचा जाना है। लाभों को 2 : 1 में बांटा जाएगा। सिरधर एण्ड सन्स ने 550 रु. भाड़ा, बीमा तथा कार्टरेज पर खर्च किए। और ठाकुर एण्ड कम्पनी पर 3,000 रुपए का बिल लिखा। इस बिल को सिरधर एण्ड सन्स द्वारा 2,900 रुपए में भुना लिया गया। ठाकुर एण्ड कम्पनी द्वारा 330 रुपए किराया आदि के भुगतान किए गए। माल के विक्रय से ठाकुर एण्ड कम्पनी को 12,500 रुपए प्राप्त हुए तथा 250 रुपए विक्रय व्यय पर खर्च हुए। ठाकुर एण्ड कम्पनी ने सकल विक्रय पर 5% कमीशन काटने के पश्चात शेष देय राशि सिरधर एण्ड सन्स को भेज दी। दोनों पक्षों की पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइए।

**Solution :**

**In the Books of Sirdar & Sons  
Joint Venture A/c**

	Rs.		Rs.
To Cash A/c	7,500	By Thacker & Co. (Sales)	12,500
To Cash (Expenses)	550		
To B/R (discounting charges)	100		
To Thacker & Co. (Exp.)	330		
To Thacker & Co. (Sales Exp.)	250		
To Thacker & Co. (Commission)	625		
To P & L A/c      2096.67			
To Thacker & Co.    1048.33	3,145		
	<u>12,500</u>		<u>12,500</u>

**Thacker & Co.**

	Rs.	P		Rs.	P
To Joint Venture A/c	12,500	00	By B/R A/c	3,000	00
			By J.V. A/c (Exp.)	330	00
			By J.V. A/c (Sales Exp.)	250	00
			By J.V. A/c (Commission)	625	00
			By J.V. A/c (Profit)	1,048	33
			By Cash A/c	7,246	67
	<u>12,500</u>	<u>00</u>		<u>12,500</u>	<u>00</u>

**In the Books of Thacker & Sons  
Joint Venture Account**

	Rs.		Rs.
To Sirdar & Sons (Goods purchased)	7,500	By Cash A/c (Cash Sales)	12,500
To Sirdar & Sons (Exp.)	550		
To Sirdar & Sons (B/R Exp.)	100		
To Cash (Exp.)	330		
To Cash (ales Exp.)	250		
To Commission	625		
<b>Profit :</b>			
To P & L A/c      1,048.33			
To Sirdar & Sons    2,096.67	3,145		
	<u>12,500</u>		<u>12,500</u>

**Sirdar & Sons**

	Rs.	P		Rs.	P
To B/P	3,000	00	By J.V. A/c	7,500	00
To cash	7,246	67	By J.V. A/c (Exp.)	550	00
			By J.V. A/c (Discount)	100	00
			By J.V. A/c	2,096	67
	<u>10,246</u>	<u>67</u>		<u>10,246</u>	<u>67</u>

#### 4. स्मारक विधि (Memorandum Method)

इस विधि के अर्न्तगत प्रत्येक सह साहसी अपने व्यवसास की बहियों में ही संयुक्त साहस से सम्बन्धित लेन-देनों का लेखा करता है। इसमें प्रत्येक सह-साहसी केवल अपने ही द्वारा किए गए संयुक्त उपक्रम सम्बन्धी लेन-देनों का लेखा रहता है। लाभ-हानि ज्ञात करने के लिए प्रत्येक सह-साहसी एक स्मारक संयुक्त साहस खाता खोलता है। इसकी प्रक्रिया निम्नलिखित है—

(i) प्रत्येक सह-साहसी अपनी पुस्तकों में एक “Joint Venute with....Account” खोलता है जो एक व्यक्तिगत खाता है और इसका शेष दूसरे सह-साहसी से राशि लेना या देना व्यक्त करता है। इसमें उसके द्वारा किए गए आय-व्यय सम्बन्धी लेन-देन लिखे जाते हैं। इस खाते के डेबिट में व्यय, लागत तथा अन्य राशियां लिखी जाती हैं जो वह संयुक्त साहस के सम्बन्ध में व्यय करता है। उसके द्वारा दूसरे सह-साहसी को भेजी जाने वाली रकम भी इस खाते के नाम पक्ष में लिखी जाती है। इस खाते के क्रेडिट पक्ष में उसके द्वारा किए जाने वाली रकम भी इस खाते के क्रेडिट पक्ष में उसके द्वारा किया गया विक्रय तथा अन्य सह साहसी से प्राप्त राशि लिखी जाती है। संयुक्त साहस सम्बन्धी लाभ के अपने हिस्से को इस खाते के नाम पक्ष में लिखा जाता है।

(ii) संयुक्त साहस-का कार्य समाप्त होने पर प्रत्येक सह साहसी अपनी-अपनी पुस्तकों में खोल गए “Joint Venute with...Account” की प्रतिलिपि दूसरे सह-साहसी को भेज देता है जिससे प्रत्येक सह-साहसी को संयुक्त साहस सम्बन्धी सभी व्यवहारों का विवरण मिल जाता है। इसके पश्चात प्रत्येक सह-साहसी अपनी पुस्तकों में एक स्मारक संयुक्त साहस खाता ‘Memorandum Joint Venture Account’ बनाता है जिसकी सहायता से संयुक्त साहस का लाभ-हानि ज्ञात किया जाता है। इसे लाभ हानि खाता (Profit & Loss Account) की तरह ही बनाया जाता है।

इसके नाम पक्ष में क्रय किए गए समस्त माल का मूल्य, दोनों पक्षों द्वारा किए गए व्यय, कमीशन, कटौती आदि लिखे जाते हैं। इसके जमा पक्ष में माल का विक्रय तथा अन्तिम स्टॉक की राशि लिखी जाती है। इस खाते का क्रेडिट शेष लाभ तथा डेबिट शेष हानि को प्रकट करता है जिसे सह-साहसी लाभ-हानि के अनुपात में बांटते हैं।

नोट—(अ) Joint Venture with....Account से लाभ-हानि मालूम नहीं की जा सकती।

(ब) स्मारक संयुक्त साहस खाता दोहरी लेखा प्रणाली के अनुसार नहीं बनाया जाता। यह खाता तो केवल संयुक्त साहस का लाभ-हानि ज्ञात करने के लिए बनाया जाता है।

### लेखांकन व्यवहार (Accounting Treatment)

#### Journal Entries

- (i) माल क्रय करने पर—
- |                              |     |
|------------------------------|-----|
| Joint Venture with...Account | Dr. |
| To Cash or Creditor's A/c    |     |
- (ii) स्टॉक में से माल देने पर—
- |                               |     |
|-------------------------------|-----|
| Joint Venture with....Account | Dr. |
| To Purchase A/c               |     |
- (iii) व्यय करने पर—
- |                              |     |
|------------------------------|-----|
| Joint Venute with....Account | Dr. |
| To Cash A/c                  |     |
- (iv) अन्य सह-साहसी को रकम भेजने पर—
- |                              |     |
|------------------------------|-----|
| Joint Venture with...Account | Dr. |
| To Cash A/c                  |     |
- (v) विक्रय का नकद विक्रय करने पर या अन्य सह-साहसी से रकम प्राप्त होने पर—
- |                                 |     |
|---------------------------------|-----|
| Cash A/c                        | Dr. |
| To Joint Venutre with...Account |     |

- (vi) बचा हुआ माल स्वयं लेने पर—  
Purchase A/c  
To Joint Venture with.....Account
- (vii) लाभ के अपने हिस्से के लिए—  
Joint Venture with.....Account Dr.  
To Profit and Loss A/c
- (viii) हानि के अपने हिस्से के लिए—  
Profit & Loss A/c Dr.  
To Joint Venture with...Account

**उदाहरण 8**—आर तथा ए म ने पुरानी कारों के क्रय तथा विक्रय के लिए संयुक्त साहस का समझौता किया। लाभ विभाजन अनुपात क्रमशः 3/5 तथा 2/5 था। आर ने 31 मार्च, 1984 को 9,200 रु. में एक कार तथा 1,2000 रु. में एक अन्य कार क्रय की और उनकी मरम्मत पर 2800 रु. खर्च किए। 4 मई, 1984 को इनमें से एक कार 13,400 रु. में और 10 मई, 1984 को दूसरी कार 15,000 रु. में बेच दी गई। आर ने इन विक्रय राशियों को अपने व्यक्तिगत बैंक खाते में जमा करा दिया।

15 मई, 1984 को उसने एक और कार 16,000 रु. में क्रय की और 31 मई, 1984 को इसे 15600 रु। में बेच दिया तथा इस विक्रय राशि को उसने एम को भेज दिया। एम ने इसे अपने व्यक्तिगत बैंक खाते में जमा करा दिया।

25 मई, 1984 को एम ने 7000 रु. में एक कार क्रय की और 1600 रु। इसकी मरम्मत पर व्यय किए तथा 10 अप्रैल, 1984 को इसे 10,000 रु. में बेच दिया। इस विक्रय राशि को उसने अपने बैंक खाते में जमा कराया। 20 अप्रैल, 1984 को यह कार वापिस कर दी गई और एम. ने इसके लिए 9200 रु. लौटा दिए। जैसा कि 31 मई, 1984 तक यह कार बिकी नहीं थी, एम ने इसे अपने लिए 9000 रु. में लिया। संयुक्त साहस के सम्बन्ध में दोनों पक्षों द्वारा निम्नलिखित व्यय किए गए—

	आर रु.	एम रु.
बीमा	500	100
ढुलाई	400	200

दोनों पक्षों के मध्य-आवश्यक भुगतान करने के पश्चात 31 मई 1984 को खाते बन्द कर दिए गए। तैयार कीजिए। (i) एम की पुस्तकों में आर के साथ संयुक्त साहस खाता, (ii) स्मारक संयुक्त साहस खाता, (iii) आर की पुस्तकों में एम के साथ संयुक्त साहस खाता।

**Solution—**

**Books of M**  
Joint Venture with R Account

1984		Rs.	1984		Rs.
March 25	To Bank A/c (Car Purchased)	7,000	April 30	By Bank A/c (Sales)	10,000
	To Bank A/c (Repaires)	1,600		By Purchases A/c	9,000
April 30	To Bank A/c	9,200	May, 31	(car taken over)	
	To Bank A/c (insurance)	100		By Bank A/c	15,600
	To Bank	200		(Amount receives from R)	
May 31	(Cartage)				
	To Profit and Loss A/c	1,600			
	(Shares of Profit)				
	To Bank A/c (Balance paid to R)	14,900			
		<u>34,600</u>			<u>34,600</u>

**Book of R**  
**Joint Venture with M Account**

1984		Rs.	1984		Rs.
Mar. 31	To Bank A/c (Car purchased)	21,200	May 4	By Bank A/c (Sales)	13,400
	To Bank A/c (Repair)	2,800	May 10	By Bank A/c (Sales)	15,000
May 15	To Bank A/c (Car purchased)	16,000	May 31	By Bank A/c (Sales)	15,600
May 31	To Bank A/c (Insurance)	500		By Bank A/c (Amount received from M)	14,900
	To Bank A/c (Payment to M)	15,600			
	To Bank A/c (Cartage)	400			
	To Profit and Loss A/c (Share of Profit)	2,400			
		58,900			58,900

**Memorandum Joint Venture Account**

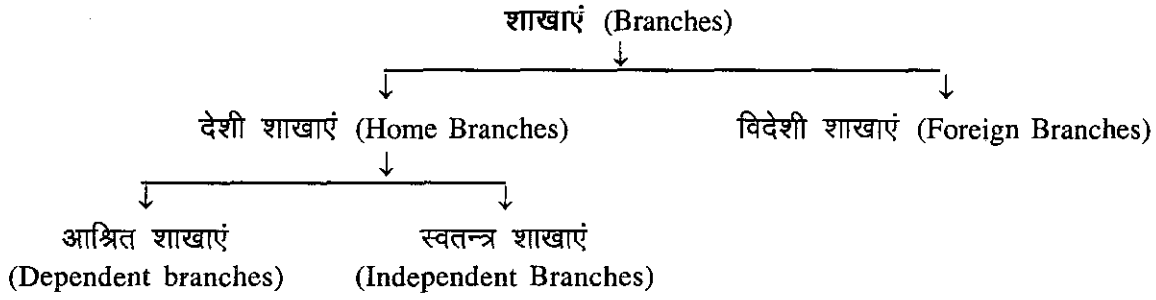
	Rs.		Rs.
To Cars Purchased		By Sales :	
R 9200 + 1200 + 1600 = 37,200		R 13,400 + 15,000 + 15,600 = 44,600	
M 7,000	44,200	M 10,000	
To Repairs :		Less Allowance on	54,000
R 2,800		Return	9,200
M 1,600	4,400		44,800
To Insurance & Cartage :		By Car taken over	
R 900		By M	9,000
M 300	1,200		
To Net Profit :			
R. 2,400			
M 1,600	4,000		
	53,800		53,800

**शाखा खाते**  
**(Branch Accounts)**

व्यवसाय के दो मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना (profit Motive) तथा सेवा भाव (service Motto) में से लाभ कमाना किसी भी संस्था का प्राथमिक उद्देश्य होता है। प्रत्येक व्यापारी अपने लाभों में वृद्धि चाहता है। लाभों में ज्यादा से ज्यादा वृद्धि के लिए वह देश-विदेश में अपनी शाखाएं खोलता है। विभिन्न शाखाओं (Branches) का प्रबन्ध एवं नियन्त्रण (Management & control) मूल कार्यालय द्वारा किया जाता है। जिसे प्रधान कार्यालय (Head Office) कहते हैं। विभिन्न शहरों में दिल्ली क्लार्क मिल्स की दुकानें (शाखाएं) इसके उदाहरण हैं।

शाखा खातों (Branch Accounts) का उद्देश्य प्रत्येक शाखा का लाभ-हानि जानना, शाखा के कार्यों पर पूर्ण नियन्त्रण करना प्रत्येक शाखा के लिए माल तथा रोकड़ की व्यवस्था करना तथा शाखा की कार्य क्षमता में वृद्धि करना होता है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शाखा व प्रधान कार्यालय के बीच होने वाले व्यवहारों का उचित लेखा रखना आवश्यक है। शाखा के लिए प्रयोग की जाने वाली लेखा-पद्धति शाखा की प्रकृति एवं आकार तथा प्रधान कार्यालय द्वारा किए जाने वाले आवश्यक नियन्त्रण पर आधारित होती है।

लेखांकन के दृष्टिकोण से शाखाओं को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है—



**1. देशी शाखाएं (Home Branches)—**

- (a) आश्रित शाखाएं (Dependent Branches)
- (b) स्वतन्त्र शाखाएं (Independent Branches)

**2. विदेशी शाखाएं (Foreign Branches)**

**1. (a) आश्रित शाखाएं (Dependent Branches)—**आश्रित शाखाएं को पूर्ण लेखा पुस्तकें न रखने वाली शाखाएं भी कहते हैं। जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि ये शाखाएं पूर्ण लेखा पुस्तकें नहीं रखती वरन उनका हिसाब किताब प्रधान कार्यालय (Head Office) द्वारा रखे जाते हैं। इनका एक दूसरा नाम एजेन्सी शाखा (Agency Branch) भी है।

**विशेषताएं (Characteristics)**

इस प्रकार की शाखाओं की निम्नलिखित विशेषताएं हैं—

- (i) ये शाखाएं केवल ऐसा माल बेचती हैं जो प्रधान कार्यालय द्वारा भेजा जाता है।
- (ii) शाखा के समस्त स्थायी खर्चों का भुगतान प्रधान कार्यालय द्वारा किया जाता है।
- (iii) फुटकर खर्चों, जैसे—वाहन व्यय, मनोरंजन व्यय आदि के भुगतान के लिए प्रधान कार्यालय फुटकर रोकड़ भेजता है।
- (iv) माल का विक्रय सामान्यतः नकद में ही किया जाता है।
- (v) ऐसी शाखाओं को यह निर्देश होता है कि बिक्री से तथा देनदारों से प्रतिदिन प्राप्त राशि को प्रधान कार्यालय को या प्रधान कार्यालय के नाम बैंक में खुले हुए खाते में जमा करा दें।
- (vi) ऐसी शाखाएं केवल रोकड़ बही, देनदार बही तथा स्मरण पुस्तकों के रूप में स्टॉक रजिस्टर ही रखती हैं।

**लेखांकन व्यवहार (Accounting Treatment)**

प्रधान कार्यालय निम्नलिखित में से किसी एक विधि द्वारा आश्रित शाखाओं के खाते रख सकता है।

- 1. देनदार या प्रत्यक्ष पद्धति (Debtors of Direct Method)
- 2. अन्तिम खाता पद्धति (Final Accounts Method)
- 3. स्टॉक तथा देनदार पद्धति (Stock and Debtors Method)

**देनदार या प्रत्यक्ष पद्धति (Debtors or Direct Method)**

इस पद्धति के अन्तर्गत प्रधान कार्यालय एक शाखा के लिए केवल एक खाता खोलता है, जिसे 'शाखा खाता' (Branch Account) कहते हैं। यह खाता लाभ-हानि प्रकट करता है। शाखा खाता एक नाममात्र खाता (Nominal Account) होता है। इस पद्धति को अवास्तविक खाता विधि (Nominal Account System) के नाम से भी जाना जाता है। इस खाते की मुख्य विशेषता यह है कि यह खाता प्रधान कार्यालय की पुस्तकों में तैयार किया जाता है। सामान्यतः इस विधि को उस समय अपनाया जाता है जब शाखा का आकार बहुत छोटा होता है। शाखा की प्रकृति एवं आकार के आधार पर लेखा-विधि के लिए आश्रित शाखाओं को निम्नलिखित तीन भागों में बांटा जा सकता है—

(क) प्रधान कार्यालय से लागत मूल्य पर माल प्राप्त करने वाली तथा केवल नकद बिक्री करने वाली शाखाएं (Branch receiving goods from Head Office at Cost Price and making Cash Sales only)—ये शाखाएं प्रधान कार्यालय से लागत मूल्य पर माल प्राप्त करती हैं, उसकी बिक्री केवल नकद में करती हैं और जो कुछ राशि बिक्री द्वारा प्राप्त होती है, उसे प्रधान कार्यालय को भेज देती हैं। इस शाखा द्वारा जो व्यय किए जाते हैं उनके लिए प्रधान कार्यालय अलग से रोकड़ भेजता है। ये शाखाएं अपने यहां कोई खाते नहीं खोलती हैं। इन शाखाओं की लाभ-हानि ज्ञात करने के लिए मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में निम्नलिखित प्रविष्टियां की जाती हैं—

1. शाखा के पास प्रारम्भिक रहतिया, फुटकर रोकड़ तथा अन्य सम्पत्ति होने पर—
 

Branch A/c	...Dr.
To Opening Stock A/c (Stock at Branch)	
To Opening Petty Cash A/c	
To Opening balance of Other Assets A/c	
(For Opening balances of assets at the branch.)	
2. शाखा को माल भेजने पर—
 

Branch A/c	...Dr.
To Goods Supplied to Branch A/c	
(For goods supplied to Branch)	
3. शाखा को व्ययों के भुगतान हेतु रोकड़ भेजने पर—
 

Branch A/c	...Dr.
To Cash or Bank A/c	
(For amount sent to branch for expenses.)	
4. यदि शाखा ने माल वापस किया है—
 

Goods Supplied to Branch A/c	...Dr.
To Branch A/c	
(For goods returned by Branch)	
5. शाखा को फुटकर व्ययों हेतु रोकड़ भेजने पर—
 

Branch A/c	...Dr.
To Cash A/c	
(For amount sent to Branch for petty expenses.)	
6. शाखा से रोकड़ प्राप्त करने पर—
 

Cash A/c	...Dr.
To Branch A/c	
(For cash received from Branch.)	
7. शाखा के पास वर्ष के अन्त में अन्तिम स्टॉक, फुटकर रोकड़ तथा अन्य सम्पत्ति होने पर—
 

Stock at Branch A/c (Closing Stock)	...Dr.
Petty Cash at Branch A/c	...Dr.
Other Assets at Branch A/c	...Dr.
To Branch A/c	
(For closing balances of Branch.)	
8. शाखा खाते में लाभ होने पर (यदि क्रेडिट पक्ष का योग डेबिट पक्ष के योग से अधिक है)—
 

Branch A/c	...Dr.
To General Profit & Loss A/c	
(For profit transferred to General Profit & Loss A/c.)	

9. शाखा खाते में हानि होने पर—

General Profit & Loss A/c	...Dr.
To Branch A/c	
(For loss transferred to P & L A/c)	

10. शाखा को भेजे गए माल का खाता बन्द करने पर—

Goods Supplied to Branch A/c	...Dr.
To Trading A/c	
(For balance in Goods supplied to Branch A/c Transferred to Trading A/c.)	

प्रधान कार्यालय की पुस्तकों में शाखा खाता (Branch Account in the Books of Head Office)—उपर्युक्त प्रविष्टियों के आधार पर यदि शाखा खाता बनाया जाए तो उसका प्रारूप निम्नलिखित होगा—

BRANCH ACCOUNT

	Rs.		Rs.
To Balance (Opening Balance of Assets b/d—		By Goods Supplied to branch A/c	.....
(i) Stock	.....	(Returned by Branch)	
(ii) Petty Cash	.....	By Cash/Bank A/c	.....
(iii) Any other Assets	.....	(Cash Received from Branch)	
To Goods Supplied to Branch A/c	.....	By Balance (Closing balances of Assets) c/d:	
To Cash/bank A/c (Expenses)	.....	(i) Stock	.....
To Cash/Bank A/c (Petty Expenses)	.....	(ii) Petty Cash	.....
To General Profit & Loss A/c (if profit)	.....	(iii) Other Assets	.....
		By General Profit & Loss A/c (if loss)	.....
	.....		.....

**Example 1**

हिन्दुस्तान लिमिटेड की एक शाखा भोपाल में है जो नकद प्राप्ति को प्रतिदिन प्रधान कार्यालय को भेजती है तथा शाखा के समस्त व्ययों का भुगतान, प्रधान कार्यालय करता है। प्रधान कार्यालय तथा शाखा के लेन-देन 31 दिसम्बर, 1998 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए निम्नलिखित हैं—

Stock at Branch (शाखा का रहतिया) 1 जनवरी, 1998 को	6,000
Goods supplied to branch during the year (वर्ष के दौरान शाखा को भेजा गया माल)	1,20,000
Cash sent to Branch for (शाखा को निम्न कि लिए रोकड़ भेजी)—	
Rent (किराया)	1,100
Salaries (वेतन)	9,000
Insurance (बीमा)	300
Goods returned by Branch (शाखा ने माल वापिस किया)	3,000
Cash sent to Branch for Petty expenses (शाखा को फुटकर व्ययों हेतु रोकड़ भेजी)	500
Cash received from the branch during the year (वर्ष के दौरान शाखासे रोकड़ प्राप्त की)	1,20,000
Cash sent by Branch on 29 December, 1998 still in transit (29 दिसम्बर, 1998 को शाखा ने रोकड़ भेजी जो कि अभी रास्ते में है)	5,000
Stock at Branch (शाखा का रहतिया 31 दिसम्बर, 1998 को	10,000
Balance of Petty Cash (फुटकर रोकड़ का शेष) 31 दिसम्बर, 1998 को	50

Outstanding Rent (अदत्त किराया) 31 दिसम्बर, 1998 को

100

प्रधान कार्यालय की पुस्तक में जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा शाखा खाता तैयार कीजिए।  
Give Journal entries and show the Branch Account in the books of Head Office.

**Solution—**

**Books of Head Office  
Journal Entries**

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr.	Amount Cr.
	Bhopal Branch A/c Dr. To Opening Stock at Branch A/c (For opening balance of branch Stock)		Rs. 6,000	Rs. 6,000
	Bhopal Branch A/c Dr. To Goods supplied To Branch A/c (For goods supplied to branch)		1,20,000	1,20,000
	Bhopal Branch A/c Dr. To Cash A/c (For amount sent to branch for rent, salaries & insurance)		10,400	10,000
	Goods Supplied to Branch A/c Dr. To Bhopal Branch A/c (For goods returned by branch)		3,000	3,000
	Bhopal Branch A/c Dr. To Cash A/c (For amount sent to Branch for petty expenses)		500	500
	Cash A/c Dr. To Bhopal Branch A/c (For cash received from Branch)		1,20,000	1,20,000
	Cash in Transit A/c Dr. To Bhopal Branch A/c (for cash sent by branch still in transit)		5,000	5,000
	Closing Stock at Branch A/c Dr. Closing Petty Cash at Branch A/c Dr. To Bhopal Branch A/c (For closing balance of branch)		10,000 50	10,050
	Bhopal Branch A/c Dr. To Outstanding Rent a/c (For Rent due to Branch)		100	100
	Bhopal branch A/c Dr. To General Profit & Loss A/c (For profit transferred to general profit & Loss account)		1,050	1,050
	Goods Supplied to Branch a/c Dr. To Trading A/c (For balance of goods supplied to branch A/c Transferred to Trading A/c I.E. Rs. 1,20,000—Rs.3,000)		1,17,000	1,17,000

**Bhopal Branch Account**

	Rs.		Rs.
To Opening Stock at Branch	6,000	By Goods Supplied to Branch A/c	
To Goods Supplied To Branch A/c	1,20,000	(goods returned by branch)	3,000
To Cash A/c (expenses)	10,400	By Cash A/c	1,20,000
To Cash A/c (Petty expenses)	500	By Cash in Transit A/c	5,000
To outstanding Rent A/c	100	By Closing Stock at Branch	1,000
to General Profit & Loss A/c (Bal. fig.)	1,050	By Petty Cash at Branch A/c	50
	<u>1,38,050</u>		<u>1,38,050</u>

(ख) प्रधान कार्यालय से लागत पर माल प्राप्त करने वाली एवं रोकड़ तथा उधार बिक्री करने वाली शाखा (Branch receiving Goods from Head Office Price and making both Cash and Credit Sales)—जब शाखा को नकद बिक्री के साथ-साथ उधार बिक्री करने का अधिकार भी होता है तो प्रधान कार्यालय की पुस्तकों में शाखा के सम्बन्ध में वे ही लेखे किए जाते हैं जो केवल नकद माल बेचने वाली शाखा के सम्बन्ध में किए जाते हैं परन्तु उधार बिक्री से सम्बन्धित निम्नलिखित मदें और बढ़ जाती हैं—

- (i) देनदारों का प्रारम्भिक शेष (Opening Balance of Debtors)
- (ii) देनदारों से प्राप्त रोकड़ (Cash received from Debtors)
- (iii) देनदारों का अन्तिम शेष (Closing Balance of Debtors)

उपर्युक्त मदों के लिए प्रधान कार्यालय निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियां (Journal Entries) करता है :

- (i) Branch A/c .....Dr.  
    To Branch Debtors A/c  
    (For opening balance of debtors.)

---

- (ii) Cash A/c .....Dr.  
    To Branch A/c  
    (For cash received from debtors.)

---

- (iii) Branch Debtors A/c .....Dr.  
    To Branch A/c  
    (For closing balance of debtors.)

शाखा खाते में खतौनी (Posting in Branch Account)—उपर्युक्त प्रविष्टियों की शाखा खाते में निम्नलिखित प्रकार खतौनी की जाती है :

**BRANCH ACCOUNT**

	Rs.		Rs.
To Branch Debtors (Opening Balance)	.....	By Cash A/c (Receipt from Debtors)	.....
	.....	By Branch Debtors (Closing Balance)	.....
	.....		.....

शाखा खाते में तीन मदों की खतौनी की यह प्रभाव पड़ता है कि शुद्ध बिक्री (Net Sales) स्वतः क्रेडिट होती है अर्थात् उधार बिक्री में से माल की वापसी, देनदारों को दिया गया बट्टा व भत्ता तथा डूबत ऋण स्वतः घट जाते हैं। इसलिए प्रधान कार्यालय की पुस्तकों में शाखा द्वारा किए गए निम्नलिखित व्यवहारों का लेखा नहीं किया जाता :

- (i) उधार माल की बिक्री (Goods sold on Credit)
- (ii) देनदारों (ग्राहकों) द्वारा माल वापस करना (goods returned by Debtors)

- (iii) देनदारों को दी गई छूट (Discount allowed to Debtors)  
 (iv) डूबत ऋण (Bad debts written off)  
 (v) देनदारों को दिया गया भत्ता (Allowance allowed to Debtors)

उपर्युक्त पांचों मदें शाखा देनदार खाते (Branch Debtors Account) में लिखी जाती हैं। शाखा खाता में नहीं।

**लुप्त मद (Missing Item)**—प्रत्यक्ष विधि (Direct Method) से लेखा करने पर देनदारों का प्रारम्भिक शेष, देनदारों से प्राप्त रोकड़ तथा देनदारों का अन्तिम शेष इन तीन मदों का होना आवश्यक है। यदि इनमें से कोई मद प्रश्न में नहीं दी हुई है तो ऐसी मद लुप्त (Missing) होती है जो शाखा देनदार खाता (Branch Debtors A/c) बनाने से स्वतः की स्पष्ट हो जाती है। शाखा देनदार खाते का प्रारूप निम्नलिखित है—

#### BRANCH DEBTORS ACCOUNT

	Rs.		Rs.
To Balance b/d (Opening Balance of Debtors either given or balancing figure)	.....	By ash received from Debtors (either given or balancing figure)	.....
To Credit Sales	.....	By Discount allowed	.....
		By Allowance allowed	.....
		By Bad Debts	.....
		By Sales Returns	.....
		By Balance c/d (Closing Balance of Debtors, either given or Balancing figure)	.....
	.....		.....

#### माल का मार्ग में होना (Goods-in-Transit)

यदि माल प्रधान कार्यालय द्वारा भेजा जाता है परन्तु शाखा में खाते बन्द करने की तिथि तक नहीं पहुंचता है तो उसे (Good-in-Transit) कहा जाता है। परन्तु कार्यालय की पुस्तकों में इसकी निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है—

Goods-in-Transit A/c	...Dr
To Branch A/c	
(For goods in transit)	

यदि प्रश्न में प्रधान कार्यालय से भेजे गए माल की बजाय प्राप्त हुआ माल (Goods received from H.O.) दिया हुआ है तो उसका लेखा निम्नलिखित प्रकार से किया जाएगा—

Goods Received From H.O.	32000
Goods in Transit	8,000

#### BRANCH ACCOUNT

	Rs.		Rs.
To Goods Supplied to Branch (32,000 + 8000)	40,000	By Goods in Transit	8,000

(ग) आश्रित शाखा जिन्हें प्रधान कार्यालय बीजक मूल्य या विक्री मूल्य पर माल भेजता है (When Goods are supplied to Branch by Head Office at Invoice or Selling Price)—कभी-कभी शाखा को भेजा गया माल वास्तविक लागत मूल्य से अधिक मूल्य पर भेजा जाता है। जैसे—यदि माल की लागत 8,000 रु. है तथा इसमें 20 प्रतिशत जोड़कर माल का दर्शनार्थ बीजक मूल्य 9,600 रु. का दिया जाए। ऐसा करने के निम्नलिखित कारण होते हैं—

1. प्रधान कार्यालय, भेजे गए माल की वास्तविक लागत को गोपनीय रखना चाहता है।
2. ऐसी दशा में शाखा के मैनेजर को आदेश दे दिया जाता है कि वह माल को बीजक मूल्य अथवा उससे अधिक पर बेचे।
3. इससे शाखा के पास जो माल स्टॉक में है तथा जो नकद रोकड़ है, उस पर पूर्ण नियन्त्रण रहता है।

जब माल बीजक मूल्य पर भेजा जाता है तो प्रश्न का हल उसी प्रकार होता है परन्तु प्रारम्भिक रहतिया (Opening Stock), शाखा को भेजा गया माल (Goods supplied to Branch), शाखा द्वारा लौटाया गया माल (Goods returned by Branch) तथा अन्तिम रहतिया (Closing Stock) लागत पर न दिखाकर बीजक मूल्य पर दिखाया गया होता है। इसलिए शाखा का लाभ-हानि ज्ञात करने से पहले इन मदों में सम्मिलित लाभ को घटाने के लिए समायोजन प्रविष्टियां करना आवश्यक है ताकि ये मद लागत मूल्य में परिवर्तित हो जाएं और शाखा खाता सही लाभ-हानि प्रदर्शित करे। इसके लिए बीजक मूल्य और लागत मूल्य के अन्तर में निम्नलिखित समायोजन प्रविष्टियां और की जाती हैं।

1. प्रारम्भ रहतिया में बढ़ी हुई कीमत के लिए—

Stock Suspense A/c ...Dr.  
To Branch A/c

2. शाखा को भेजे गए माल में बढ़ी हुई कीमत के लिए—

Goods Supplied to Branch A/c ...Dr  
To Branch A/c

3. शाखा द्वारा लौटाए गए माल को शाखा को भेजे गए माल में से घटा दिया जाता है। इसलिए समायोजन प्रविष्टि करने की आवश्यकता नहीं है।

4. अन्तिम रहतिए में बढ़ी हुई कीमत के लिए--

Branch A/c ... ..Dr.  
To Stock Suspense A/c

उपर्युक्त प्रविष्टियां उसी दशा में की जाती हैं यदि प्रधान कार्यालय प्रत्यक्ष रीति से लेखा रखता है। बढ़ी हुई कीमत की गणना के लिए निम्नलिखित सूत्रों का प्रयोग किया जाता है—

1. यदि प्रधान कार्यालय लागत मूल्य (Cost Price) पर लाभ जोड़ता है तो—

$$\text{लाभ} = \frac{\text{बीजक मूल्य} \times \text{दर}}{100 + \text{दर}}$$

उदाहरण के तौर पर यदि प्रधान कार्यालय ने लागत पर 10 प्रतिशत लाभ दिया है तो बीजक मूल्य को 10/110 से गुणा करके बढ़ी हुई कीमत ज्ञात करेंगे।

2. यदि प्रधान कार्यालय बीजक मूल्य (Invoice Price) पर लाभ जोड़ता है तो—

$$\text{लाभ} = \frac{\text{बीजक मूल्य} \times \text{दर}}{100}$$

उदाहरण के तौर पर यदि प्रधान कार्यालय ने बिक्री मूल्य (Selling price) या बीजक मूल्य पर 20 प्रतिशत लाभ लिया है तो बीजक मूल्य को 20/100 से गुणा करके बढ़ी हुई कीमत ज्ञात करेंगे।

अतः यह ध्यान से देखना चाहिए कि बढ़ी हुई कीमत लागत मूल्य पर है या बीजक मूल्य पर।

**प्रधान कार्यालय द्वारा सम्पत्ति खरीदना (Purchase of Assets by the Head Office)**—यदि प्रधान कार्यालय स्वयं कोई सम्पत्ति क्रय करता है तो इसे शाखा खाते के डेबिट पक्ष में लिखा जाता है और सम्पत्ति के अन्तिम शेष (Balance of Assets at the end) के रूप में शाखा खाते के क्रेडिट पक्ष में लिखा जाता है।

**Example 2**—दिल्ली की एक्स एण्ड कम्पनी की मद्रास में शाखा है। प्रधान कार्यालय द्वारा माल बीजक मूल्य पर भेजा

जाता है जो लागत मूल्य पर 20 प्रतिशत लाभ पर है। शाखा के समस्त व्यय प्रधान कार्यालय द्वारा चुकाए जाते हैं। निम्नलिखित विवरणों से प्रधान कार्यालय की पुस्तकों में शाखा खाता तैयार कीजिए—

- (a) When goods are shown at cost price. (जबकि माल लागत मूल्य पर दर्शाया जाता है।)  
 (b) When goods are shown at invoice price. (जबकि माल बीजक मूल्य पर दर्शाया जाता है।)

Opening Balance (प्रारम्भिक शेष) :

	Rs.
Stock at Invoice Price (रहत्या बीजक मूल्य पर)	11,000
Debtors (देनदार)	1,700
Petty Cash (लघु रोकड़)	100
Goods sent to Branch at Invoice Price (बीजक मूल्य पर शाखा का भेज गया माल)	20,000
Expenses made by Head Office (प्रधान कार्यालय द्वारा किए गए व्यय) :	
Rent (किराया)	600
Wages (मजदूरी)	200
Salary, etc. (वेतन, आदि)	900
Remittances made to Head Office (प्रधान कार्यालय के किए गए प्रेषण भुगतान) :	
Cash Sales (नकद विक्रय)	2,650
Cash Collected from Debtors (देनदारों से एकत्रित रोकड़)	21,000
Goods returned by Branch at Invoice Price (बीजक मूल्य पर शाखा द्वारा लौटाया गया माल)	400
Balances at the end (अन्त के शेष) :	
Stock at Invoice Price (बीजक मूल्य पर रहतिया)	13,000
Debtors at the end (अन्त में देनदार)	2,000
Petty Cash (लघु रोकड़)	25

**Solution 2—**

(a) When Goods are shown at Cost Price—

**In the Books of Head Office  
MADRAS BRANCH ACCOUNT**

	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Balance b/d :			By Cash A/c		
Stock (Rs. 11,000 – Rs. 1,833)		9,167	Cash Sales	2,650	
Debtors		1,700	Debtors	21,000	23,650
Petty Cash		100	By Balance c/d :		
To Goods supplied by Branch	20,000		Stock (Rs. 13,000 – Rs. 2,167)		10,833
Less : Returned by Branch	400		Debtors		2,000
	19,600		Petty Cash		25
(Rs. 19,600 – 3,267)		16,333			
To Bank A/c :		Rs.			
Rent	600				
Wages	200				
Salary, etc.	900	1,700			
To General Profit & Loss A/c		7,508			
		36,508			36,508

**(b) When Goods are shown at Invoice Price :**

**MADRAS BRANCH ACCOUNT**

	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Balance b/d :			By Cash A/c :		
Stock		11,000	Sales	2,650	
Debtors		1,700	Debtors	<u>21,000</u>	23,650
Petty Cash		100	By Balance c/d :		
To Goods supplied to Branch A/c	20,000		Stock		13,000
Less : Returned by Branch	<u>400</u>	19,600	Debtors		2,000
To Bank A/c :	Rs.		Petty Cash		25
Rent	600		By Goods supplied to Branch A/c		3,267
Wages	200		20/120 of Rs. 19,600		
Salary, etc.	<u>900</u>	1,700	By Stock Suspense A/c		
To Stock Suspense A/c 20/120 of Rs.	13,000	2,167	20/120 of Rs. 11,000		1,833
To Generat Profit & Loss A/c		7,508			
		<u>43,775</u>			<u>43,775</u>

टिप्पणी—शाखा द्वारा किए गए फुटकर व्ययों को ब्रांच के डेबिट पक्ष में नहीं दिखाया जाता क्योंकि ऐसे व्यय शाखा खाते के क्रेडिट पक्ष में अन्तिम शेष में से घट चुके हैं। अतः लघु रोड़ के प्रारम्भिक शेष 100 रु. को शाखा खाते के डेबिट पक्ष में तथा अन्तिम शेष 25 रु. को क्रेडिट पक्ष में लिखा जाएगा।

**अन्तिम खाता पद्धति  
(Final Accounts Method)**

इस पद्धति के अन्तर्गत (i) शाखा का व्यापारिक एवं लाभ-हानि खाता तथा (ii) शाखा खाता बनाया जाता है। व्यापारिक एवं लाभ-हानि खाता बिल्कुल उसी प्रकार बनाया जाता है जैसे कि साधारण दशा में बनाया जाता है केवल इसमें कुछ मदें बढ़ जाती हैं जैसा कि निम्नलिखित प्रारूप से स्पष्ट है—

**SPECIMEN OF TRADING AND PROFIT & LOSS ACCOUNT**

	Rs.		Rs.
To Opening Stock (at cost)*	.....	By Sales (Cash Sales + Credit Sales)	.....
To Goods Supplied to Branch (at cost)*	.....	By Closing Stock (at Cost)*	....
To Direct Expenses. such as carriage Wages etc.	.....	By Goods in Transit (at coat)*	
To Gross Profit c/d	.....		
	<u>.....</u>		<u>.....</u>
To Expenses paid by H.O.	.....	By Gross Profit b/d	.....
To Expenses paid by Branch	....		
To Depreciation	.....		
To Bad Debts	.....		
To Discount allowed to Debtors	.....		
To Allowance allowed to Debtors	.....		
To Net Profit transferred to General Profit & Loss A/c	.....		
	<u>.....</u>		<u>.....</u>

\* यदि ये मदें बीजक मूल्य (Invoice Price) पर दी हुई हों तो इन्हें सदैव लागत मूल्य पर ही दिखाया जाता है अर्थात् बीजक मूल्य में से बढ़ा हुआ मूल्य घटाकर शेष राशि को ही व्यापारिक खाते में लिखते हैं।

**Example 3**—मुंबई के श्रीराम की दिल्ली में एक शाखा है। शाखा को माल लागत में 20 प्रतिशत जोड़कर भेजा जाता है। शाखा के खर्चों का भुगतान मुंबई से होता है। शाखा केवल एक विक्रय खाता बही तथा देनदारों की खाता बही रखती है। शाखा द्वारा भेजी गई निम्नलिखित सूचनाओं से 31 मार्च 1996 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए शाखा का व्यापारिक तथा लाभ-हानि खाता तैयार कीजिए तथा प्रधान कार्यालय की पुस्तकों में शाखा खाता भी बनाकर दिखाइए:

	Rs.
प्रारम्भिक रहतिया लागत मूल्य पर (Opening Stock at Cost Price)	10,000
अन्तिम रहतिया बीजक मूल्य पर (Closing Stock at Invoice Price)	9,000
उधार विक्रय (Cash Sales)	20,500
नकद विक्रय (Cash Sales)	8,750
देनदारों से प्राप्ति (Receipts from Debtors)	18,950
देनदार (Debtors) on 31st March 96	4,580
प्रधान कार्यालय से प्राप्त माल (Goods received from the Head Office)	15,000
प्रधान कार्यालय द्वारा भेजा गया माल मार्ग में (Goods in transit from the head Office on 31st March 1996)	1,800
प्रधान कार्यालय द्वारा खर्चों का भुगतान (Expenses paid by the head Office for the branch)	5,200

**Solution 3—**

### TRADING AND PROFIT & LOSS ACCOUNT

*for the year ending 31st March 1996*

	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Opening Stock (atcost)		10,000	By Sales :		
To goods Sent to Branch A/c	15,000		Cash	8,750	
Add : Goods in Transit	1,800		Credit	20,500	29,250
	16,800			<u>20,500</u>	<u>29,250</u>
Less : 20/120 of 16,800	<u>2,800</u>	14,000	By Goods in Transit	1,800	
To Gross Profit C/d		14,250	Less : 20/120 of 1,800	<u>300</u>	1,500
			By Closing Stock (at cost)	9,000	
			Less : 20/120 of 9,000	1,500	7,500
		<u>38,250</u>			<u>38,250</u>
To Expenses		5,200	By Gross Profit b/d		14,250
To Net Profit transferred to General Profit & Loss a/c		9,050			
		<u>14,250</u>			<u>14,250</u>

### DELHI BRANCH ACCOUNT

	Rs.		Rs.
To Balance b/d (1.4.95)		By Cash S/c :	
Stock	10,000	Cash Sales	8,750
Debtors	3,030	From Debtors	<u>18,950</u>
To Goods sent to Branch A/c :	Rs.	By Balance c/d (31.3.96)	
Goods received by Branch	15,000	Stock	9,000
Add : Goods in Transit	<u>1,800</u>	Debtors	4,580
To Cash (Expenses)		Goods in Transit	1,800
To Stock Suspense A/c :	1,500	By Goods sent to Branch A/c	
20/120 of Rs. 9,000		20/120 of Rs. 16,800	2,800

To Adjustment for Goods in transit 20/120 of Rs. 1,800	300	
To General Profit & Loss A/c	9,050	
	45,880	45,880

Notes : 1. Calculation of Opening Debtors :

### BRANCH DEBTORS ACCOUNT

	Rs.		Rs.
To balance b/d on 1-4-86 (Bal. Figure)	3,000	By Cash Received from Debtors	18,950
To Sales (Credit)	20,500	By Balance c/d (31-3-87)	4,580
	23,530		23,530

### स्टॉक एवं देनदार प्रणाली (Stock and Debtor Method)

जहां बिक्री बहुत अधिक होती है खाता नकद एवं उधार दोनों प्रकार की बिक्री करती है तथा शाखा प्रबन्धक विक्रय मूल्य को घटा-बढ़ा नहीं सकता ऐसी शाखाओं में स्टॉक एवं देनदार प्रणाली अपनाई जाती है। इसी पद्धति के अन्तर्गतप्रधान कार्यालय की पुस्तकों में प्रत्येक शाखा के लिए एक 'शाखा खाता' (Branch Account) खोलने के स्थान पर कई खाते खोले जाते हैं। जिनका वर्णन निम्नलिखित है—

**1. शाखा स्टॉक खाता (Branch Stock Account)**—इस खाते के डेबिट पक्ष में प्रारम्भिक स्टॉक, शाखा को भेजा गया माल एवं ग्राहकों द्वारा शाखा को लौटाया गया माल लिखा जाता है। इसके क्रेडिट पक्ष में शाखा द्वारा की गई नकद बिक्री, उधार बिक्री तथा नष्ट-भ्रष्ट हुए स्टॉक का मूल्य, प्रधान कार्यालय को लौटाया गया माल तथा अन्तिम स्टॉक की बाकी लिखी जाती है।

यदि इस खाते के डेबिट पक्ष का योग क्रेडिट पक्ष के योग से अधिक होता तो अन्तर की राशि स्टॉक की कमी या क्षति होती है और यदि क्रेडिट पक्ष का योग डेबिट पक्ष के योग से अधिक होता है तो अन्तर की राशि स्टॉक आधिक्य होती है। इस खाते की कमी या आधिक्य को शाखा लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है।

टिप्पणी—यह खाता बीजक मूल्य पर बनाया जाता है

**2. शाखा समायोजन खाता (Branch Adjustment Account)**—इस खाते में ऐसी मदें, जैसे—प्रारम्भिक स्टॉक, शाखा को भेजा गया माल, शाखा से वापस माल, अन्तिम स्टॉक, अन्य कारण से स्टॉक में कमी आदि, में से सम्मिलित लाभ को घटाने के लिए समायोजन किया जाता है। बीजक मूल्य तथा लागत मूल्य के अन्तर से निम्नलिखित समायोजन प्रविष्टियां की जाती हैं।

(i) प्रारम्भिक रहतिया (For Opening Stock)—

Stock Suspense A/c ...Dr  
To Branch Adjustment A/c

(ii) शाखा को भेजे गए माल के लिए (For Goods sent to Branch)—

Goods Supplied to Branch ...Dr.  
To Branch Adjustment A/c

(iii) शाखा को लौटाए गए माल के लिए ((For Goods Returned by Branch)—

Branch Adjustment A/c ...Dr.  
To Goods Supplied to Branch

(iv) अन्तिम रहतिया के लिए (For Closing Stock)—

Branch Adjustment A/c ... Dr.  
To Stock Suspense A/c

**3. शाखा व्यय खाता (Branch Expenses Account)**—इस खाते में खर्च एवं हानियां डेबिट पक्ष में लिखी जाती हैं। जैसे वेतन देनदारों को दिया गया नकद बट्टा व छूट तथा डूबत ऋण किराया, हास, कमीशन आदि इस खाते की बाकी को शाखा लाभ-हानि खाते में हस्तांतरित करके बन्द कर दिया जाता है जिसके लिए निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है—

Branch Profit & Loss A/c

...Dr.

To Branch Expenses A/c

**4. शाखा लाभ-हानि खाता (Branch Profit & Loss Account)**—इस खाते में शाखा समायोजन खाते से सकल लाभ (Gross Profit) या सकल हानि (Gross Loss) हस्तान्तरित की जाती हैं। साथ ही शाखा व्यय खाते का शेष व अन्य हानि भी इस खाते के डेबिट पक्ष में लिखी जाती हैं। दोनों पक्षों का अन्तर शाखा का शुद्ध लाभ या हानि होती है जिसे प्रधान कार्यालय के सामान्य लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है।

**5. शाखा देनदार खाता (Branch Debtor Account)**—यह खाता साधारण देनदार खाते की तरह ही बनाया जाता है इस खाते के बनाने से उधार विक्रय (Credit Sales) की राशि मालूम होती है। जिसे शाखा स्टॉक खाते के क्रेडिट में ले जाते हैं।

**Example 4**—यूनिटी लिमिटेड मुंबई, अपनी लखनऊ शाखा को सभी लागत में 50 प्रतिशत जोड़कर भेजती है तथा समस्त खर्चों का भुगतान करती है सिवाय फुटकर खर्चों के, जिनका भुगतान शाखा करती है। निम्नलिखित विवरण से प्रधान कार्यालय की पुस्तक में स्टॉक एवं देनदार पद्धति से समस्त शाखा खाते तैयार कीजिए—

बीजक मूल्य पर रहतिया (Stock at Invoice Price) 1-1-1986	21,000
शाखा के देनदार (Branch's Debtors) 1-1-1986	7,800
लघु रोकड़ (Pretty Cash) 1-1-1986	1,200
शाखा को बीजक मूल्य पर माल भेजा (Goods sent to Branch at Invoice Price)	78,000
नकद विक्रय (Cash Sales)	30,600
उधार विक्रय (Credit Sales)	54,000
शाखा ने माल वापस किया (Goods returned by Branch)	6,000
ग्राहकों को कटौती (Allowances to Customers)	600
छूट दी (Discount Allowed)	2,400
ग्राहकों ने माल वापस किया (Goods returned by Customers)	4,500
डूबत ऋण (Bad Debts)	1,200
वेतन एवं मजदूरी (Salaries and Wages)	9,600
किराया एवं कर (Rent and Rates)	3,900
देनदारों से प्राप्त धन (Cash received from Debtors)	45,000
बीजक मूल्य पर रहतिया (Stock at invoice price) 31-12-1986	12,000
लघु रोकड़ शेष (Pretty Cash Balance) 31-12-1986	450

प्रत्यक्ष विधि के अन्तर्गत शाखा खाता बनाकर लाभ की जांच भी कीजिए।

Also verify the profit by preparing a Branch Account under Direct Method.

**Solution :**

सभी प्रश्नों में देनदार खाता (Debtors Account) सर्वप्रथम बना लेना चाहिए।

**BRANCH DEBTORS ACCOUNT**

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	7,800	By Allowances	600
To Credit Sales	54,000	By Discount	2,400
		By Sales Return	4,500
		By Bad Debts	1,200
		By Cash A/c	45,000
		By Balance c/d	8,100
	<u>61,800</u>		<u>61,800</u>

**BRANCH STOCK ACCOUNT**  
(At Invoice Price)

	Rs.		Rs.
To Balance b/d (Opening Stock)	21,000	By Sales :	
		Cash	30,000
To Goods sent to Branch	78,000	Credit	54,000
<i>Less</i> : Goods returned by			84,600
Branch	6,000	<i>Less</i> : Sales Return	4,500
	<u>72,000</u>	By Shortage (Balancing figure)	900
		By Balance c/d (Closing Stock)	<u>12,000</u>
	<u>93,000</u>		<u>93,000</u>

**BRANCH ADJUSTMENT ACCOUNT**

	Rs.		Rs.
To Stock Suspense A/c (50/150 of Rs. 12,000)	4,000	By Stock Suspense A/c (50/150 of Rs. 21,000)	7,000
To Shortage (50/150 of Rs. 900)	300 <sup>1</sup>	By Goods sent to Branch (50/150 of Rs. 72,000)	24,000
To Gross Profit transferred to Branch Profit and Loss A/c	26,700		
	<u>31,000</u>		<u>31,000</u>

**BRANCH EXPENSES ACCOUNT**

	Rs.		Rs.
To Allowances to Customers	600	By Profit & Loss A/c	18,450
To Discount allowed	2,400		
To Bad Debts	1,200		
To Salaries and Wages	9,000		
To Rent and Rates	3,900		
To Petty Expenses (Rs. 1,200 – Rs. 450)	750		
	<u>18,450</u>		<u>18,450</u>

**BRANCH PROFIT AND LOSS ACCOUNT**

	Rs.		Rs.
To Branch Expenses A/c	18,450	By Gross Profit b/d	26,700
To Shortage in Stock (Rs. 900 – 300)	600		
To Net Profit	7,650		
	<u>26,700</u>		<u>26,700</u>

**Note (1)**—स्टॉक देनदार विधि (Stock & Debtor System) में माल की कमी (Shortage) के पूरे मूल्य (900 रु.) को स्टॉक खाते (Stock Account) की क्रेडिट में, तथा बढ़े हुए मूल्य (300 रु.) को समायोजन खाते (Adjustment A/c) की डेबिट में और शेष लागत 600 रुप को P & L A/c की डेबिट में लिखा जाता है

### BRANCH ACCOUNT

	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Balance b/d (1.1.86)			By Cash A/c :		
Stock		21,000	Cash Sales	30,000	
Debtors		7,800	Cash received from Debtors	45,000	75,000
Petty Cash		1,200	By Balance c/d (31-12-86)		
To Goods Sent to Branch	78,000		Stock		12,000
Less : Returned By Branch	<u>6,000</u>	72,000	Debtors		8,100
To Cash A/c :			Petty Cash		450
Salaries and Wages	9,600		By Stock Suspenswe A/c		7,000
Rent and Rates	<u>3,900</u>	13,500	(50/150 of Rs. 21,000)		
To Stock Suspense A/c		4,000	By Goods sent to Branch		24,000
(50/150 of Rs. 12,000)			(50/150 of Rs. 72,000)		
To Net Profit transferred to Gen. profit and Loss A/c		7,650			
		<u>1,27,150</u>			<u>1,27,150</u>

**Note**—शाखा खाता बनाकर लाभ-हानि मालूम की जाती है उस दशा में माल की कमी (Shortage) को शाखा खाते में नहीं लिखा जाता क्योंकि यह अन्तिम स्टॉक (Closing Stock) में से पहले ही घट चुकी होती है।

### स्वतन्त्र शाखाएं (Independent Branch)

स्वतन्त्र शाखाओं को पूर्ण लेखा पुस्तकें रखने वाली शाखाओं के नाम से भी जाना जाता है। ये वे शाखाएं होती हैं जिन्हें प्रधान कार्यालय (Head Office) के द्वारा बनाई गई नीति के अनुसार व्यापार करने की पूर्ण छूट अथवा स्वतन्त्रता होती है। प्रधान कार्यालय केवल इनका स्वामी तथा लाभ-हानि को वहन करने वाला होता है

**विशेषताएं (Characterstics)**—

1. बाजार से अतिरिक्त माल खरीदने की स्वतन्त्रता
2. पूर्ण लेखा पुस्तकें रखना
3. तलनपट बनाना तथा प्रधान कार्यालय को भेजना
4. पूंजी खाता की जगह प्रधान कार्यालय खाता (H.O. A/c) तैयार करना

### लेखांकन व्यवहार (Accounting Record)

मुख्य कार्यालय (H.O.) की पुस्तकों में निम्नलिखित खाते तथा विवरण तैयार किए जाते हैं।

1. Incorporated Trial Balance (समामेलित तलपट)
2. Branch Account (शाखा खाता)

**1. सममेलित तलपट**—शाखाओं द्वारा भेजे गए तलपट को मुख्य कार्यालय अपनी पुस्तकों में समामेलन (Incorporation) कर लेता है और इस प्रकार जो तलपट बनता है उसके आधार पर व्यवसाय के अन्तिम खाते (Final Accounts) बनाए जाते हैं।

**2. शाखा खाता**—प्रधान कार्यालय अपनी पुस्तकों में एक शाखा खाता खोलता है इस खाते के डेबिट में मुख्य कार्यालय द्वारा भेजा गया माल तथा रोकड़ तथा क्रेडिट पक्ष में शाखा द्वारा भेजा गया माल तथा रोकड़ लिखी जाती है।

### समामेलन प्रविष्टियाँ (Incorporation Entries)

शाखा द्वारा भेजे गए तलपट की मदों को प्रधान कार्यालय (H.O.) की पुस्तकों को समामेलित करने के लिए प्रधान कार्यालय द्वारा जो प्रविष्टियाँ (Entries) बनाई जाती हैं उन्हें समामेलन प्रविष्टियाँ कहते हैं। शाखा के तलपट को समामेलन करने की तीन विधियाँ हैं।

(i) प्रथम विधि—इस विधि के अन्तर्गत शाखा के तलपट को इस प्रकार समामेलित किया जाता है कि प्रधान कार्यालय अपने व्यापारिक व लाभ-हानि खाते साथ ही शाखा का व्यापारिक व लाभ-हानि खाता बनाने में समर्थ होता है। इस विधि के अनुसार निम्नलिखित समामेलन प्रविष्टियाँ की जाती हैं—

(a) शाखा के व्यापारिक खाते (Branch Trading A/c) से समामेलन प्रविष्टियाँ :

1. शाखा के व्यापारिक खाते के डेबिट पक्ष की मदों के कुल योग से (सकल लाभ को छोड़कर)

Branch Trading A/c ...Dr.  
To Branch A/c

(For debit items of Trading A/c incorporated, i.e. Opening Stock, Purchase, Wages, Carriage, Inward, Sales Return, et.

2. शाखा के व्यापारिक खाते के क्रेडिट पक्ष की मदों के कुल योग से (सकल हानि को छोड़कर)—

Branch A/c ...Dr.  
To Branch Trading A/c

(For Credit items of Trading A/c incorporated, i.e. Sales, Purchase Return, Closing Stock, etc.)

3. शाखा के सकल लाभ (Gross Profit) के लिए—

Branch Trading A/c ...Dr.  
To Branch Profit & Loss A/c

(For Gross Profit transferred to Branch Profit & Loss A/c)

4. शाखा की सकल हानि (Gross Loss) के लिए—

Branch Profit & Loss A/c ...Dr.  
To Branch Trading A/c

(For Gross Loss transferred to Branch Profit & Loss A/c)

(b) शाखा के लाभ-हानि खाते (Branch Profit & Loss A/c) से समामेलन प्रविष्टियाँ—

5. शाखा के लाभ हानि खाते के डेबिट पक्ष की मदों के कुल योग से (शुद्ध हानि को छोड़कर)—

Branch Profit & Loss A/c ...Dr.  
To Branch A/c

(For debit items of Branch Profit & Loss A/c incorporated, i.e., Salaries, Rent commission, etc.

6. शाखा के लाभ-हानि खाते के क्रेडिट पक्ष की मदों के कुल योग से (शुद्ध हानि को छोड़कर)—

Branch A/c Dr.  
To Branch Profit & Loss A/c

(For credit items of Profit & Loss A/c incorporated, i.e., Rent received, Commission Received, etc.)

7. शाखा के शुद्ध लाभ (Net Profit) के लिए—

Branch Profit & Loss A/c ...A/c  
To General Profit & Loss A/c

(For Net Profit transferred to General Profit & Loss A/c)

## 8. शाखा की शुद्ध हानि (Net Loss) के लिए—

General Profit & Loss A/c ...Dr.  
 To Branch Profit & Loss A/c  
 (For Net Loss transferred to General Profit & Loss A/c)

## (c) शाखा के स्थिति विवरण (Balance Sheet) में समामेलन प्रविष्टियाँ—

## 9. शाखा की सम्पत्तियों (Assets) के समामेलन के लिए—

Branch Assets A/c (By name) ...Dr.  
 To Branch A/c  
 (For Branch assets incorporated.)

## 10. शाखा के दायित्वों (Liabilities) के समामेलन के लिए—

Branch A/c ...Dr.  
 To Branch Liabilities A/c (By Name)  
 (For Branch Liabilities incorporated)

(ii) द्वितीय विधि—इस विधि में शाखा के व्यापारक एवं लाभ-हानि खाते की समस्त मदों के स्थापना पर उसकी केवल एक मद शुद्ध लाभ-हानि समामेलित की जाती है, जबकि चिह्न प्रथम विधि की तरह की समामेलित किया जाता है। यह विधि उस दशा में उपयुक्त रहती है जब शाखा अपने अन्तिम खाते स्वयं तैयार करती है और प्रधान कार्यालय को तलपट के स्थान पर अन्तिम खातों की नकल भेजती है। इस विधि में निम्नलिखित समामेलन प्रविष्टियाँ की जाती हैं—

## 1. शाखा के शुद्ध लाभ (Net Profit) के लिए—

Branch A/c ...Dr.  
 To General Profit & Loss A/c  
 (For Net Profit incorporated.)

## 2. शाखा की शुद्ध हानि (Net Loss) के लिए—

General Profit & Loss A/c ...Dr.  
 To Branch A/c  
 (For Net Loss incorporated.)

## 3. शाखा की सम्पत्तियों (Assets) के लिए :

Branch Assets A/c ...Dr.  
 To Branch A/c  
 (For Branch assets incorporated.)

## 4. शाखा दायित्वों (Liabilities) के लिए—

Branch A/c ...Dr.  
 To Branch Liabilities A/c  
 (For Branch Liabilities incorporated)

(iii) तृतीय विधि—इस विधि के अन्तर्गत शाखा के तलपट के डेबिट शेषों का इकट्ठा एक प्रविष्टि में क्रेडिट शेषों को इकट्ठा दूसरी प्रविष्टि में समामेलित कर दिया जाता है और इसके लिए निम्नलिखित प्रविष्टियाँ की जाती हैं—

1. All Debit Balance A/c ...Dr  
 To Branch A/c  
 (For all debit balances incorporated.)

2. Branch A/c ...Dr.  
 To All Credit Balances A/c  
 (For all credit balance incorporated.)

टिप्पणी—शाखा के तलपट या चिह्ने में प्रधान कार्यालय खाते (H.O. Account) का शेष भी दिया होता है। उपर्युक्त तीनों विधियों में इस शेष की समामेलन प्रविष्टि नहीं की जाती क्योंकि यह शेष प्रधान कार्यालय के पुस्तकों में शाखा

खाता (Branch Account) द्वारा पहले से दर्शाया हुआ होता है।

उपर्युक्त सामामेलन प्रविष्टियों की प्रधान कार्यालय की पुस्तकों में खुले हुए 'शाखा खाते' (Branch Account) में खतौनी करने के पश्चात यह खाता स्वतः बन्द हो जाता है अर्थात् शाखा खाते के दोनों पक्षों का योग बराबर हो जाता है। चूंकि सामामेलन के लेखे के माध्यम से प्रधान कार्यालय की समस्त सम्पत्तियां तथा दायित्व ले लेता है अतः शाखा खाता चिट्ठे का स्वरूप बन जाता है जो प्रधान कार्यालय द्वारा शाखा में लगाई गई पूंजी को भी प्रकट करता है।

### शाखा के तलपट का सामामेलन (Incorporation of Branch Trial Balance)

**Example 5**—31 दिसम्बर, 1996 को कानपुर शाखा का तलपट निम्न था (On 31st December, 1996 the Trial Balance of Kanpur Branch stands as follows)—

	Rs.		Rs.
रहतिया (stock) J-10-86	12,000	दिल्ली कार्यालय खाता (Delhi Office A/c)	22,000
फर्नीचर (Furniture)	4,800	विक्रय (Sales)	45,600
देनदार (debtors)	11,200	विविध देनदार (Sundry Creditors)	400
प्रधान कार्यालय से प्राप्त माल (Goods received from H.O.)	32,000		
वेतन, किराया एवं व्यय (Salaries, Rent and Expenses)	4,400		
रोकड़ हस्त (Cash in Hand)	3,600		
	68,000		68,000

31 दिसम्बर, 1986 को रहतियां 9,200 रु. का था। कानपुर शाखा का लाभ ज्ञात कीजिए तथा शाखा की सम्पत्तियों तथा दायित्वों का दिल्ली कार्यालय की पुस्तकों में सामामेलन करने के लिए आवश्यक प्रविष्टियां कीजिए। दिल्ली कार्यालय की खाता-बही में कानपुर शाखा का खाता भी बनाइए।

**Solution—**

#### Books of Head Office BRANCH TRADING AND PROFIT & LOSS ACCOUNT For the year ending 31st December, 1986

	Rs.		Rs.
To Kanpur Branch A/c :	Rs.	By Kanpur Branch A/c :	Rs.
Opening Stock	12,000	Sales	45,600
Goods received from H.O.	32,000	Closing Stock	9,200
To Kanpur Branch P & L A/c	10,800		54,800
	54,800		54,800
To Kanpur Branch A/c (Salaries, Rent and Expenses)	4,400	By Kanpur Branch Trading A/c	10,800
To General profit & Loss A/c	6,400		
	10,800		10,800

**BRANCH BALANCE SHEET**  
as on 31st December, 1986

	Rs.	Rs.		Rs.
Sundry Creditors		400	Cash in Hand	3,600
Delhi Office A/c	22,000		Debtors	11,200
Add : Net Profit	6,400		Closing Stock	9,200
		28,400	Furniture	4,800
		<u>28,800</u>		<u>28,800</u>

**Journal of Head Office**  
**INCORPORATION ENTRIES**

	Dr.	Rs.	Rs.
Branch Trading a/c To Kanpur Branch a/c (For incorporation of opening stock and goods sent.)	Dr.	44,000	44,000
Kanpur Branch A/c To Branch Trading A/c (For incorporation of sales and closing stock.)	Dr.	54,800	54,800
Branch Trading a/c To Branch Profit & Loss A/c (For gross profit transferred to Profit & Loss A/c)	Dr.	10,800	10,800
Branch Profit & Loss A/c To Kanpur branch A/c (For incorporation of Salaries, Rent and Expenses A/c.)	Dr.	4,400	4,400
Branch Profit & Loss A/c To General Profit & Loss A/c (For net profit transferred to General Profit & Loss.)	Dr.	6,400	6,400
Cash Debtors Closing Stock Furniture To Kanpur Branch a/c (For branch Creditors incorporated.)	Dr. Dr. Dr. Dr.	3,600 11,200 9,200 4,800	28,800
Kanpur Branch A/c To Sundry Creditors A/c (For Branch creditors' incorporated.)	Dr.	400	400

**KANPUR BRANCH ACCOUNT**

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	22,000	By Branch Trading A/c	44,000
To Branch Trading A/c	54,800	By Branch Profit & Loss A/c	4,400
To Sundry Creditors	400	By Cash	3,600
		By Debtors	11,200
		By Stock	9,200
		By Furniture	4,800
	<u>77,200</u>		<u>77,200</u>

**Alternative Method (According to Second Method)**

इस विधि में व्यापारिक व लाभ-हानि खाते की सभी मदों की अलग-अलग प्रविष्टियां करने के स्थान पर केवल शुद्ध लाभ की प्रविष्टि कर दी जाती है तथा चिह्ने के मदों की प्रविष्टियां प्रथम विधि की तरह ही की जाती हैं—

**INCORPORATION ENTRIES**

		<b>Rs.</b>	<b>Rs.</b>
Kanpur Branch A/c To General Profit & Loss A/c (For Branch net Profit transferred to Profit A& Loss A/c.)	Dr.	6,400	6,400
Cash	Dr.	3,600	
Debtors	Dr.	11,200	
Closing stock	Dr.	9,200	
Furniture	Dr.	4,800	
To Kanpur Branch A/c (For various Branch Assets incorporated.)			28,800
Kanpur branch A/c To Sundry Creditors a/c (For branch creditors incorporated.)	Dr.	400	400

**KANPUR BRANCH ACCOUNT**

	Rs		Rs.
To Balance b/d	22,000	By Cash	3,600
To genrral profit & Los A/c	6,400	By Debtors	11,200
To Sundry Creditors	400	By Closing Stock	9,200
		By furniture	4,800
	28,800		28,800

**विदेशी शाखा  
(Foreign Branch)**

**अर्थ (Meaning)**—मुख्य कार्यालय (Head Office) की विदेश में स्थित शाखा को विदेशी शाखा (Foreign Branch) कहते हैं।

**विशेषताएँ (Characterstics)**—

- (a) लेन-देन विदेशी मुद्रा (Foreign Exchange) में होते हैं।
- (b) तलपट विदेशी मुद्रा में बनाया जाता है।

**विदेशी शाखाओं के तलपट की राशियों का परिवर्तन  
(Conversion of Foreign Branch Trail Balance)**

विदेशी शाखा के लेन-देन उस देश की मुद्रा में ही होते हैं तथा तलपट भी विदेशी मुद्रा में होता है, अतः समामेलन से पूर्व आवश्यक है कि विदेशी शाखा के तलपट की मदों को प्रधान कार्यालय के देश की मुद्रा में परिवर्तित किया जाए। शाखा के तलपट को प्रधान कार्यालय की पुस्तकों में समामेलित करने से पूर्व विदेशी शाखा के तलपट की राशियों को प्रधान कार्यालय मुद्रा में परिवर्तित करने की निम्न दो पद्धतियां हैं।

1. स्थिर विनिमय दर (Fixed Rate of Exchange)
2. परिवर्तनीय विनिमय दर (Fluctuating Rate of Exchange)

**1. स्थिर विनिमय दर (Fixed rate of Exchange)**—यदि प्रधान कार्यालय और उसकी शाखा के देशों की विनिमय दरों में काफी स्थिरता होती है तो तलपट की राशि को परिवर्तित करने के लिए स्थायी दर का प्रयोग किया जा सकता है। ऐसी दशा में निम्नलिखित को छोड़कर शाखा तलपट की समस्त राशियों को स्थायी दर के अनुसार परिवर्तित कर दिया जाता है।

(अ) शाखा खाते के शेष (Branch Account Balance)

(ब) शाखा द्वारा भेजी हुई राशि (Amount sent by branch)

**2. परिवर्तनीय विनिमय दर (Flucuation Rate of Exchange)**—यदि प्रधान कार्यालय वाले देश और शाखा वाले देश की मुद्राओं की विनिमय दर में होने वाले परिवर्तनों में स्थिरता न हो तो शाखा के तलपट के शेषों को परिवर्तित करने के लिए निश्चित नियमों के अनुसार निम्नलिखित प्रकार की तीन दरें प्रयोग की जाती हैं—

(अ) प्रारम्भिक दर (Opening Rate)

(ब) अन्तिम दर (Closing Rate)

(स) औसत दर (Average Rate)

**1. स्थायी सम्पत्तियाँ (Fixed Assets)**—स्थायी सम्पत्ति को उस दर पर परिवर्तित करना चाहिए जो दर सम्पत्ति क्रय करने के समय थी अथवा क्रय के संविदा के समय थी अथवा भुगतान के समय थी। यह दर प्रारम्भिक दर (Opening Rate) कहलाती है। यदि पूंजीगत व्ययों को कुछ वर्षों में फैलाया गया है तो ऐसी सम्पत्ति को औसत दर पर परिवर्तित करना चाहिए। ऐसी सम्पत्ति हैं—भवन, भूमि, मशीन, आदि।

**2. स्थायी दायित्व (Fixed Liabilities)**—स्थायी दायित्वों को उस समय की दर पर परिवर्तित करना चाहिए जिस समय ये दायित्व किए गए थे। प्रायः ये दायित्व प्रारम्भ में ही किए जाते हैं अतः इन्हें प्रारम्भिक दर पर परिवर्तित करना चाहिए। ऐसे दायित्व हैं—लम्बा अवधि का ऋण या ऋण पत्र आदि।

इस प्रकार स्थायी दायित्वों और स्थायी सम्पत्तियों को प्रारम्भिक दर पर परिवर्तित करना चाहिए।

**3. परिवर्तनशील (चालू) सम्पत्तियों व चालू दायित्व (Floating Assets and Current Liabilities)**—परिवर्तनशील सम्पत्तियों एवं चालू दायित्वों को उस दर पर परिवर्तित किया जाता है जो उस दिन होती है जिस दिन स्थिति विवरण (Balance Sheet) तैयार किया जाता है। चूंकि स्थिति विवरण वर्ष के अन्त में तैयार किया जाता है, अतः ये सम्पत्तियाँ व दायित्व अन्तिम दर (Closing Rate) के आधार पर परिवर्तित किए जाते हैं। परिवर्तनशील सम्पत्ति में प्रायः निम्नलिखित मदें सम्मिलित हैं—रोकड़, देनदार, प्राप्त बिल, विनियोग, अन्तिम स्टॉक आदि। चालू दायित्व में लेनदार, देय बिल, बैंक अधिविकर्ष आदि सम्मिलित होते हैं।

**4. प्रारम्भिक व अन्तिम रहतिया (Opening and Closing Stock)**—प्रारम्भिक रहतिया प्रारम्भिक दर पर तथा अन्तिम रहतिया अन्तिम दर पर परिवर्तित करना चाहिए।

**5. ह्रास (Depreciation)**—ह्रास उस दर पर परिवर्तित किया जाता है जिस दर पर सम्बन्धित सम्पत्ति की राशि का परिवर्तन किया जाता है।

**6. अप्राप्य व संदिग्ध ऋण का आयोजन (Provision for Bad and Doubtful Debts)**—अप्राप्य व संदिग्ध ऋण का आयोजन उसी दर पर परिवर्तित किया जाता है जिस दर पर देनदार परिवर्तित किए जाते हैं अर्थात् अन्तिम दर पर।

**7. आयगत मदें (Revenue Items)**—व्यवसाय के विभिन्न प्रकार के आयगत व्यय व आयगत आय को औसत दर (Average Rate) के आधार पर परिवर्तित किया जाता है। जैसे—वेतन, किराया, ब्याज, क्रय-विक्रय आदि परन्तु इन मदों में निम्नलिखित मदें सम्मिलित नहीं हैं—ह्रास, प्रारम्भिक व अन्तिम रहतिया, डूबत ऋण आयोजन आदि।

**8. शाखा द्वारा भेजी गई राशि (Remittances by Branch)**—शाखा के तलपट में प्रदर्शित शाखा द्वारा भेजी गई राशि को उस राशि में परिवर्तित करना चाहिए जो कि प्रधान कार्यालय की पुस्तकों में दिखाई गई है।

**9. प्रधान कार्यालय खाता (Head Office Account)**—शाखा के तलपट से प्रदर्शित प्रधान कार्यालय खातेका शेष उस

राशि पर परिवर्तित किया जाता है जो कि प्रधान कार्यालय की लेखा-पुस्तकों में शाखा खाते का होता है।

शाखा के तलपट के विनिमय परिवर्तन की सारणी

विवरण	किस दर पर
स्थायी सम्पत्ति (Fixed Assets)	प्रारम्भिक दर (Opening Rate) पर
स्थायी दायित्व (Fixed Liabilities)	प्रारम्भिक दर (Opening Rate) पर
चालू सम्पत्ति (Current Assets)	अन्तिम दर (Closing Rate) पर
चालू दायित्व (Current Liabilities)	अन्तिम दर (Closing Rate) पर
माल, खर्च एवं आय (Goods, Expenses and Income)	औसत दर (Average Rate) पर

**विनिमय अन्तर खाता (Difference in Exchange Account)**—उपर्युक्त नियमों के आधार पर विदेशी शाखा के तलपट के शेषों को परिवर्तित करने के बाद जो परिवर्तित तलपट (Converted Trial Balance) बनेगा उसके डेबिट व क्रेडिट स्तम्भ की राशियों के जोड़ में अन्तर होता है। इस अन्तर को विनिमय की बाकी (Difference in Exchange) या विनिमय सन्देह (Exchange Suspense) कहा जाता है। तलपट मिलाने के लिए कम रकम वाले खाने में अन्तर की रकम लिखकर इसे विनिमय अन्तर खाते (Difference in Exchange Account) या विनिमय सन्देह खाते (Exchange Suspense Account) में डाल दिया जात है। इस खाते को प्रायः स्थिति विवरण में दिखाया जाता है। इस खाते का डेबिट शेष होने पर सम्पत्ति पक्ष में तथा क्रेडिट शेष होने पर दायित्व पक्ष में लिखा जाता है।

अतः समामेलन के कार्य के लिए सर्वप्रथम शाखा तलपट को प्रधान कार्यालय द्वारा अपने देश की मुद्रा में परिवर्तित करना पड़ता है। इसके बाद उस शाखा का व्यापारिक एवं लाभ-हानि खाता तथ चिह्न तैयार किया जाता है।

**Example 1**—31 दिसम्बर, 1986 को एक अंग्रेजी फर्म, जिसका प्रधान कार्यालय लन्दन में है, दिल्ली शाखा की पुस्तकों में निम्नलिखित शेष दिखाए गए थे—

Name of Account	Dr. Bal. Rs.	Cr. Bal. Rs.
रहतिया (Stock) on 1-1-86	12,600	—
क्रय व विक्रय (Purchase and Sales)	75,000	1,12,500
देनदार एवं लेनदार (Debtors and Creditors)	39,000	26,000
प्राप्य बिल एवं देय बिल (Bills Receivable and Bills Payable)	10,400	9,100
वेतन एवं मजदूरी (Salaries and Wages)	4,800	—
किराया, दर एवं कर (Rent, Rates and Taxes)	5,100	—
बैंक में रोकड़ (Cash at Bank)	28,990	—
फर्नीचर (Furniture)	4,910	—
लन्दन प्रधान कार्यालय खाता (London H.O. Account)	—	33,200
	<u>1,80,800</u>	<u>1,80,800</u>

31 दिसम्बर 1986 को रहतिया 32,000 रु. था। लन्दन की पुस्तकों में 31 दिसम्बर 1986 की शाखा के खाते का डेबिट शेष 2,680 पौंड तथा फर्नीचर का मूल्य प्रधान कार्यालय की पुस्तकों में 350 पौंड दिखाया गया था।

विनिमय दर 31 दिसम्बर, 1985 को 14 रु., 31 दिसम्बर, 1986 को 13 रु. तथा वर्ष 1986 के लिए औसत दर 12 रु. थी। प्रधान कार्यालय की पुस्तकों में शाखा का लाभ-हानि खाता तथा स्थिति विवरण तैयार कीजिए।

## Solution—

**CONVERTED TRAIL BALANCE OF DELHI BRANCH**  
(Converted into Head Office Currency)

Name of Accounts	Rate of Exchange Rs.	Dr. Balances £	Cr. Balances £
Stock on 1-1-86	14	900	
Purchases and Sales	12	6,250	9,375
Debtors and Creditors	13	3,000	2,000
Bills Receivable and Bills Payable	13	800	700
Salaries and Wages	12	400	
Rent, Rates and Taxes	12	425	
Cash at Bank	13	2,230	
Furniture	Given	350	
London Head Office A/c	Given		2,680
Exchange Suspense A/c	Balancing Figure	400	
		<u>14,755</u>	<u>14,755</u>

Conversion of Closing stock Rs 32,500 ÷ Rs. 13 = £ 2,500

**BRANCH TRADING AND PROFIT & LOSS ACCOUNT**

*for the year ending 31st December, 1986*

	£		£
To Opening Stock	900	By Sales	9,375
To Purchases	6,250	By Closing Stock	2,500
To Gross Profit c/d	4,725		
	<u>11,875</u>		<u>11,875</u>
To Salaries and wages	400	By Gross Profit b/d	4,725
To rent, Rates and Taxes	425		
To Net Profit transferred to H.O. A/c	3,900		
	<u>4,725</u>		<u>4,725</u>

**BRANCH BALANCE SHEET**

*as on 31st December, 1986*

Liabilities		£	Assets	£
Bills Payable		700	Cash at Bank	2,230
Creditors		2,000	Bills Receivable	800
London H.O. Account	£		Debtors	3,000
Balance	2,680		Stock	2,500
Net Profit	<u>3,900</u>	6,580	Furniture	350
			Exchange Suspense	400
		<u>9,280</u>		<u>9,280</u>

## किराया पद्धति एवं किस्त भुगतान पद्धति (Hire Purchase System & Instalment Payment System)

कुछ वस्तुएं इतनी अधिक मूल्यवान होती हैं जिनको एक मध्यम तथा निर्धन वर्ग के व्यक्ति द्वारा नकद क्रय करना सम्भव नहीं होता, जैसे—स्कूटर, टेलीविजन, फ्रिज, वी.सी.आर., कार इत्यादि इन व्यक्तियों की साख कम होने के कारण उधार माल क्रय करने की शक्ति भी सीमित होती है। और खरीदी गई वस्तु का भुगतान धीरे-धीरे किस्तों में करना चाहते हैं। अतः किराया क्रय पद्धति की आवश्यकता महसूस की गई।

**किराया क्रय पद्धति का अर्थ (Meaning of Hire Purchase System)**—ऐसी पद्धति जिसमें क्रय किए गए माल अथवा सम्पत्ति का समस्त भुगतान नकद न करके किस्तों में किया जाता है और अनुबन्ध होते ही माल क्रेता को सौंप दिया जाता है और क्रेता को माल को प्रयोग करने का अधिकार मिल जाता है। परन्तु जब तक इस माल के मूल्य की अन्तिम किस्त विक्रेता को भुगतान नहीं कर दी जाती तब तक क्रेता इसका स्वामी नहीं बन सकता। यदि क्रेता समस्त किस्तों का भुगतान नहीं करता है तो उस समय तक जितनी भी किस्तें दी गई हैं उन्हें विक्रेता माल के प्रयोग का किराया मानकर जब्त कर लेता है। इसलिए इस पद्धति को किराया क्रय पद्धति कहा जाता है।

किराया क्रय पद्धति के अन्तर्गत क्रेता और विक्रेता आपसी ठहराव द्वारा यह निश्चित करते हैं कि प्रत्येक किस्त कितनी राशि की होगी और किस्तों का भुगतान कितने समय बाद होगा। ये किस्तें वार्षिक, छमाही, त्रैमासिक, मासिक हो सकती हैं।

क्रेता (Purchaser) को किराया क्रय क्रेता (Hire Purchaser) तथा विक्रेता को किराया विक्रेता (Hire Vendor) कहते हैं।

### परिभाषाएं (Definitions)

जे.आर. बाटलीबॉय के अनुसार—“किराया क्रय पद्धति में माल उस व्यक्ति को सुपुर्द कर दिया जाता है जो माल के स्वामी के बराबर सामयिक किस्तों में भुगतान करने को सहमत हो जाता है। जब तक अन्तिम किस्त का भुगतान न कर दिया जाए, ऐसी किस्तें माल का किराया मानी जाती हैं। अन्तिम किस्त का भुगतान होने पर माल का स्वामित्व क्रेता को मिल जाता है।”

### किराया क्रय पद्धति की विशेषताएं (Characteristics of Hire Purchase System)

1. किस्तों में भुगतान होना—इस पद्धति के अन्तर्गत क्रय किए गए माल का भुगतान किस्तों में किया जाता है। प्रत्येक किस्त कितनी राशि की होगी और किस्तें कितने-कितने समय बाद दी जाएंगी, यह क्रेता-विक्रेता आपसी समझौते से तय करते हैं। ये किस्तें मासिक, तिमाही, छमाही अथवा वार्षिक हो सकती हैं।
2. माल की सुपुर्दगी और प्रयोग का अधिकार—जैसेही विक्रय का ठहराव होता है, क्रेता को माल सौंप दिया जाता है और उसे माल को प्रयोग करने का पूर्ण अधिकार मिल जाता है।
3. विक्रेता का स्वामित्व होना—यद्यपि क्रेता को माल के प्रयोग करने का अधिकार मिल जाता है परन्तु जब तक वह सम्पूर्ण किस्तों का भुगतान नहीं करता तब तक माल का स्वामित्व विक्रेता के पास ही रहता है। दूसरे शब्दों में क्रेता सम्पूर्ण किस्तों का भुगतान करने तक क्रेता ही माल का स्वामी बन सकता है।
4. किस्त का भुगतान न करने पर—
  - (i) विक्रेता को माल वापस पाने का अधिकार—यदि क्रेता किसी भी किस्त का भुगतान नहीं करता है तो विक्रेता माल को वापस पाने का अधिकार रखता है। विक्रेता को माल वापस पाने का अधिकार इसलिए होता है क्योंकि अन्तिम किस्त के भुगतान तक स्वामित्व विक्रेता का ही होता है।
  - (ii) प्राप्त किस्तों का जब्त करना—यदि क्रेता किसी किस्त का भुगतान नहीं करता है तो जितनी किस्तें वह दे चुका है वे सभी जब्त कर ली जाती हैं और उनके बदले में क्रेता को कुछ भी वापस नहीं किया जाता। ऐसी किस्तों

को क्रेता द्वारा प्रयोग किए गए माल का किराया मान लिया जाता है।

(iii) अदत्तकिस्तों के लिए दावा करने का अधिकार—विक्रेता को माल वापस लेने पर प्राप्त किस्तें जब्त करने का अधिकार तो है ही, लेकिन यदि वह चाहेतो अदत्त किस्तें भी दावा करके वसूल कर सकता है। अदत्तकिस्तों से आशय उन किस्तों से है जो माल वापस लेने की तिथि तक देय (Due) हो चुकी है।

5. माल उचित सावधानी से रखना—अन्तिम किस्त के भुगतान तक क्रेता का माल पर स्वामित्व नहीं होता। यह वस्तु को निक्षेपग्रहिता (Bailee) की तरह रखता है। उसे माल की उतनी देखभाल करनी चाहिए जितनी कि एक साधारण बुद्धि वाला मनुष्य अपने माल की करता है।

6. मरम्मत के लिए उत्तरदायित्व—क्रेता द्वारा उचित सावधानी रखने पर भी यदि वस्तु में कुछ टूट-फूट हो गई हो तो इसकी मरम्मत कराने के लिए विक्रेता उत्तरदायी है।

7. अन्तिम किस्त के भुगतान से पूर्व क्रेता द्वारा बिक्री करने पर दूसरे क्रेता को श्रेष्ठ अधिकार नहीं दे सकता—यदि क्रेता न्तिम किस्त के भुगतान से पूर्व किसी व्यक्ति के पास उस माल को गिरवी रख देता है या बेच देता है तो गिरवी रखने वाले या उस दूसरे क्रेता के अधिकार दूषित होते हैं।

## किराया क्रय पद्धति से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण शब्दावली

### (Important Terminology for Hire Purchase System)

#### I. Price

#### II. Instalment

**I. Price**—किराया क्रय पद्धति में माल के प्रायः दो मूल्य होते हैं—

(i) नकद मूल्य (Cash Price)—यह माल का वह मूल्य होता है जिसमें ब्याज की राशि शामिल नहीं होती। यह माल की मूल राशि (Principal amount) कहलाती है।

(ii) किराया क्रय मूल्य (Hire Purchase Price)—यह माल का वह मूल्य होता है जिसमें ब्याज की राशि सम्मिलित होती है। इस मूल्य की गणना निम्नलिखित प्रकार से की जा सकती है—

नकद मूल्य (Cash Price) + कुल ब्याज (Total Interest) = किराया क्रय मूल्य (Hire Purchase Price)

**II. किस्त (Instalment)**—किस्त के भुगतान का आशय यह है कि जिस किस्त की राशि में ब्याज की राशि भी सम्मिलित हो। किस्त की राशि निम्नलिखित दो प्रकार से दी जा सकती है—

(i) ब्याज सहित किस्त की राशि (Interest included in Instalments)—यदि सुपुर्दगी के समय अग्रिम तथा अन्य समस्त देय किस्तों का योग नकद मूल्य (Cash Price) से अधिक हो तो इसका अर्थ यह है कि किस्त में ब्याज सम्मिलित है।

(ii) ब्याज रहित किस्त की राशि (Interest excluded in Instalments)—यदि सुपुर्दगी के समय अग्रिम तथा अन्य समस्त देय किस्तों का योग नकद मूल्य (Cash Price) के बराबर हो तो इसका अर्थ यह है कि किस्त में ब्याज सम्मिलित नहीं है। ऐसी दशा में प्रतिवर्ष किस्त का भुगतान करते समय किस्त की राशि में उस वर्ष का ब्याज जोड़ दिया जाता है।

अतः किस्त वह राशि होती है जो प्रतिवर्ष विक्रेता को क्रेता द्वारा भुगतान की जाती है।

**हिसाब-किताब सम्बन्धी लेखा अथवा लेखांकन रिकार्ड  
(Accounting Entries) or (Accounting Records)**

किराया क्रय पद्धति में लेखा करने के लिए क्रय किया जाने वाला माल निम्न दो भागों में बांटा जा सकता है—

1. अधिक मूल्य वाला माल (Goods of Considerable Value), जैसे—कार, ट्रक, मशीन, प्लांट आदि को खरीदने के सम्बन्ध में लेखे अलग प्रकार से किए जाते हैं।
2. कम मूल्य वाला माल (Goods of Small Value), जैसे—रेडियो, साइकिल, टेलीविजन, आदि जो अधिक मात्रा में बेची जाती हैं, को खरीदने के सम्बन्ध में लेखे अलग प्रकार से किए जाते हैं।

**1. अधिक मूल्य वाले माल सम्बन्धी लेखे—**अधिक मूल्यवान वस्तुओं की खरीद से सम्बन्धित लेखे भी दो विधियों से किए जाते हैं—

**(A) कुल सम्पत्ति मूल्य विधि (Total Asset Value Method)—**इस विधि के अन्तर्गत किराया क्रय का सौदा एकसाधारण उधार क्रय के सौदे की भांति माना जाता है। अतः अनुबन्ध के समय सम्पत्ति के पूर्ण रोकड़ मूल्य से सम्पत्ति खाते को डेबिट किया जात है तथा विक्रेता के खाते को क्रेडिट कर दिया जाता है।

**(B) सम्पत्ति अर्जित विधि (Assets Accrual Value Method)—**इस विधि के अन्तर्गत सम्पत्ति को प्रारम्भ में ही कुल नकद मूल्य से डेबिट नहीं किया जाता, बल्कि सम्पत्ति को प्रत्येक वर्ष उतनी ही राशि से डेबिट किया जाता है जितनी राशि प्रत्येक वर्ष क्रेता द्वारा भुगतान की गई है क्योंकि क्रेता जैसे-जैसे किस्तों की राशि भुगतान करता जाता है, वैसे-वैसे वह सम्पत्ति का स्वामी बनता जाता है।

**कुल सम्पत्ति मूल्य विधि के अनुसार लेखांकन प्रविष्टियां  
(Accounting Entries according to Total Asset Value Method)**

	<i>Entries in the Books of Hire-Purchase (क्रेता की पुस्तकों में प्रविष्टियां)</i>	<i>Entries in the Books of Hire-Vendor (विक्रेता की पुस्तकों में प्रविष्टियां)</i>
1st Year beginning (1st Jan.)	Asset A/c .....Dr. To Vendor's A/c (For cash price of the asset purchased.)	Hire Purchaser's A/c .....Dr. To Hire Sales A/c (For cash price of the goods sold.)
(1st Jan.)	Vendor's A/c .....Dr. To Cash A/c (For payment of amount on signing the agreement)	Cash A/c .....Dr. To Hire Purchaser's A/c (For the amount received on signing the agreement.)
1st Year at the end (31st Dec.)	Interest A/c .....Dr. To Vendor's A/c (For interest due.)	Hire Purchaser's A/c .....Dr. To Interest A/c (For interest due.)
(31st Dec.)	Vendor's A/c .....Dr. To Cash A/c (For the payment of instalment.)	Cash A/c .....Dr. To Hire Purchaser's A/c (For the amount of instalment received.)
(31st Dec.)	Depreciation A/c .....Dr. To Assets A/c (For depreciation charged on cash price of the asset.)	No Entry <sup>1</sup>

(31st Dec.)	Profit & Loss A/c To Interest A/c To Depreciation A/c (For the Interest A/c and Depreciation A/c transferred to P & L A/c.)	.....Dr.	Interest A/c To Profit & Loss A/c (For the amount of Interest transferred to P & L A/c.)	....Dr.
	NO ENTRY		Hire Sales A/c To Trading A/c (For the transfer of Hire Sales to Trading A/c.)	

टिप्पणी : 1. प्रथम दो प्रविष्टियां तथा विक्रेता की पुस्तकों में अन्तिम प्रविष्टि सम्पत्ति क्रय करने के केवल प्रथम वर्ष में ही की जाती है तथा शेष प्रविष्टियां ठीक उसी प्रकार से प्रतिवर्ष की जाएंगी।

2. ह्रास स्थायी सम्पत्तियों (Assets) पर लगाया जाता है न कि माल पर।

### क्रेता की पुस्तकों में विभिन्न खाते (Various Accounts in the Books of the Purchaser)

क्रेता अपनी पुस्तकों में निम्नलिखित खाते बनाता है—

- 1. सम्पत्ति खाता (Asset Account)**—सम्पत्ति खाता एक वास्तविक खाता (Real Account) है। इसलिए वास्तविक खाते के नियमानुसार आने वाली वस्तु को नाम (Dr. what comes in) करते हैं। इसलिए इस खाते को डेबिट करते हैं तथा विवरण के खाते में 'To Vendor's A/c' लिखा जाता है।
- 2. विक्रेता का खाता (Vendor Account)**—यह एक व्यक्तिगत खाता है। इसलिए इस खाते को सम्पत्ति के नकद मूल्य तथा ब्याज से क्रेडिट करते हैं क्योंकि विक्रेता को रुपया देना है अर्थात वह देनदार (Giver) है तथा भुगतान की दशा में इस खाते को 'To Cash' लिखकर डेबिट करते हैं क्योंकि विक्रेता प्राप्तकर्ता है।
- 3. ब्याज खाता (Interest Account)**—यह खाता नाममात्र खाता है। इसलिए इस खाते में 'To Vendor' डेबिट पक्ष में लिखा जाता है क्योंकि यह क्रेता के लिए व्यय है तथा वर्ष के अन्त में इस खाते के क्रेडिट में 'By Profit & Loss A/c' लिखकर इस खाते को बन्द कर दिया जाता है।
- 4. ह्रास खाता (Depreciation Account)**—इस खाते को नाममात्र खाते के अनुसार 'To Assets' लिखकर डेबिट किया जाता है क्योंकि यह हानि है तथा सम्पत्ति खाते को वास्तविक खाते के अनुसार क्रेडिट करते हैं क्योंकि सम्पत्ति की कीमत कम हो जाती। वर्ष के अन्त में इस खाते के क्रेडिट में 'By Profit and Loss A/c' लिखकर इस खाते को बन्द कर दिया जाता है। ह्रास सदैव नकद मूल्य पर लगता है।

### विक्रेता की पुस्तकों में विभिन्न खाते (Various Accounts in Books of Vendor)

विक्रेता अपनी पुस्तकों में निम्नलिखित दो आवश्यक खाते बनाता है—

- 1. क्रेता का खाता (Purchase'r Account)**—यह एक व्यक्तिगत खाता है। इस खाते को माल के नकद मूल्य तथा ब्याज से डेबिट करते हैं क्योंकि क्रेता से रुपया लेना है तथा प्राप्ति की दशा में इस खाते में 'By Cash A/c' लिखकर क्रेडिट करते हैं क्योंकि क्रेता देनदार है।
- 2. ब्याज खाता (Interest Account)**—यह एक नाममात्र खाता है। इस खाते में 'By Purchaser's A/c' क्रेडिट पक्ष में लिखा जाता है क्योंकि विक्रेता के लिए लाभ है तथा वर्ष के अन्त में इस खाते में 'To Profit and Loss A/c' लिखकर इस खाते को बन्द कर दिया जाता है।

## ब्याज की गणना (Calculation of Interest)

प्रत्येक प्रश्न में ब्याज की गणना अति आवश्यक है। ब्याज की गणना के लिए निम्नलिखित में से एक विधि अपनाई जा सकती है—

1. तालिका द्वारा (By Table)
2. विक्रेता के खाते द्वारा (By hire Vendor's A/c)

1. तालिका द्वारा (By Table)—इस दशा में ब्याज की गणनाके लिए निम्नलिखित प्रारूप बनाया जाएगा—

### CALCULATION OF INTEREST

Particulars (1) Rs.	Cash Price (2) Rs.	Principal (3) Rs.	Interest (4) Rs.	Instalment (5) Rs.
(इसमें किस्तों का विवरण लिखा जाता है)	(इसमें सम्पत्ति का नकद मूल्य लिखा जाता है)	(इसमें ब्याज रहित किस्त की राशि लिखी जाती है)	$\frac{P \times R \times T}{100}$ (इसमें ब्याज की राशि लिखी जाती है)	(इसमें ब्याज सहित किस्त की राशि लिखी जाती है)

प्रश्न में प्रायः किस्त (ब्याज रहित), ब्याज और किस्त (ब्याज सहित) तीनों मदों में से दो मदें दी होती हैं तथा तीसरी मद की गणना करनी होती है।

2. विक्रेता के खाते द्वारा (By Hire Vendor's A/c)—विक्रेता का खाता बनाकर प्रति वर्ष इस खाते के प्रारम्भिक शेष (Opening Balance) पर ब्याज की गणना की जा सकती है।

### जब किस्तों में ब्याज सम्मिलित हो (When Interest is included in Instalments)

**Illustration 1**—1 जनवरी 1993 को A ने B से एक मशीन 'किराया क्रय पद्धति' पर खरीदी। मशीन का नकद मूल्य 34,870 रु. था और भुगतान निम्नलिखित प्रकार से किया गया—

10,000 रु. सुपुर्दगी पर तथा 10,000 रु. की तीन वार्षिक किस्तें प्रत्येक वर्ष के अन्त में दी गईं। विक्रेता 10 प्रतिशत वार्षिक ब्याज वसूल करता है। A 'घटते हुए शेष पद्धति' पर 20 प्रतिशत वार्षिक ह्रास लगाता है।

दोनों पक्षकों की पुस्तकों में जर्नल की प्रविष्टियां ओर आवश्यक खाते बनाइए।

### CALCULATION OF INTEREST BY TABLE

Particulars	Cash Price Rs.	Principal Rs.	Interest @ 10% P.a. Rs.	Instalment Rs.
Cash Price of Machinery	34,870.00			
Less: Amount paid at the time of delivery	10,000.00	10,000.00	—	10,000.00
Balance due	24,870.00			
Less: Cash Price paid in 1st Instalment	7,513.00	7,513.00	$24,870 \times \frac{10}{100} \times 1 = 2,487.00$	10,000.00
Balance due	17,357.00			
Less: Cash Price paid in 2nd Instalment	8,264.30	8,264.30	$17,357 \times \frac{10}{100} \times 1 = 1,735.70$	10,000.00
Balance due	9,092.70			
Less: Cash Price paid in 3rd Instalment	9,092.70	9,092.70	907.30	10,000.00
	—	34,870.00	5,130.00	40,000.00

## टिप्पणियाँ—

- उपर्युक्त प्रश्न में किस्तों की राशि का कुल योग 40,000 रु. है जबकि नकद मूल्य 34,870 रु. है। अतः किस्तों में ब्याज सम्मिलित है। इसलिए ये राशियाँ किस्त के खाने में लिखी गई हैं।
- प्रश्न में किस्त (ब्याज रहित), ब्याज तथा किस्त की राशि तीन मदों में से दो मदें ब्याज तथा ब्याज सहित किस्त की राशि दी हुई है। तीसरी मद मूल राशि की गणना किस्त में से ब्याज की राशि घटाकर की गई हैं। जैसे—10,000 रु. 2,487 रु. = 7,513; 10,000 रु. - 1,735.70 रु. = 8,264.30 रु.
- ब्याज सहित किस्त की राशि की दशा में अन्तिम किस्त के लिए देय नकद मूल्य पर ब्याज की गणना नहीं करनी चाहिए बल्कि किस्त की राशि में से देय राशि को घटा देना चाहिए। अर्थात् मिश्रधन - मूलधन, जैसे कि 10,000 रु. - 9,092.70 रु. = 907.30 रु.।

**Books of A (Hire Purchaser)**  
**JOURNAL**

Date	Particulars	I. F.	Amount Rs.	Amount Rs.
1993 Jan. 1	Machinery A/c .....Dr. To B (Vendor) (For cash price of the machinery purchased.)		34,870.00	34,870.00
Jan. 1	B .....Dr. To Cash A/c (For amount paid on delivery.)		10,000.00	10,000.00
Dec. 31	Interest A/c .....Dr. To B (For payment due, @ 10% on Rs. 24,870.)		2,487.00	2,487.00
Dec. 31	B .....Dr. To Cash A/c (For Payment of 1st instalment.)		10,000.00	10,000.00
Dec. 31	Depreciation A/c .....Dr. To Machinery A/c (For depreciation charged @ 20% on cash price, i.e. Rs. 34,870.)		6,974.00	6,974.00
Dec. 31	Profit & Loss A/c .....Dr. To Interest A/c To Depreciation A/c (For interest and depreciation transferred to Profit & Loss A/c.)		9,461.00	2,487.00 6,974.00
1994 Dec. 31	Interest A/c .....Dr. To B (For interest due, @ 10% on the balance due i.e. Rs. 17,357.)		1,735.70	1,735.70
Dec. 31	B .....Dr. To Cash A/c (For payment of 2nd instalment.)		10,000.00	10,000.00

Dec. 31	Depreciation A/c To Machinery A/c (For depreciation charged on the opening balance of Machinery A/c, i.e. , 20% on Rs. 27.896.)	.....Dr.	5.579.20	5.579.20
Dec. 31	Profit & Loss A/c To Interest A/c To Depreciation A/c (For balances transferred to profit & Loss A/c.)	.....Dr.	7.314.90	1.735.70 5.579.20
1995 Dec. 31	Interest A/c To B (For interest due, Rs. 10.000 minus the balance of Vendor A/c Rs. 9.092.70.)	.....Dr.	907.30	907.30
Dec. 31	B To Cash A/c (For the payment of 3rd instalment.)	.....Dr.	10.000.00	0.000.00
Dec. 31	Depreciation A/c To Machinery A/c (For depreciation @ 20% on the balance of machinery A/c, i.e., on Rs. 22.316.80.)	.....Dr.	4.463.36	4.463.36
Dec. 31	Profit & Loss A/c To Interest A/c To Depreciation A/c (For balances transferred to Profit & Loss A/c.)	.....Dr.	5.370.66	907.30 4.463.36

**Necessary Ledger Accounts**  
**MACHINERY ACCOUNT**

1993		Rs.	1993		Rs.
Jan 1	To B	34.870.00	Dec. 31	By Depreciation A/c	6.974.00
			Dec. 31	By Balance c/d	27.896.00
		<u>34.870.00</u>			<u>34.870.00</u>
1994 Jan. 1	To Balance b/d	27.896.00	1994 Dec. 31	By Depreciation A/c	5.579.20
			Dec. 31	By Balance c/d	22.316.80
		<u>27.896.00</u>			<u>27.896.00</u>
1995 Jan 1	To Balance b/d	22.316.80	1995 Dec. 31	By Depreciation A/c	4.463.36
			Dec. 31	By Balance c/d	17.853.44
		<u>22.316.80</u>			<u>22.316.80</u>
1996 Jan 1	To Balance b/d	17.853.44			

## B'S (VENDOR'S) ACCOUNT

1993			1993		
		Rs.			Rs.
Jan. 1	To Cash A/c	10,000.00	Jan. 1	By Machinery A/c	34,870.00
Dec. 31	To Cash A/c	10,000.00	Dec. 31	By Int. A/c (10% on Rs. 24,870)	2,487.00
Dec. 31	To Balance c/d	17,357.00			
		<u>37,357.00</u>			<u>37,357.00</u>
1994			1994		
Dec. 31	To Cash A/c	10,000.00	Jan. 1	By Balance b/d	17,357.00
Dec. 31	To Balance c/d	9,092.70	Dec. 31	By Int. A/c (10% on Rs. 17,357)	1,735.70
		<u>19,092.70</u>			<u>19,092.70</u>
1995			1995		
Dec. 31	To Cash A/c	10,000.00	Jan. 1	By Balance b/d	9,092.70
		<u>10,000.00</u>	Dec. 31	By Int. A/c (10,000 - 9,092.70)	907.30
					<u>10,000.00</u>

## INTEREST ACCOUNT

1993			1993		
		Rs.			Rs.
Dec. 31	To B (Vendor)	2,487.00	Dec. 31	By Profit & Loss A/c	2,487.00
1994			1994		
Dec. 31	To B (Vendor)	1,735.70	Dec. 31	By Profit & Loss A/c	1,735.70
1995			1995		
Dec. 31	To B (Vendor)	907.30	Dec. 31	By Profit & Loss A/c	907.30

## DEPRECIATION ACCOUNT

1993			1993		
		Rs.			Rs.
Dec. 31	To Machiner A/c	6,974.00	Dec. 31	By Profit & Loss A/c	6,974.00
1994			1994		
Dec. 31	To Machinery A/c	5,579.20	Dec. 31	By Profit & Loss A/c	5,579.20
1995			1995		
Dec. 31	To Machinery A/c	4,463.36	Dec. 31	By Profit & Loss A/c	4,463.36

## Books of B (Vendor)

## JOURNAL

Date	Particulars	L.F.	Amount Rs.	Amount Rs.
1993 Jan. 1	A (Hire Purchaser) .....Dr. To Hire Sales A/c (For the cash price of goods sold.)		34,870.00	34,870.00
Jan. 1	Cash A/c .....Dr. To A (For amount received on delivery.)		10,000.00	10,000.00

Des. 31	A To Interest A/c (For interest due.)	.....Dr.	2,487.00	2,487.00
Dec. 31	Cash A/c To A (For the amount of 1st instalment received.)	.....Dr.	10,000.00	10,000.00
Dec. 31	Interest A/c To Profit & Loss A/c (For interest transfer to Profit & Loss A/c.)	.....Dr.	2,487.00	2,487.00
Dec. 31	Hire Sales A/c To Trading A/c (For the transfer of Hire Sales to Trading A/c.)	.....Dr.	34,870.00	34,870.00
1994 Dec. 31	A To Interest A/c (For interest due.)	.....Dr.	1,735.70	1,735.70
Dec. 31	Cash A/c To A (For 2nd instalment received.)	.....Dr.	10,000.00	10,000.00
Dec. 31	Interest A/c To Profit & Loss A/c (for interest transferred to Profit & Loss A/c.)	.....Dr.	1,735.70	1,735.70
1995 Dec. 31	A To Interest A/c (For Interest due..)	.....Dr.	907.30	907.30
Dec. 31	Cash A/c To A (For 3rd instalment received.)	.....Dr.	10,000.00	10,000.00
Dec. 31	Interest A/c To Profit & Loss A/c (For interest transferred to Profit & Loss A/c.)	.....Dr.	907.30	907.30

**Necessary Ledger Accounts**

**GOPAL'S ACCOUNT**

1993 Jan. 1	To Hire Sales A/c	Rs. 34,870.00	1993 Jan. 1	By Cash A/c	Rs. 10,000.00
Dec. 31	To Interest A/c	2,487.00	Dec. 31	By Cash A/c	10,000.00
			Dec. 31	By Balance c/d	17,357.00
		37,357.00			37,357.00
1994 Jan. 1	To Balance b/d	17,357.00	1994 Dec. 31	By Cash A/c	10,000.00
Dec. 31	To Interest A/c	1,735.70	Dec. 31	By Balance c/d	9,092.70
		19,092.70			19,092.70

1995 Jan. 1	To Balance b/d	9,092.70	1995 Dec. 31	By Cash A/c	10,000.00
Dec. 31	To Interest A/c	907.30			
		10,000.00			10,000.00

## INTEREST ACCOUNT

1993 Dec. 31	To Profit & Loss A/c	Rs. 2,487.00	1993 Dec. 31	By A	Rs. 2,487.00
1994 Dec. 31	To Profit & Loss A/c	1,735.70	1994 Dec. 31	By A	1,735.70
1995 Dec. 31	To Profit & Loss A/c	907.30	1995 Dec. 31	By A	907.30

**जब किस्तों में ब्याज सम्मिलित न हो**  
(When Interest is not included in Instalments)

**Illustration 2—1** जनवरी 1992 को Rajiv ने Anurag Steel लिमिटेड से एक मशीन किराया क्रय पद्धति खरीदी। विवरण निम्नलिखित हैं—

- (i) नकद मूल्य 20,000 रु.।
- (ii) ठहराव पर हस्ताक्षर करते समय 8,000 रु. दिए जाएंगे।
- (iii) शेष राशि 4,000 रु. की तीन समान किस्तों में ब्याज सहित दी जाएगी।
- (iv) ब्याज अदत्त शेष पर 12 प्रतिशत वार्षिक दर से लगाया जाना है।
- (v) हास 10 प्रतिशत वार्षिक, क्रमागत हास पद्धति पर।

किराया क्रय क्रेता की पुस्तकों में मशीनरी खाता तथा विक्रेता का खाता बनाइए। क्रेता के चिह्ने में मशीनरी खाता किस प्रकार दिखाया जाएगा?

## Books of Rajiv (Hire Purchaser)

## CALCULATION OF INTEREST BY TABLE

Particulars	Cash Price	Principal	Interest @ 12% P.a.	Instalment
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
Cash Price of Machine	20,000			
Less: Amount paid at the time of delivery	8,000	8,000	—	8,000
Balance due	12,000		$12,000 \times \frac{12}{100} \times 1 = 1,440$	
Less: Cash Price paid in 1st instalment	4,000	4,000		5,440
Balance due	8,000		$8,000 \times \frac{12}{100} \times 1 = 960$	
Less: Cash Price paid in 2nd instalment	4,000	4,000		4,960
Balance due	4,000		$4,000 \times \frac{12}{100} \times 1 = 480$	
Less: Cash Price paid in 3rd instalment	4,000	4,000		4,480
	—	20,000	2,880	22,880

**Ledger Accounts**  
**MACHINERY ACCOUNT**

		Rs.			Rs.
1992			1992		
Jan. 1	To Anurag Steel Ltd.	20,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	2,000
			Dec. 31	By Balance c/d	18,000
		20,000			20,000
1993			1993		
Jan. 1	To Balance b/d	18,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	1,800
			Dec. 31	By Balance c/d	16,200
		18,000			18,000
1994			1994		
Jan. 1	To Balance b/d	16,200	Dec. 31	By Depreciation A/c	1,620
			Dec. 31	By Balance c/d	14,580
		16,200			16,200

**ANURAG STEEL LTD. (VENDOR)**

		Rs.			Rs.
1992			1992		
Jan. 1	To Cash A/c	8,000	Jan. 1	By Machinery A/c	20,000
Dec. 31	To Cash A/c (Rs. 4,000 + 1,440)	5,440	Dec. 31	By Int. A/c (12% on Rs/ 12,000)	1,440
Dec. 31	To Balance c/d	8,000			
		21,440			21,440
1993			1993		
Dec. 31	To Cash A/c (Rs. 4,000 + 960)	4,960	Jan. 1	By Balance b/d	8,000
Dec. 31	To Balance c/d	4,000	Dec. 31	By Int. A/c (12% on Rs. 8,000)	960
		8,960			8,960
1994			1994		
Dec. 31	To Cash A/c	4,480	Jan. 1	By Balance b/d	4,000
			Dec. 31	By Int. A/c (12% on Rs. 4,000)	480
		4,480			4,480

**BALANCE SHEET**

*As on 31 December 1992*

<i>Liabilities</i>	Rs.	<i>Assets</i>	Rs.
		Rs.	
		Machinery A/c (Balance)	18,000
		Less: Vendor's A/c (Balance)	8,000
			10,000

**BALANCE SHEET**

*as on 31 December 1993*

<i>Liabilities</i>	Rs.	<i>Assets</i>	Rs.
		Rs.	
		Machinery A/c (Balance)	16,200
		Less: Vendor's A/c (Balance)	4,000
			12,200

**BALANCE SHEET**  
as on 31st December 1994

<i>Liabilities</i>	Rs.	<i>Assets</i>	Rs.
		Rs.	
		Machinery A/c (Balance) 14,580	
		Less : Vendor's A/c (Balance) Nil	14,580

टिप्पणी—सम्पत्ति को चिट्ठे में दिखाते समय प्रतिवर्ष सम्पत्ति के शेष में से विक्रेता को देय राशि घटाकर दिखाया जाता है।

**सम्पत्ति अर्जित विधि**  
(Asset Accrual Method)

इस विधि में सम्पत्ति को प्रारम्भ में ही कुल नकद मूल्य से डेबिट करने की बजाय विभिन्न किस्तों के माध्यम से जैसे-जैसे नकद मूल्य के भाग का भुगतान किया जात है वैसे-वैसे भुगतान किए गए नकद मूल्य से ही सम्पत्ति खाते को डेबिट किया जाता है और विक्रेता खाते (Vendor's A/c) को क्रेडिट किया जाता है। अतः इस विधि में सम्पत्ति खाते को प्रतिवर्ष डेबिट किया जाता है। इस विधि में क्रेता द्वारा निम्न प्रकार प्रविष्टियां की जाएंगी—

(i) ठहराव के समय भुगतान की जाने वाली राशि से—

Asset A/c .....Dr. (Down payment due)  
    To Hire Vendore  
(For assets purchased.)

(ii) नकद राशि भुगतान करने पर—

Hire Vendor .....Dr. (Down payment paid)  
    To Cash A/c  
(For down payment to vendor.)

(iii) किस्त की वास्तविक राशि देय होने पर—

Asset A/c .....Dr. (Instalment without interest.)  
    To Vendor  
(For asset purchased.)

(iv) किस्त पर देय ब्याज की राशि से—

Interest A/c .....Dr. (Amount of interest due)  
    To Vendor  
(For interest due.)

टिप्पणी—उक्त (iii) तथा (iv) प्रविष्टियों की निम्न मिश्रित प्रविष्टि भी बनाई जा सकती है—

Asset A/c .....Dr. (Instalment without interest.)  
Interest A/c .....Dr. (Amount of interest due)  
    To Vendor  
(For Asset purchased and interest due.)

(v) किस्त का भुगतान करने पर—

Vendor A/c Dr. (Instalment with interest paid)  
    To Cash  
(For Instalment paid)

(vi) हास की राशि का लेखा करने पर—

Depreciation Ac/ Dr. (Depreciation on Cash Price of the asset)  
    To Asset  
(For Depreciation charged)

(vii) नाम मात्र खाते बन्द करने पर—

Profir & Loss A/c	Dr.
To Interest	(Amount of Interest)
To Depreciations A/c	(Amount of Depreciation)
(For Interest & Depreciation transferred to P & L A/c)	

**Illustration 3**—चेन्नई ट्रान्सपोर्ट कम्पनी ने मुम्बई मोटर कम्पनी से 1 जनवरी 1984 को मोटरकार खरीदने का समझौता किया। समझौते के अनुसार 10000 रु. नकद तथा शेष तीन किश्तों में (प्रति किश्त 10000) वर्ष के अन्त में 31 दिसम्बर प्रतिवर्ष देनी है। कार का नकद मूल्य 37250 रु. है। मुम्बई मोटर कम्पनी 5 प्रतिशत ब्याज चार्ज करती है। चेन्नई ट्रान्सपोर्ट कम्पनी 10 प्रतिशत के हिसाब से घटते शेष विधि (Reducing Balance Method) के अनुसार ह्रास लगाती है। यदि खाते सम्पत्ति अर्जित विधि के अनुसार रखे जाते हैं तो चेन्नई ट्रान्सपोर्ट कम्पनी की पुस्तकों में रोजनामचा तथा आवश्यक खाते तैयार कीजिए। चिह्न भी बनाइए।

**Solution :**

Calculation of Interest :	Rs.
Cash price*of Motor Car	37,250.00
Less: Amount paid at the time of delivery	<u>10,000.00</u>
	27,250.00
Add : Interest due at the end of 1st year : $27,250 \times 5/100$	<u>1,362.50</u>
	28,612.50
Less : Amount paid at the end of 1st year	<u>10,000.00</u>
Balance Due	18,612.50
Add : Interest due at the end of IInd year : $18,612 \times 5/100$	<u>930.63</u>
	19,543.13
Less : Amount paid at the end of IInd year	<u>10,000.00</u>
Balance Due	9,543.13
Add : Interest due at the end of IIIrd year : $10,000 - 9,543.13$	<u>456.87</u>
	10,000.00
Less : Amount paid at the end of IIIrd year	<u>10,000.00</u>
	Nil

**Books of Chennai Transport Company**  
JOURNAL ENTRIES

Date	Particulars	L. F.	Dr. Rs.	Cr. Rs.
1984 Jan. 1	Motor Car A/c <span style="float: right;">Dr.</span> To Mumbai Motor Company (For Motor Car purchased)		10,000.00	10,000.00
Jan. 1	Mumbai Motor Company <span style="float: right;">Dr.</span> To Cash A/c (For advance payment to Vendor)		10,000.00	10,000.00
Dec. 31	Motor Car A/c <span style="float: right;">Dr.</span> To Mumbai Motor Company A/c (For Depreciation Value of 1st instalment Rs. 10,000 Less interest Rs. 1,362.50)		8,637.50	8,637.50

Dec. 31	Interest A/c To Mumbai Motor Company (For Interest due)	Dr.	1,362.50	1,362.50
Dec. 31	Mumbai Motor Comapany To Cash A/c (For the payment of 1st instalment)	Dr.	10,000.00	10,000.00
Dec. 31	Depreciation A/c To Motor Car A/c (For Depreciation charged 10% on Rs. 37,250)	Dr.	3,725.00	3,725.00
Dec. 31	Profit & Loss A/c To Depreciation A/c To Interest A/c (For Depreciation and Interest transferred to P & L A/c)	Dr.	5,087.50	3,725.00 1,362.50
1985				
Dec. 31	Motor Car A/c To Mumbai Motor Company (For the Cash value of IInd Instalment Rs. 10,000 less Interest Rs. 930.63)	Dr.	9,069.37	9,069.37
Dec. 31	Interest A/c To Mumbai Motor Company (For Interest due)	Dr.	930.63	930.63
Dec. 31	Mumbai Motor Company To Cash A/c (For the payment of IInd instalment)	Dr.	10,000.00	10,000.00
Dec. 31	Depreciation A/c To Moror Car A/c (For Depreciation charged 10% on Rs. 37,250 -3,725 i.e., on Rs. 33,525)	Dr.	3,352.50	3,352.50
Dec. 31	Profit & Loss A/c To Depreciation A/c To Interest A/c (For Depreciation & Interest transferred to P & L A/c)	Dr.	4,283.13	3,352.50 930.63
1986				
Dec. 31	Motor Car A/c Interest A/c To Mumbai Motor Comapany A/c (For Motor Lorries purchased and Interest due)	Dr. Dr.	9,543.13 456.87	10,000.00
Dec. 31	Mumbai Motor Company To Cash A/c (For the payment of IIIrd instalment)	Dr.	10,000.00	10,000.00
Dec. 31	Depreciation A/c To Motor Car A/c (For Depreciation charged 10% on Rs. 33,525 - 3,352.50 i.e., on 30,172.50)	Dr.	3,017.25	3,017.25
Dec. 31	Profit & Loss A/c To Depreciation A/c To Interest A/c (For Depreciation & Interest transferred to P & L A/c)	Dr.	3,474.12	3,017.25 456.87

**Ledger Accounts**  
**MOTOR CAR ACCOUNT**

		Rs.			Rs.
1984			1984		
Jan. 1	To Mumbai Motor Co.	10,000.00	Dec. 31	By Depreciation A/c (10% on 37,250)	3,725.00
Dec. 31	To Mumbai Motor Co.	8,637.50	Dec. 31	By Balance c/d	14,912.50
		18,637.50			18,637.50
1985			1985		
Jan. 1	To Balance b/d	14,912.50	Dec. 31	By Depreciation A/c (10% on 33,525)	3,352.50
Dec. 31	To Mumbai Motor Co.	9,069.37	Dec. 31	By Balance c/d	20,629.37
		23,981.87			23,981.87
1986			1986		
Jan. 1	To Balance b/d	20,629.37	Dec. 31	By Depreciation A/c (10% on 30,172.50)	3,017.25
Dec. 31	To Mumbai Motor Co.	9,543.13	Dec. 31	By Balance c/d	27,155.25
		30,172.50			30,172.50

**MUMBAI MOTOR COMPANY**

		Rs.			Rs.
1984			1984		
Jan. 1	To Cash A/c	10,000.00	Jan. 1	By Motor Car	10,000.00
Dec. 31	To Cash A/c	10,000.00	Dec. 31	By Motor Car	8,637.50
		20,000.00	Dec. 31	By Interest A/c	1,362.50
1985					20,000.00
Dec. 31	To Cash A/c	10,000.00	1985		
		10,000.00	Dec. 31	By Motor Car	9,069.37
1986			Dec. 31	By Interest A/c	930.63
Dec. 31	To Cash A/c	10,000.00			10,000.00
		10,000.00	1986		
		10,000.00	Dec. 31	By Motor Car	9,543.13
		10,000.00	Dec. 31	By Interest A/c	456.87
		10,000.00			10,000.00

**BALANCE SHEET**

*as on 31st December, 1984*

	Rs.	Assets	Rs.
		Motor Car	145,912.50

**BALANCE SHEET**

*as on 31st December, 1985*

	Rs.	Assets	Rs.
		Motor Car	20,629.37

**BALANCE SHEET**  
as on 31st december, 1986

	Rs.	<i>Assets</i>	Rs.
		Motor Car	27,155.25

**नकद मूल्य की गणना**  
**(Calculation of Cash Price)**

कभी-कभी प्रश्न में सम्पत्ति का नकद मूल्य नहीं दिया होता, जबकि नकद मूल्य का होना आवश्यक है। क्योंकि ब्याज तथा हास की राशि की गणना हमेशा नकद मूल्य पर की जाती है। नकद मूल्य की गणना निम्नलिखित पद्धतियों द्वारा की जा सकती है—

1. वार्षिक वृत्ति दर विधि (Annuity Rate Method)
2. अंकगणितीय विधि (Arithmetical Method)

**1. वार्षिक वृत्ति दर विधि (Annuity Rate Method)**—वार्षिक वृत्ति दर वार्षिक सारणी (Annuity Table) में से ली जाती है। वार्षिक सारणी एक ऐसी सारणी है जो यह बताती है कि निश्चित ब्याज की दर पर निश्चित वर्षों के बाद एक निश्चित राशि प्राप्त करने के लिए इसे वर्तमान में कितने रुपए विनियोग करने होंगे। उदाहरण के लिए वार्षिक सारणी में यह दिया गया है कि 1 रु. की वार्षिक वृत्ति (Annuity) 5 वर्षों के लिए 5 प्रतिशत की दर पर 4.329477 रु. के बराबर होती है। इसका आशय यह है कि यदि हम 1 रु. प्रतिवर्ष के हिसाब से 5 वर्षों के बाद 5 रु. एकत्रित करना चाहे और ब्याज की दर 5 प्रतिशत हो तो हमें वर्तमान में 4.329477 रु. विनियोग करने होंगे। इस पद्धति द्वारा नकद मूल्य की गणना हेतु अग्रलिखित शर्तों का पूरा होना आवश्यक है। (अ) प्रत्येक किस्त (ब्याज सहित) की राशि समान होनी चाहिए। (ब) वार्षिक वृत्ति दर दी होनी चाहिए।

अतः निम्न सूत्र (Formula) द्वारा नकद मूल्य (Cash Price) की गणना की जा सकती है—

$$\text{Cash Price} = (\text{Annuity Rate} \times \text{Amount of one Instalment}) + \text{Cash down payment}$$

**2. अंकगणितीय विधि (Arithmetical Method)**—यदि प्रश्न में वार्षिक वृत्ति दर (Annuity Rate) नहीं दी हुई है या किस्तों की राशि असमान है तो अंकगणितीय विधि द्वारा नकद मूल्य की गणना की जाती है। इस विधि के अन्तर्गत यदि मूलधन की राशि ज्ञात करनी हो तो निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाता है—

$$\text{मिश्रधन (मूलधन + ब्याज)} \times \frac{100}{100 + \text{ब्याज की दर}}$$

उपर्युक्त सूत्र के आधार पर नकद मूल्य की गणना की जाती है इसलिए इसे 'अंकगणितीय विधि' कहते हैं। अतः इस विधि से नकद मूल्य की गणना करने के लिए निम्न ढंग अपनाना पड़ता है—

**Step 1**—सर्वप्रथम अन्तिम किस्त की राशि (मूल राशि + ब्याज) का नकद मूल्य ज्ञात करना चाहिए—

$$\text{Last instalment} \times \frac{100}{100 + \text{Rate of interest}}$$

**Step 2**—अन्तिम किस्त के नकद मूल्य को उससे तुरन्त पहली किस्त की राशि में जोड़ देना चाहिए। क्योंकि इस नकद मूल्य का ब्याज भी इस वर्ष की किस्त में सम्मिलित है अतः अंकगणित के अनुसार यह 'मिश्रधन' कहलाएगा। इस राशि का भी ऊपर बताई गई विधि से नकद मूल्य ज्ञात करना चाहिए—

$$\text{Amount of two instalments} \times \frac{100}{100 + \text{Rate of interest}}$$

**Step 3**—उपर्युक्त ज्ञात किए गए दोनों किस्तों के नकद मूल्य में से तुरन्त पहली किस्त को जोड़ देना चाहिए। अतः अंकगणित के अनुसार यह नकद मूल्य ज्ञात किया जाता है। अतः अंकगणित के अनुसार यह नकद मूल्य ज्ञात करना चाहिए। अब यहाँ तक कि नकद मूल्य ज्ञात हो जाए।

उपर्युक्त विधि को तब तक दोहराना चाहिए जब तक कि नकद मूल्य ज्ञात हो जाए।

## ब्याज की दर न दी हुई होने पर ब्याज की गणना (Calculation of Interest When Rate of Interest is not given)

यदि प्रश्न में ब्याज की दर न दी हुई हो तो ब्याज की गणना निम्न में से किसी एक विधि द्वारा की जा सकती है—

1. इनवर्स प्रोग्रेसिव विधि (Inverse Progressive Method)
2. गुणनफल विधि (Product Method)

**1. इनवर्स प्रोग्रेसिव विधि—**इनवर्स प्रोग्रेसिव का अर्थ है 'उल्टी गिनती गिनना'। इसमें किस्तों की संख्या को सीधा गिनने की बजाय उल्टा गिना जाता है। इस विधि का प्रयोग तब किया जाता है तब प्रश्न में दो बातें दी गई हों—

(अ) समस्त किस्तों की अवधि समान हो। चाहे तिमाही, छमाही या वार्षिक जो भी हो।

(ब) सभी देय किस्तों की राशि समान हो। अनुबन्ध के समय अग्रिम भुगतान की गई राशि भिन्न हो सकती है।

**ब्याज की गणना की विधि—**इस विधि से प्रत्येक किस्त में ब्याज की राशि की गणना करने के लिए निम्न प्रक्रिया अपनाई जाएगी—

(क) समस्त किस्तों की राशि का प्रयोग करके उसमें से सम्पत्ति का नकद मूल्य (Cash Price) घटाकर कुल ब्याज की रकम निकाल लेनी चाहिए अर्थात् कुल ब्याज = किराया क्रय मूल्य — नकद मूल्य।

(ख) कुल ब्याज की राशि को इनवर्स प्रोग्रेसिव विधि के आधार पर किस्तों की संख्या के अनुपात में बांट देना चाहिए। अनुपात की गणना के लिए किस्तों की संख्या को उल्टा कर दिया जाता है। जैसे—किस्तों की संख्या 4 है तो अनुपात 4 : 3 : 2 : 1 होगा। इसी प्रकार किस्तों की संख्या 5 है तो अनुपात 5 : 4 : 3 : 2 : 1 होगा।

अतः यह विधि इस सिद्धान्त पर आधारित है कि प्रत्येक किस्त में सम्मिलित ब्याज कुल ब्याज का वह अनुपात होगा जो कि किस्त देय होने पर एक किस्त और समस्त किस्तों की संख्या के जोड़ में होता है।

**2. गुणनफल विधि (Product Method)—**ब्याज की गणना के लिए इस विधि का प्रयोग निम्नलिखित दशाओं में किया जाता है—

(i) किस्तों की राशि असमान हो।

या

(ii) किस्तों के भुगतान की अवधि असमान हो।

या

(iii) उपर्युक्त दोनों।

अतः हम कह सकते हैं कि इनवर्स प्रोग्रेसिव विधि की शर्तें पूरी न होने की दशा में ही गुणनफल विधि का प्रयोग किया जाएगा।

**ब्याज की गणना की विधि—**इस विधि के द्वारा प्रत्येक किस्त में ब्याज की राशि की गणना करने के लिए निम्न प्रक्रिया अपनाई जाएगी—

(i) किराया क्रय मूल्य (Hire Purchase Price) में से नकद मूल्य (Cash Price) घटाकर कुल ब्याज ज्ञात करना चाहिए।

(ii) प्रत्येक किस्त के भुगतान के समय ब्याज सहित कुल जितनी अदत्त राशि (Outstanding Amount) घटाकर कुल ब्याज ज्ञात करना चाहिए।

(iii) अदत्त राशि कितने समय तक देय रही इसकी गणना करनी चाहिए।

(iv) अदत्त राशि को अदत्त समय से गुणा करके गुणनफल (Product) ज्ञात करना चाहिए।

- (v) कुल ब्याज को गुणनफल के अनुपात में बांट देना चाहिए जिससे प्रत्येक किस्त के अलग-अलग ब्याज की गणना हो जाएगी।

### कम मूल्य का माल (Goods of Small Value)

#### किराया क्रय व्यापारिक खाता बनाना (Preparation of Hire Purchase Trading Account)—

जब किराया क्रय बिक्रियों की संख्या बहुत अधिक होती है और बेचे गए माल कम मूल्यों के होते हैं, जैसे साइकिल, रेडियो, पंखे आदि, तो प्रत्येक ग्राहक के लिए एक अलग खाता बनाना सम्भव नहीं होता। ऐसी परिस्थिति में क्रय व्यवहारों का लेखा करने के लिए एक किराया क्रय रजिस्टर रखा जाता है जिसमें ग्राहक का नाम, वस्तु का नाम, वस्तु की लागत, वस्तु का विक्रय मूल्य, कुल किस्तों की संख्या, कितनी किस्त कब कब प्राप्त हुई आदि सब विषयों के लिए अलग-अलग खाने होते हैं। यह रजिस्टर एक स्मरणीय पुस्तक (Memorandum Book) है और यह वित्तीय लेखों का भाग नहीं होती। वित्तीय वर्ष के अन्त में इस रजिस्टर से निम्नलिखित सूचनाएं प्राप्त होती हैं—

- वर्ष के दौरान विभिन्न ग्राहकों को बेचे गए माल का लागत मूल्य (Cost Price)
- वर्ष के दौरान विभिन्न ग्राहकों को बेचे गए माल का विक्रय मूल्य (Sale Price)
- वर्ष के दौरान विभिन्न ग्राहकों से प्राप्त कुल किस्तों का नकद मूल्य (Cash received from customers)
- वर्ष के अन्त में देय किस्तें (Instalments due at the end of the year)

किस्तें देय तभी होती हैं जब किस्त के भुगतान की निश्चित तिथि निकल चुकी है परन्तु ग्राहक ने अभी किस्त नहीं दी है अर्थात् ग्राहक ने किस्त देने में देरी कर दी है।

- वर्ष के अन्त में उन किस्तों की राशि जो इस वित्तीय वर्ष में देय नहीं हैं (Instalment Not Due) इन किस्तों के भुगतान की तिथि अगले वित्तीय वर्ष में पड़ेगी। इन किस्तों को अन्तिम स्टॉक (Closing Stock) अथवा ग्राहकों के पास स्टॉक (Stock with the Customers) भी कहते हैं।

उपर्युक्त सूचनाओं को प्राप्त करने के पश्चात् लाभ ज्ञात करने के लिए एक किराया क्रय व्यापारिक खाता बना जाता है जिसका प्रारूप निम्न है—

#### HIRE PURCHASE TRADING ACCOUNT

		Rs.			Rs.
In the beginning of the year	To Stock with the customers <sup>1</sup> <i>or</i> Instalment not due	.....	At the end of the year	By Cash received from the customer during the year	.....
„	To Instalment due <sup>2</sup>	.....	..	By Instalment due at the end	.....
At the end of the year	To Goods sold on hire purchase during the year <sup>3</sup>	.....	..	By Stock with the customers at the end <sup>4</sup>	.....
	To Profit & Loss A/c (Balancing figure)	.....	..	<i>or</i> Instalment not due at the end	.....
		.....		By Profit & Loss A/c (Balancing figure)	.....
		.....			.....

#### टिप्पणियां—

- Stock with th customers in the beginningr**—स्टॉक की यह राशि पिछले वर्ष के अन्त में जो किस्तें देय नहीं थीं वह राशि होती हैं। यह राशि लागत मूल्य पर होनी चाहिए। यदि स्टॉक की यह राशि किराया क्रय मूल्य पर है तो किराया क्रय-मूल्य और लागत मूल्य का जो अन्तर होगा उसके व्यापारिक खाते के क्रेडिट पक्ष में स्टॉक रिजर्व (Stock Reserve) के नाम से दिखाया जाएगा।

2. **Instalments due in the beginning**—ये किस्तें क्योंकि पिछले वर्ष ही देय हो चुकी हैं इसलिए यह किराया क्रय मूल्य पर ही दिखानी चाहिए।
3. **Goods sold on hire purchase during the year**—वर्ष के दौरान बेचे गए माल को लागत मूल्य पर दिखाना चाहिए। यदि यह किराया क्रय मूल्य पर दिखाया जाता है तो किराया क्रय मूल्य और लागत मूल्य का जो अन्तर है उसे व्यापारिक खाते के क्रेडिट पक्ष में 'By Goods sold on Hire Purchase' के नाम से दिखाया जाएगा। इसे बेचे गए माल पर लोडिंग (Loading) कहते हैं।
4. **Stock with the customers at the end of the year**—यदि यह किराया क्रय मूल्य पर है तो किराया क्रय मूल्य और लागत मूल्य में जो अन्तर है उसे व्यापारिक खाते के डेबिट पक्ष में स्टॉक रिजर्व (Stock Reserve) के नाम से दिखाया जाएगा।

**Illustration 4**

एक कम्पनी किराया क्रय पद्धति द्वारा लागत +50% पर कम मूल्य वाली वस्तुएं बेचती है। निम्नलिखित विवरणों से कम्पनी की पुस्तकों में किराया क्रय व्यापारिक खाता बनाइए—

1980

	रु.
जनवरी 1 किराया क्रय रहित ग्राहकों के पास (विक्रय मूल्य पर)	9,000
जनवरी 1 दुकान पर रहितियां (लागत मूल्य पर)	18,000
जनवरी 1 देय किस्तें	5,000
दिसम्बर 31 ग्राहकों से प्राप्त रोकड़	60,000
दिसम्बर 31 देय किस्तें (ग्राहक अभी चुका रहे हैं)	9,000
दिसम्बर 31 वापस प्राप्त माल का अनुमानित मूल्य (देय किस्तें 2000)	500
दिसम्बर 31 दुकान पर रहितिया (वापस प्राप्त माल सहित)	20,500
दिसम्बर 31 वर्ष के दौरान क्रय किया गया माल	60,000

A company sells goods of small value on hire-purchase at cost plus 50%. From the following particulars prepare Hire-Purchase Trading A/c in the books of the Company:

1980

	Rs.
Jan. 1 Stock out with hire-purchase customers (at selling price)	9,000
Jan. 1 Stock at shop (at cost)	18,000
Jan. 1 Instalments due	5,000
Dec. 31 Cash received from customers	60,000
Dec. 31 Goods repossessed (instalments due Rs. 2,000) valued	500
Dec. 31 Instalments due, customers still paying	9,000
Dec. 31 Stock at Shop at cost (including repossessed goods)	20,500
Dec. 31 Goods purchased during the year	60,000

(B. Com. M.D.U. 2000)

**Solution:**

A careful study of the above question reveals that two items are missing:

1. Goods sold during the year, and
2. Closing Stock i.e. stock out with hire-purchase customers on 31st December.

(1) Goods sold during the year can be calculated easily as the item of purchase is given:

$$\text{Goods sold during the year (at cost)} = \text{Stock at shop on 1st January} + \text{Goods Purchased} - \text{Stock at shop on 31st December}$$

$$= \text{Rs. } 18,000 + \text{Rs. } 60,000 - \text{Rs. } 20,000$$

$$= \text{Rs. } 58,000$$

Goods sold during the year

$$\text{(at hire-purchase price)} = 58,000 \times \frac{150}{100} = \text{Rs. } 87,000$$

(2) Now closing stock (stock out with customers on 31st December) can be found out by preparing a Hire Purchase Memorandum A/c.

#### HIRE PURCHASE MEMORANDUM ACCOUNT

1980		Rs.	1980		Rs.
Jan. 1	To Stock out with hire Purchase customers (at hire purchase price)	9,000	Dec. 31	By Cash received during the year	60,000
Jan. 1	To Instalments due	5,000	Dec. 31	By Goods repossessed (Instalment not due)	2,000
Dec. 31	To Goods sold during the year (at hire purchase price)	87,000	Dec. 31	By Instalments due	9,000
			Dec. 31	By Closing Stock (at hire purchase price, being the balancing figure)	30,000
		<u>1,01,000</u>			<u>1,01,000</u>

#### HIRE PURCHASE TRADING ACCOUNT

1980		Rs.	1980		Rs.
Jan. 1	To Stock out with hire Purchase customers (at hire purchase price)	9,000	Jan. 1	By Stock Reserve A/c (50/150 of Rs. 9,000)	3,000
Jan. 1	To Instalments due	5,000	Dec. 31	By Cash Received	60,000
Dec. 31	To goods sold during the year (at hire purchase price)	87,000	Dec. 31	By Instalments due	9,000
Dec. 31	To Stock Reserve—Loading (50/150 of Rs. 30,000)	10,000	Dec. 31	By Goods repossessed	500
Dec. 31	To P & I, A/c	20,500	Dec. 31	By Goods sold during the year (Loading 50/150 of Rs. 87,000)	29,000
		<u>1,31,500</u>	Dec. 31	By Closing Stock (at hire-purchase price)	30,000
					<u>1,31,500</u>

नोट—Stock at Shop को न तो Memorandum A/c में लिखा जाएगा और न ही Hire Purchase Trading A/c में लिखा जाएगा, क्योंकि यह माल किराया क्रय पर बेचा ही नहीं गया है।

### किस्त भुगतान प्रणाली (Instalment Payment System)

किराया क्रय पद्धति की ही तरह इस पद्धति में भी भुगतान किस्तों में करना पड़ता है परन्तु किस्त भुगतान प्रणाली में विक्रय का प्रसविदा होते ही क्रेता माल का स्वामी बन जाता है। वास्तव में किस्त भुगतान प्रणाली तो उधार बिक्री का एक अनुबन्ध है जिसमें भुगतान किस्तों में करना होता है। यदि किस्तें नहीं दी जाती हैं तो विक्रेता माल को वापस नहीं ले सकता। यह केवल शेष किस्तों को दावा करके वसूल कर सकता है।

“किस्त भुगतान पद्धति में माल की सुपुर्वगी मिलते ही माल क्रेता की सम्पत्ति बन जाती है यद्यपि भुगतान किस्तों में किया जाता है।”—जे.आर. बाटलीबॉय

“किस्त भुगतान प्रणाली में विक्रेता अपने स्टॉक को ऐसे देनदारों में बदल देता है जो किस्तों में भुगतान करते हैं। क्रेता के दृष्टिकोण से यह माल का उधार क्रय है जिसमें मूल्य उस पर ऋण की तरह है जिसका भुगतान उसे करना है।”—एल.सी. क्रॉपर

“किराया क्रय पद्धति और किस्त भुगतान पद्धति यद्यपि एक जैसी ही प्रतीत होती है क्योंकि दोनों में ही भुगतान किस्तों में करना होता है परन्तु इन दोनों में बहुत अधिक अन्तर है। प्रथम पद्धति तो मात्र क्रय का प्रसंविदा है जिसमें अन्तिम किस्त का भुगतान होने पर ही यह प्रसंविदा का रूप धारण करता है परन्तु किस्त भुगतान पद्धति आरम्भ से ही बिक्री प्रसंविदा है जिसमें इकट्ठा करने के स्थान पर निश्चित अवधि में धीरे-धीरे ब्याज सहित भुगतान किया जाता है।”—विलियम पिकिल्स

### किस्त भुगतान पद्धति की मूल विशेषताएं—

1. उधर बिक्री होना—यह उधार बिक्रीका अनुबन्ध होता है।
2. भुगतान की किस्तों में होना—मूल्य का भुगतान क्रेता तथा विक्रेता द्वारा आपसी समझौते द्वार किस्तों में किया जाता है।
3. माल की सुपुर्वगी—माल की सुपुर्वगी क्रेता को अनुबन्ध होते ही मिल जाती है।
4. स्वामित्व का हस्तान्तरण—स्वामित्व का हस्तान्तरण अनुबन्ध के समय ही हो जाता है।
5. किस्त भुगतान में त्रुटि होने पर—विक्रेता माल को वापस नहीं ले सकता। न ही वह चुकाई गई किस्तों को जब्त कर सकता है। वह तो केवल शेष राशि के लिए दावा कर सकता है।
6. क्रेता द्वारा बिक्री करना या गिरवी रखना—क्रेता प्रारम्भ से ही माल का स्वामी बन जाता है इसलिए वह किसी समय भी माल को बेच सकता है अथवा गिरवी रख सकता है।

### लेखांकन की विधि (Methods of Accounting)

किस्त भुगतान पद्धति में ब्याज गणना तालिका (Interest Calculation Table) ठीक उसी प्रकार से बनाई जाती है जैसे कि किराया क्रय पद्धति में बनाई जाती है। इस पद्धति में क्रेता केवल सम्पूर्ण नकद मूल्य विधि (Total Cash Price Method) का ही प्रयोग कर सकता है। किराया क्रय पद्धति तथा किस्त भुगतान पद्धति के लेखांकन में मुख्य अन्तर यह है कि किस्त भुगतान पद्धति में अनुबन्ध के समय ही क्रेता सम्पूर्ण ब्याज की राशि 'ब्याज उचन्ती खाता' (Interest Suspense Account) को डेबिट कर विक्रेता के खाते (Vendor's Account) को क्रेडिट करता है जबकि विक्रेता इसके विपरीत प्रविष्टि करता है। प्रत्येक किस्त के समय जितनी ब्याज की राशि देय (या प्राप्य) होती है उसे 'Interest Suspense Account' से 'Interest Account' में हस्तांतरित कर दिया जाता है। 'Interest Suspense Account' के शेष को क्रेता के चिट्ठे में 'Asset side' में और विक्रेता के चिट्ठे में 'Liabilities Side' में दिखाया जाता है। दोनों पक्षकारों की पुस्तकों में होने वाले जर्नल के लेखे नीचे समझाए गए हैं—

Date (तिथि)	Entries in the Books of Buyer (क्रेता की पुस्तकों में प्रविष्टियां)	Entries in the Books of Vendor (विक्रेता की पुस्तकों में प्रविष्टियां)
1st Year Beginning (1st Jan.)	Asset A/c ...Dr. (Total Cash price) Interest Suspense A/c...Dr. (Total Interest) To Vendor A/c (For assets purchased on instalment system.)	Purchaser's A/c ...Dr. To Sales A/c (Total Cash price) To Interest Suspense A/c (Total Interest) (For goods sold on instalment system.)

1st Year Beginning (1st Jan.)	Vendor's A/c ...Dr. • To Cash A/c (For down payment made.)	Cash A/c ...Dr. To Purchaser's A/c (For down payment received.)
1st Year at the end (31st Dec.)	Interest A/c ...Dr. To Interest Suspense A/c (For interest due.)	Interest Suspense A/c ...Dr. To Interest A/c (For interest due.)
	Vendor's A/c ...Dr. To Cash A/c (For for payment of instalment)	Cash A/c ...Dr. To Purchaser's A/c (For the amount of instalment read.)
	Depreciation A/c ...Dr. To Asset A/c (For depreciation charged on the cash price of the assets.)	NO ENTRY
	Profit & Loss A/c ...Dr. To Interest A/c To Depreciation A/c (For interest and depreciation, transferred to P & L A/c)	Interest A/c ...Dr. To Profit & Loss A/c (For interest transferred to Profit & Loss A/c.)
	NO ENTRY	Sales A/c ...Dr. To Trading A/c (For the transfer of Sales to Trading A/c.)

**किराया क्रय पद्धति और किस्त भुगतान पद्धति में अन्तर**  
(Difference between Hire Purchase System and Instalment Payment System)

क्र.सं. S.No.	अन्तर आधार (Basis of Difference)	किराया क्रय पद्धति (Hire Purchase System)	किस्त भुगतान पद्धति (Instalment Payment system)
1.	अनुबन्ध का स्वभाव (Nature of Contract)	यह एक किराये के अनुबन्ध की तरह होता है जो अन्तिम किस्त चुकाने के का अनुबन्ध बनता है।	किस्त भुगतान पद्धति में आरम्भ से ही बिक्री का अनुबन्ध होता है।
2.	स्वामित्व का हस्तांतरण (Transfer of Ownership)	अन्तिम किस्त के भुगतान होने के पश्चात ही स्वामित्व का हस्तान्तरण होता है।	इस पद्धति में स्वामित्व का हस्तांतरण आरम्भ में ही हो जाता है।
3.	विक्रेता को माल वापस लेने का अधिकार (Right to recover the Goods)	इसमें किसी भी किस्त के समय पर भुगतान न करने पर विक्रेता को माल वापस लेने का अधिकार होता है।	इस पद्धति में विक्रेता को माल वापस लेने का अधिकार नहीं होता।
4.	किस्तों को जब्त करने का अधिकार (Forfeiture of Instalments)	किसी भी किस्त के समय पर भुगतान न करने पर विक्रेता चुकाई गई किस्तों को जब्त कर सकता है।	इसमें चुकाई गई किस्तें जब्त नहीं की जा सकतीं। केवल शेष राशि के लिए दावा किया जा सकता है।
5.	माल वापस करने का अधिकार (Right to Return the goods)	क्रेता किसी भी समय माल वापस कर सकता है परन्तु उसे भुगतान की गई किस्तों को वापस प्राप्त करने का अधिकार नहीं होता।	इसमें क्रेता माल वापस नहीं कर सकता क्योंकि आरम्भ में बिक्री का अनुबन्ध हुआ है, न कि किराए का।

6.	माल की मरम्मत का उत्तरदायित्व (Responsibilities to Repair of goods sold)	अन्तिम किस्त के भुगतान तक माल की मरम्मत का उत्तरदायित्व विक्रेता पर होता है, यदि क्रेता द्वारा माल को उचित सावधानी से रखने पर टूट फूट हुई है।	इसमें विक्रेता मरम्मत कराने के लिए उत्तरदायी नहीं होता।
7.	जोखिम (Risk)	स्वामित्व का हस्तांतरण न होने के कारण अन्तिम किस्त के भुगतान तक माल की जोखिम विक्रेता की रहती है।	इसमें आरम्भ में ही स्वामित्व का हस्तांतरण हो जाता है इसलिए जोखिम क्रेता का होता है।
8.	देनदार (Debtor)	इसमें क्रेता किरायेदार की तरह होता है। वह विक्रेता का देनदार नहीं बनता।	इसमें क्रेता देनदार बन जाता है।
9.	उचित सुरक्षा (Proper Safety)	क्रेता माल की उचित सुरक्षा के लिए उत्तरदारी है।	यहां क्रेता उचित सुरक्षा के लिए विक्रेता के प्रति उत्तरदायी नहीं है।
10.	माल बेचना अथवा गिरवी रखना (Right to sell or mortgage the Goods)	इस पद्धति में यदि क्रेता अन्तिम किस्त के भुगतान से पूर्व माल बेच देता है अथवा गिरवी रख देता है तो नए क्रेता के श्रेष्ठ अधिकार नहीं दे सकता।	क्रेता आरम्भ से ही माल को बेचने अथवा गिरवी रखने का पूर्ण अधिकार रखता है।
11.	निक्षेप (Bailment)	इसमें क्रेता की स्थिति निक्षेपगृहीता (Bailee) की तरह होती है।	इसमें क्रेता की स्थिति निक्षेपगृहीता की तरह नहीं होती बल्कि वह माल का स्वामी होता है।

**Illustration 5**—1 जुलाई 1981 को हरियाणा रोडवेज ने किस्त क्रय पद्धति पर हिन्द मोटर कम्पनी लिमिटेड से बसें खरीदीं। इन्होंने 100000 रु. नकद भुगतान किए तथा यह फैसला हुआ कि शेष तीन किस्तें प्रत्येक 100000 रु. प्रति वर्ष 30 जून को भुगतान करनी है। बसों का कुल मूल्य 372500 रु. है। हरियाणा रोडवेज बसों पर 10 प्रतिशत वार्षिक दर से क्रमागत हास विधि से हास लगाती है। हिन्द मोटर कम्पनी लिमिटेड 5 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज लेती है। दोनों पक्षकारों की पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टियां तथा खाते दीजिए। (गणना निकटतम रुपए में करनी है।)

Haryana Roadways purchases Buses from Hind Motor Co. Ltd. on Instalment system on 1st July, 1981, paying cash Rs. 1,00,000 and agreeing to pay three further instalments of Rs. 1,00,000 each on 30th June every year. The price of the Buses is Rs. 3,72,500. Haryana Roadways has decided to write off 10% annually on diminishing balance method. Hind Motor Co. Ltd. charges interest at 5% P.a. Give journal entries and ledger accounts in the books of both th parties. (calculation, nearest rupee).

**Solution:**

**CALCULATION OF INTEREST BY TABLE**

Particulars	Cash Price Rs.	Principal Rs.	Interest @ 5% Rs.	Instalments Rs.
Cash Price of Buses	3,72,500			
Less : Down payment	1,00,000	1,00,000		1,00,000
	2,72,500		$2,72,500 \times \frac{5}{100} \times 1 = 13,625$	1,00,000
Less : Cash price in 1st instalment	86,375	86,375		
	1,86,125		$1,86,125 \times \frac{5}{100} \times 1 = 9,306$	1,00,000
Less : Cash price in 2nd instalment	90,694	90,694		
	95,431		$1,00,000 - 95,431 = 4,569$	
Less : Cash price in 3rd instalment	95,431	95,431		1,00,000
	Nil	3,72,500	27,500	4,00,000

**In the Books of Haryana Roadways**  
**JOURNAL**

<i>Date</i>	<i>Particulars</i>	<i>L. F.</i>	<i>Amount</i>	<i>Amount</i>
1981			Rs.	Rs.
July 1	Buses A/c .....Dr.		3,72,500	
	Interest Suspense A/c .....Dr.		27,500	
	To Hind Motors Co. Ltd.			4,00,000
	(For buses purchased on instalment payment system.)			
July 1	Hinds Motor Co. Ltd .....Dr.		1,00,000	
	To Cash A/c			1,00,000
	(For down payment made.)			
1982				
June 30	Interest A/c .....Dr.		13,625	
	To Interest Suspense A/c			13,625
	(For interest due.)			
June 30	Hind Motor Co. Ltd. ....Dr.		1,00,000	
	To Cash A/c			1,00,000
	(For the payment of 1st instalment.)			
June 30	Depreciation A/c .....Dr.		37,250	
	To Buses A/c			37,250
	(For depreciation charged @ 10% p.a. on Rs. 3,72,500.)			
June 30	Profit & Loss A/c .....Dr.		50,875	
	To Interest A/c			13,625
	To Depreciation A/c			37,250
	(For interest and depreciation transferred to Profit & Loss A/c.)			
1983				
June 30	Interest A/c .....Dr.		9,306	
	To Interest Suspense A/c			9,306
	(For interest due.)			
June 30	Hind Motor Co. Ltd .....Dr.		1,00,000	
	To Cash A/c			1,00,000
	(For the payment of 2nd instalment.)			
June 30	Depreciation A/c .....Dr.		33,525	
	To Buses A/c			33,525
	(For depreciation charged @ 10% p.a. on Rs. 3,35,250.)			
June 30	Profit & Loss A/c .....Dr.		42,831	
	To Interest A/c			9,306
	To Depreciation A/c			33,525
	(For interest and depreciation transferred to Profit & Loss A/c.)			
1984				
June 30	Interest A/c .....Dr.		4,569	
	To Interest Suspense A/c			4,569
	(For interest due.)			
June 30	Hind Motor Co. Ltd. ....Dr.		1,00,000	
	To Cash A/c			1,00,000
	(For the payment of 3rd instalment.)			

June 30	Depreciation A/c To Buses A/c (For depreciation charged @ 10% p.a. on Rs. 3,01,725.)	.....Dr.	30,173	30,173
June 30	Profit & Loss A/c To Interest A/c To Depreciation A/c (For interest and depreciation transferred to Profit & Loss A/c)	.....Dr.	34,742	4,569 30,173

**Ledger Accounts  
BUSES ACCOUNT**

1981		Rs.	1982		Rs.
July 1	To Hind Motor Co. Ltd.	3,72,500	June 30	By Depreciation A/c	37,250
			June 30	By Balance c/d	3,35,250
		<u>3,72,500</u>			<u>3,72,500</u>
1982			1983		
July 1	To Balance b/d	3,35,250	June 30	By Depreciation A/c	33,525
			June 30	By Balance c/d	3,01,725
		<u>3,35,250</u>			<u>3,35,250</u>
1983			1984		
July 1	To Balance b/d	3,01,725	June 30	By Depreciation A/c	30,173
			June 30	By Balance c/d	2,71,552
		<u>3,01,725</u>			<u>3,01,725</u>

**INTEREST SUSPENSE ACCOUNT**

1981		Rs.	1982		Rs.
July 1	To Hind Motor Co. Ltd.	27,500	June 30	By Interest A/c	13,625
			June 30	By Balance c/d	13,875
		<u>27,500</u>			<u>27,500</u>
1982			1983		
July 1	To Balance b/d	13,875	June 30	By Interest A/c	9,300
			June 30	By Balance c/d	4,569
		<u>13,875</u>			<u>13,875</u>
1983			1984		
July 1	To Balance b/d	4,569	June 30	By Interest A/c	4,569

**HIND MOTOR CO. LTD. (VENDOR)**

1981		Rs.	1981		Rs.
July 1	To Cash A/c	1,00,000	July 1	By Buses A/c	3,72,500
1982			July 1	By Interest Suspense A/c	27,500
June 30	To Cash A/c	1,00,000			
June 30	To Balance c/d	2,00,000			
		<u>4,00,000</u>			<u>4,00,000</u>

1983			1982		
June 30	To Cash A/c	1,00,000	July 1	By Balance b/d	2,00,000
June 30	To Balance c/d	1,00,000			
		<u>2,00,000</u>			<u>2,00,000</u>
1984			1983		
June 30	To Cash A/c	1,00,000	July 1	By Balance b/d	1,00,000

### INTEREST ACCOUNT

1982		Rs.	1982		Rs.
June 30	To Interest Suspense A/c	13,625	June 30	By Profit & Loss A/c	13,625
1983			1983		
June 30	To Interest Suspense A/c	9,306	June 30	By Profit & Loss A/c	9,306
1984			1984		
June 30	To Interest Suspense A/c	4,569	June 30	By Profit & Loss A/c	4,569

### DEPRECIATION ACCOUNT

1982		Rs.	1982		Rs.
June 30	To Buses A/c	37,250	June 30	By Profit & Loss A/c	37,250
1983			1983		
June 30	To Buses A/c	33,525	June 30	By Profit & Loss A/c	33,525
1984			1984		
June 30	To Buses A/c	30,173	June 30	By Profit & Loss A/c	30,173

### In the Books of Hind Motor Co. Ltd (Vendor) JOURNAL

Date	Particulars	I. F.	Amount	Amount
1981			Rs.	Rs.
July 1	Haryana Roadways A/c .....Dr. To Sales A/c To Interest Suspense A/c (For goods sold on instalment payment system.)		4,00,000	3,72,500 27,500
July 1	Cash A/c .....Dr. To Haryana Roadways a/c (For down payment received.)		1,00,000	1,00,000
1982				
June 30	Interest Suspense A/c .....Dr. To Interest A/c (For interest due.)		13,625	13,625
June 30	Cash A/c .....Dr. To Haryana Roadways A/c (For 1st instalment received.)		1,00,000	1,00,000
June 30	Interest A/c .....Dr. To Profit & Loss A/c (For interest transferred to Profit & Loss A/c.)		13,625	13,625

June 30	Sales A/c To Trading A/c (For the transfer of sales to Trading A/c.)	....Dr.	3,72,500	3,72,500
1983				
June 30	Interest Suspense A/c To Interest A/c (For interest due.)	....Dr.	9,306	9,306
June 30	Cash A/c To Haryana Roadways A/c (For 2nd instalment received.)	....Dr.	1,00,000	1,00,000
June 30	Interest A/c To Profit & Loss A/c (For interest transferred to Profit & Loss A/c.)	....Dr.	9,306	9,306
1984				
June 30	Interest Suspense A/c To Interest A/c (For interest due.)	....Dr.	4,569	4,569
June 30	Cash A/c To Haryana Roadways A/c (For 3rd instalment received.)	....Dr.	1,00,000	1,00,000
June 30	Interest A/c To Profit & Loss A/c (For interest transferred to Profit & Loss A/c.)	....Dr.	4,569	4,569

**Ledger Accounts**

**HARYANA ROADWAYS ACCOUNT**

1981		Rs.	1981		Rs.
July 1	To Sales A/c	3,72,500	July 1	By Cash A/c	1,00,000
July 1	To Interest Suspense A/c	27,500	1982		
			June 30	By Cash A/c	1,00,000
			June 30	By Balance c/d	2,00,000
		<u>4,00,000</u>			<u>4,00,000</u>
1982			1983		
July 1	To Balance b/d	2,00,000	June 30	By Cash A/c	1,00,000
			June 30	By Balance c/d	1,00,000
		<u>2,00,000</u>			<u>2,00,000</u>
1983			1984		
July 1	To Balance b/d	1,00,000	June 30	By Cash A/c	1,00,000
		<u>1,00,000</u>			<u>1,00,000</u>

**INTEREST SUSPENSE ACCOUNT**

1982		Rs.	1981		Rs.
June 30	To Interest A/c	13,625	July 1	By Haryana Roadways A/c	27,500
June 30	To Balance c/d	13,875			
		<u>27,500</u>			<u>27,500</u>

1983			1982		
June 30	To Interest A/c	9,306	July 1	By Balance b/d	13,875
June 30	To Balance c/d	4,569			
		<u>13,875</u>			<u>13,875</u>
1984			1983		
June 30	To Interest A/c	4,569	July 1	By Balance b/d	4,569

### INTEREST ACCOUNT

1982		Rs.	1982		Rs.
June 30	To Profit & Loss A/c	13,625	June 30	By Interest Suspense A/c	13,625
1983			1983		
June 30	To Profit & Loss A/c	9,306	June 30	By Interest Suspense A/c	9,306
1984			1984		
June 30	To Profit & Loss A/c	4,569	June 30	By Interest Suspense A/c	4,569

### विक्रय उपरांत सेवा (After Sales Service)

अथवा

### विक्रेता द्वारा मरम्मत का व्यय सहन करना (Free Repair of Maintenance by the Vendor)

कभी-कभी कुछ माल इस शर्त पर बेचे जाते हैं कि विक्रेता एक निश्चित अवधि तक उनकी निःशुल्क मरम्मत कर देगा। ऐसी दशा में विक्रेता रोकड़ मूल्य के कुछ भाग को बिक्री खाते में से मरम्मत संचय खाते (Repair Reserve A/c) या (Maintenance Suspenses A/c) में क्रेडिट कर देता है। जब-जब विक्रेता मरम्मत के लिए कोई व्यय करता है तो वह इस खात को डेबिट कर देता है।

**Illustration 6**—राजीव इलेक्ट्रॉनिक्स ने एक टेलीविजन सेट, जिसका नकद मूल्य 2400 रु. है, किराया पद्धति पर इस शर्त पर बेचा कि 1 जुलाई 1974 को ही, जिस दिन ठहराव किया गया है, 800 रु. दिए जाएंगे और शेष 500 रु. की चार छमाही किस्तें दी जाएंगी (जिनमें ब्याज सम्मिलित हैं)।

यह ठहराव हुआ कि टेलीविजन सेट को 2 वर्ष तक निःशुल्क मरम्मत की जाएगी। पुराने अनुभव से यह पता चलता है कि मरम्मत पर पहले वर्ष 120 रु. और दूसरे वर्ष 250 रु. खर्च होंगे। मरम्मत के वास्तविक व्यय प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष में क्रमशः 40 रु., 250 रु. और 100 रु. हुए।

पुस्तकें प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को बन्द की जाती हैं। राजीव इलेक्ट्रॉनिक्स की पुस्तकों में जर्नल की प्रविष्टियां और मरम्मत संचय खाता खोलिए।

### In the Books of Rajeev Electronics

### JOURNAL

Date	Particulars	I. F.	Amount	Amount
1974			Rs.	Rs.
1st July	Hire Purchaser .....Dr. To Hire Sales A/c (Being the cash price of the goods sold on hire purchase.)		2,400	2,400
1st July	Hire Sales A/c .....Dr. To Maintenance Suspense A/c (Being the estimated expenses on maintenance for two years.)		370	370

1st July	Cash A/c .....Dr.	800	
	To Hire Purchaser (Being the receipt of the advance amount.)		800
31st Dec.	Hire Purchaser .....Dr.	160	
	To Interest A/c (Being the interest for the 1st half year due.)		160
31st Dec.	Cash A/c .....Dr.	500	
	To Hire Purchaser (Being the 1st instalment received.)		500
31st Dec.	Maintenance Suspense A/c .....Dr.	40	
	To Cash A/c (Being actual expenses made on maintenance.)		40
31st Dec.	Interest A/c .....Dr.	160	
	To Profit & Loss A/c (Being the transfer of interest to Profit & Loss A/c.)		160
1974			
31st Dec.	Hire Sales A/c .....Dr.	2,030	
	To Trading A/c (Being balance of Hire Sales A/c transferred to Trading A/c i.e. Rs. 2,400 – Rs. 370.)		2,030
1975			
30th June	Hire Purchaser .....Dr.	120	
	To Interest A/c (Being the interest for the 2nd half year due.)		120
30th June	Cash A/c .....Dr.	500	
	To Hire Purchaser (Being the 2nd instalment received.)		500
31st Dec.	Hire Purchaser .....Dr.	80	
	To Interest A/c (Being the interest for the 3rd half year due.)		80
31st Dec.	Cash A/c .....Dr.	500	
	To Hire Purchaser (Being the 3rd instalment received)		500
31st Dec.	Maintenance Suspense A/c .....Dr.	250	
	To Cash A/c (Being the actual expenses made.)		250
31st Dec.	Profit & Loss A/c .....DR.	45	
	To Maintenance Suspense A/c (Being the transfer to Profit & Loss A/c of the excess of actual maintenance over the estimated expenses. Excess spent this year (Rs. 250 – Rs. 185) = Rs. 65 Less Saving in the Previous year 20 (Rs. 60 – Rs. 40) = 45.)		45
31st Dec.	Interest A/c .....Dr.	200	
	To Profit & Loss A/c (Being the interest for the two half years transferred to Profit & Loss A/c.)		200
1973			
30th June	Hire Purchaser .....Dr.	40	
	To Interest A/c (Being the interest for the 4th half year due.)		40

30th June	Cash A/c To Hire Purchaser (Being the 4th instalment received.)	....Dr.	500	500
30th June	Maintenance Suspense A/c To Cash A/c (Being the actual expenses made.)	...Dr.	100	100
30th June	Maintenance Suspense A/c To Profit & Loss A/c (Being the transfer of savings in Maintenance Suspense. i.e., Rs. 1215 - Rs. 100.)	....Dr.	25	25
31st Dec.	Interest A/c To Profit & Loss A/c (Being interest transferred to Profit & Loss A/c.)	....Dr.	40	40

## MAINTENANCE SUSPENSE ACCOUNT

1974		Rs.	1974		Rs.
Dec. 31	To Cash A/c	40	July 1	By Hire Sales A/c	370
Dec. 31	To Balance c/d	330			
		<u>370</u>			<u>370</u>
1975			1975		
Dec. 31	To Cash A/c	250	Jan. 1	By Balance b/d	330
Dec. 31	To Balance c/d	125	Dec. 31	By Profit & Loss A/c	45
		<u>375</u>			<u>375</u>
1976			1976		
Dec. 31	To Cash A/c	100	Jan. 1	By Balance b/d	125
Dec. 31	To Profit & Loss A/c	25			
		<u>125</u>			<u>125</u>

Notes: 1. Calculation of interest included in each instalment:

Total interest Rs. 400 (Rs. 2,800 - Rs. 2,400) will be divided in the ratio of number of instalments according to inverse progression method i.e. 4 : 3 : 2 : 1. So 1st year interest Rs.  $400 \times 4/10 = \text{Rs. } 160$ ; 2nd year Rs.  $400 \times 3/10 = \text{Rs. } 120$  and so on.

2. Television Set will be maintained free of cost for a period of two years, i.e., from 1st July 1974 to 30th June, 1976. But the amount of repair reserve will be divided as per accounting year which are as follows:

Accounting Period

Accounting Period		Estimated Expenses of Maintenance Rs.	Actual Expenses of Maintenance Rs.
From 1st July 1974 to 31st Dec. 1974	$\left(\frac{6}{12}\right)$ of Rs. 120	<u>60</u>	40
From 1st Jan. 1975 to 30th June, 1975	$\left(\frac{6}{12}\right)$ of Rs. 120	60	
From 1st July 1975 to 31st Dec. 1975	$\left(\frac{6}{12}\right)$ of Rs. 120	<u>125</u>	250
Form 1st Jan. 1976 to 30th June 1976	$\left(\frac{6}{12}\right)$ of Rs. 120	125	100

## अध्याय-9

# साझेदारी खाते (Partnership Accounts)

**Meaning of Partnership** साझेदार का अर्थ—साधारण शब्दों में जब दो या अधिक व्यक्ति किसी व्यवसाय के लाभों को बांटने के लिए सहमत हो जाते हैं और जिसका प्रबन्ध एक या समस्त साझेदारों द्वारा किया जाता है तो वह साझेदारी कहलाती है।

**परिभाषा (Definition)**—भारतीय साझेदारी अधिनियम की धारा 4 के अनुसार, “साझेदारी उन व्यक्तियों के बीच एक सम्बन्ध है जिन्होंने ऐसे व्यवसाय के लाभ को परस्पर बांटने का ठहराव किया है, जिसे वे सब चला रहे हैं या उन सबकी ओर से उनमें से कोई एक चला रहा है।” (“Partnership is the relationship between persons who have agreed to share the profits of a business carried on by all or any of them acting for all.”)

—Indian Partnership Act, 1932 Sec 4)

**साझेदारी की विशेषताएं (Characteristics of Partnership)**—साझेदारी संगठन की निम्न विशेषताएं होती हैं।

1. दो या अधिक व्यक्ति (Two or more persons)—साझेदारी की स्थापना करने के लिए कम से कम दो व्यक्तियों का होना आवश्यक होता है। इन व्यक्तियों में अनुबन्ध करने की योग्यता होना आवश्यक है। बैंकिंग व्यवसाय के लिए साझेदारों की अधिकतम संख्या 10 हो सकती है। जबकि अन्य प्रकार के व्यवसायों के लिए साझेदारों की अधिकतम संख्या 20 हो सकती है।

2. अनुबन्ध (Agreement)—अनुबन्ध से उत्पन्न हाता है, स्थिति (status) के द्वारा नहीं। अतः साझेदारी के निर्माण के लिए आवश्यक है कि उसके सदस्यों अथवा साझेदारों के बीच ठहराव या अनुबन्ध लिखित अथवा मौखिक हो। साझेदारी अनुबन्ध में वे सब विशेषताएं विद्यमान होनी चाहिए जो कि एक साधारण अनुबन्ध में होती हैं; जैसे—प्रस्ताव।

3. लाभ कमाने (Profit Motive)—साझेदारी व्यवसाय का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाकर सदस्यों में निश्चित अनुपात में बांटना है। जन-कल्याण के लिए किया गया कार्य साझेदारी के अन्तर्गत शामिल नहीं किया जाता।

4. व्यवसाय (Business)—साझेदारी के लिए व्यवसाय का होना आवश्यक है। साझेदारी में व्यवसाय शब्द अत्यन्त ही व्यापक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है और इसमें समस्त आर्थिक क्रियाओं का समावेश हो जाता है। यहां व्यवसाय के अन्तर्गत वे सभी कार्य आ जाते हैं जो कि लाभ कमाने के उद्देश्य से किए जाते हैं। जैसे—उद्योग, व्यापार, वाणिज्य तथा प्रत्यक्ष सेवाएं।

5. एजेंसी सम्बन्ध (Agency Relationship)—साझेदारों में स्वामी एजेंट का सम्बन्ध होता है। इस प्रकार के व्यवसाय को सभी के द्वारा या सभी की ओर से किसी एक के द्वारा चलाया जा सकता है। प्रत्येक साझेदार अपने द्वारा किए गए कार्यों से अन्य सभी साझेदारों को बद्ध करता है अर्थात् किसी भी साझेदार द्वारा किए गए कार्य के लिए शेष साझेदार जिम्मेदार होते हैं।

6. हितों के हस्तांतरण पर रोक (Restriction of Transfer of Interest)—कोई भी साझेदार अन्य साझेदारों की सहमति के बिना अपने हिस्से का हस्तांतरण किसी अन्य पक्ष को नहीं कर सकता।

7. असीमित दायित्व (Unlimited Liability)—साझेदारी व्यवसाय में सभी साझेदारों का दायित्व असीमित होता है।

यदि फर्म की सभी सम्पत्तियां इसकी समस्त देनदारियों का भुगतान करने के लिए पर्याप्त नहीं होती हैं तो सभी साझेदारों की या किसी एक साझेदार की निजी (Private) सम्पत्ति से ऋण की वसूली की जा सकती है।

### साझेदारी संलेख (Partnership Deed)

साझेदारी स्थापित करने के लिए साझेदारों में आपसी अनुबन्ध का होना आवश्यक है। कानून के अनुसार यह समझौता लिखित अथवा मौखिक हो सकता है। इस लिखित अनुबन्ध को ही साझेदारी संलेख (Partnership Deed) अथवा साझेदारी के अन्तर्नियम (Articles of Partnership) कहते हैं।

साझेदारी संलेख की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है—“एक ऐसा प्रपत्र जिसमें साझेदारी व्यवसाय के बारे में नियमों एवं उपनियमों की व्याख्या की गई हो उसे साझेदारी संलेख कहते हैं।” (A document which contains the terms of partnership as agreed by the partners is called Partnership Deed.)

### साझेदारी संलेख की विषय सामग्री (Contents of Partnership Deed)

सामान्यतः साझेदारी संलेख में निम्नलिखित बातों का उल्लेख होता है—

1. साझेदारी प्रारम्भ करने की तिथि (Date of Commencement of Partnership)
2. फर्म का नाम (Name of Firm)
3. समस्त साझेदारों के नाम एवं पते (Name and addresses of all partners)
4. साझेदारी व्यवसाय की प्रकृति तथा स्थान (Nature and place of the business)
5. साझेदारी व्यवसाय की अवधि (Duration of partnership)
6. प्रत्येक साझेदार द्वारा लगाई जाने वाली पूंजी (Amount of capital contributed by each partner)
7. लाभ विभाजन का अनुपात (Profit sharing ratio)
8. साझेदारों द्वारा आहरण (Drawings by partners)
9. पूंजी तथा आहरण पर ब्याज (Interest on capitals and drawings)
10. साझेदारों को दिया जाने वाला वेतन, कमीशन आदि (Salaries, Commission etc. if payable to any partner)
11. साझेदारों द्वारा फर्म को दिए गए ऋण पर ब्याज (Interest on Loan by the partners to the firm)
12. नए साझेदार के प्रवेश अथवा वर्तमान साझेदार के अवकाश या मृत्यु होने से सम्बन्धित प्रावधान (Rules to be followed in case of admission, retirement or death of a partner)
13. फर्म के समापन पर खातों का निपटारा (Settlement of accounts on dissolution of the firm)
14. साझेदारों के मध्य वाद-विवाद को निपटाने की विधि (Methods of settling disputes among partners)
15. बैंक खाते (Bank Accounts)
16. गार्नर बनाम मुरे के निर्णय का प्रयोग (Use of Garner v/s Murey Rule)
17. लेखा पुस्तकों का अंकेक्षण (Audit of Books of Account)
18. साझेदारों में कार्य का विभाजन (Division of work among partners)
19. सभी साझेदारों के अधिकार कर्तव्य व दायित्व (Rights, Duties and Liabilities of all partners)
20. ख्याति का मूल्यांकन (Valuation of Goodwill)
21. फर्म के हिसाब-किताब की अवधि (Accounting period of the firm)
22. लेखापुस्तकों की सुरक्षा (Safe custody of Books of Account)

### अन्तिम खाते (Final Accounts)

साझेदारी में भी एकाकी व्यापार की तरह व्यापारिक खाता, लाभ-हानि खाता तथा स्थिति विवरण तैयार किया जाता है। एकमात्र अन्तर केवल वर्ष के अन्त में लाभ अथवा हानि विभाजन का है। साझेदारी व्यवसाय में एक से अधिक स्वामी होने के कारण उनके अलग-अलग पूंजी खाते खोले जाते हैं। तथा लाभ-हानि का विभाजन करने के लिए एक अलग से नया खाता खोला जाता है जिसे लाभ-हानि नियोजन खात कहते हैं इस खाते को निम्न मदों से Dr. किया जाता है।

1. पूंजी पर ब्याज
2. साझेदारों को दिया जाने वाला वेतन अथवा कमीशन
3. साझेदारों के लाभ का भाग

इस खाते को निम्न मदों से क्रेडिट (Credit) किया जाता है—

- (i) लाभ-हानि खाते के अनुसार लाभ (Profit as per Profit and Loss Account)
- (ii) आहरण पर ब्याज (Intersest on Drawings)
- (iii) फर्म द्वारा साझेदारों पर किया गया जुर्माना (Fine imposed by the Firm on the partners)

#### PROFIT AND LOSS APPROPRIATION ACCOUNT

	Rs.		Rs.
To Profit and Loss A/c (If there is Loss before adjustment)	.....	By Profit & Loss A/c (If there is profit before adjustment)	.....
To Interest on Partners' Capital	.....	By Interest on Drawings	.....
To Partners' Salary	.....	By Partner's Capital or Current A/cs(Distribution of loss)	.....
To Partners' Commission	.....		
To Interest on Partners' Loan A/c	.....		
To Partners' Capital or Current A/cs (Distribution of Profit)	.....		
	.....		.....

कुछ विशेष परिस्थितियों में जैसे नए साझेदार के प्रवेश, अवकाश प्राप्ति, मृत्यु तथा फर्म के विघटन आदि के समय लेखा अवधि में कुछ अन्तर आ जाता है।

**Illustration 1**—अरविन्द व पंकज ने एक साझेदारी प्रारम्भ की। अरविन्द ने, जो धनी था, 2,00,000 रु. की पूंजी लगाई, परन्तु पंकज जो अनुभवी एवं योग्य था, केवल 20,000 रु. की ही पूंजी लगा सका। इसके अतिरिक्त अरविन्द ने वर्ष के मध्य में फर्म को 1,00,000 रु. का ऋण भी दिया। प्रथम वर्ष में उन्हें 1,23,000 रु. का लाभ अर्जित हुआ। अरविन्द का कहना था कि लाभों के विभाजन से पूर्व पूंजी तथा ऋण पर 10 प्रतिशत वार्षिकदर से ब्याज का प्रावधान किया जाना चाहिए जबकि पंकज ने 2,000 रु. प्रति माह वेतन की मांग की।

Arvind and Pankaj started a partnership Arvind, who was rich, contributed Rs. 2,00,000, but Pankaj, who had experience and ability, could contribute only Rs. 20,000 as his capital. Besides this, Arvind advanced a loan of Rs. 1,00,000 to the firm in the middle of the year, In the first year they earned profit of Rs. 1,23,000. Arvind insisted that interest on capitals and loan be provided @ 10% per annum before the distribution of profit, while Pankaj demanded a salary of Rs. 2,000 per month.

You are required to prepare an account showing the distribution of profits, assuming tha there is no agreement between partners. State reasons for your answer.

**Solution:**

**PROFIT AND LOSS APPROPRIATION ACCOUNT**  
for the year ended.....

Dr.	Rs.	Cr.	Rs.
To Interest on Loan (6% on Rs. 1,00,000 for 6 months)	3,000	By Net Profit as per Profit and Loss A/c	1,23,000
To Capital A/cs:	Rs.		
Arvind 1/2	60,000		
Pankaj 1/2	60,000		
	<u>1,20,000</u>		
	<u>1,23,000</u>		<u>1,23,000</u>

कारण : किसी स्पष्ट अनुबन्ध के अभाव में—

1. पूंजी पर कोई ब्याज नहीं दिया जाएगा।
2. ऋण पर 6 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज दिया जाएगा।
3. किसी साझेदार को वेतन नहीं दिया जाएगा।
4. लाभ समान बांटे जाएंगे।

**Illustration 2**

Following is the Trial Balance of a firm having two partners Prashant and Sahil as on 31st March, 1992:

	Dr.	Cr.
	Rs.	Rs.
Prashant's capital (Fixed)	—	2,00,000
Sahil's capital (Fixed)	—	1,00,000
Parashant's current A/c	—	20,000
Sahil's current A/c	—	16,000
Buildings (1-4-1991)	1,00,000	—
Additions to Buildings (1-10-91)	20,000	—
Plant and Machinery	80,000	—
Wages and Salaries	30,000	—
Fixed deposits with Bank @8% (1-7-1991)	50,000	—
Motor Vans	40,000	—
Office Expenses	4,000	—
Purchases and Sales	4,40,000	5,60,000
Carriage Inward	10,000	—
Returns	4,000	8,000
Bad Debts	4,000	—
Reserve for Bad debts	—	3,000
Sundry Debtors and Creditors	65,600	36,000
Rent (for 11 months)	2,200	—
Loan from Prem Prakash @ 10% p.a. (1-10-1991)	—	20,000
Printing and Stationery	3,000	—
Sundry Income	—	4,000

Cash in hand	2,000	—
Petty cash in hand	100	—
Cash at Bank	8,100	—
Travelling Expenses	5,000	—
Stock (1-4-1991)	20,000	—
Insurance Premium (for one year upto (31-7-1992)	3,000	—
Commission on sales	36,000	—
Advertisement	24,000	—
Carriage outward	6,000	—
Furniture and Fittings	40,000	—
Bills Receivable and Payable	20,000	50,000
	<u>10,17,00</u>	<u>10,17,000</u>

Prepare Trading and Profit and Loss Account for the year ended 31st March, 1992 and a Balance Sheet as on that date after taking into account the following:

- The profit sharing ratio of the partners is 3 : 2.
- Sahil is entitled to a salary of Rs. 650 p.m.
- Interest on partners' capital is to be allowed @ 6% p.a.
- Closing stock on 31st March, 1992 was valued at Rs. 75,000.
- Goods costing Rs. 8,000 taken out by Prashant for personal use have not been recorded in books.
- Wages and salaries include Rs. 2,000 paid for 1992-93.
- Goods worth Rs. 20,000 were destroyed by fire on 15th March, 1992. Insurance Co. has admitted a claim for Rs. 15,000 only.
- Provide depreciation:  
@ 10% on buildings, 5% on furniture and fittings, 15% on plant and machinery and 20% on motor vans.
- Write off Rs. 1,600 further bad debts and raise reserve for bad debts to 5% on Sundry Debtors.

TRADING AND PROFIT AND LOSS ACCOUNT FOR THE YEAR ENDING 31ST MARCH, 1992

		Rs.			Rs.
To Opening Stock		20,000	By Sales	5,60,000	
To Purchases	4,40,000		Less Returns	<u>4,000</u>	5,56,000
Less Returns	8,000		By Closing Stock		75,000
	<u>4,32,000</u>				
Less Goods lost by fire	20,000				
	<u>4,12,000</u>				
Less Goods taken away by Prashant	8,000	4,04,000			
To Carriage Inward		10,000			
To Wages and Salaries	30,000				
Less Prepaid Wages and Salaries	2,000	28,000			
To Gross Profit c/d		<u>1,69,000</u>			
		<u>6,31,000</u>			<u>6,31,000</u>

To Office Expenses		4,000	By Gross Profit b/d	1,69,000
To Rent	2,200		By Interest on Fixed deposits	3,000
Add Outstanding Rent	200	2,400	(8% on Rs. 50,000 for 9 months)	
To Interest on Loan		1,000	By Sundry Income	4,000
(10% on Rs. 20,000 for 6 months)				
To Printing and Stationery		3,000		
To Travelling Expenses		5,000		
To Insurance Premium	3,000			
Less Prepaid Insurance				
for 4 months	1,000	2,000		
To Commission on Sales		36,000		
To Advertisement		24,000		
To Carriage Outward		6,000		
To Loss by Fire	20,000			
Less claim admitted				
by Insurance co.	15,000	5,000		
To Reserve for Bad Debts:				
Bad Debts	4,000			
Add further bad debts	1,600			
Add New Reserve				
(5% on 64,000)	3,200			
	8,800			
Less Old Reserve	3,000	5,800		
To Depreciation:				
(i) Buildings	11,000			
(ii) Furniture & Fittings	2,000			
(iii) Plant & Machinery	12,000			
(iv) Motor Vans	8,000	33,000		
To Net Profit transferred				
to Profit and Loss App. A/c		48,800		
		1,76,000		1,76,000

#### PROFIT AND LOSS APPROPRIATION ACCOUNT

To Interest on capital:	Rs.	By Net Profit b/d	Rs.
Prashant (6% on Rs. 2,00,000)	12,000		48,800
Sahil (6% on Rs. 1,00,000)	6,000		
To Salary to Sahil			
@ Rs. 650 p.m. for 12 months	7,800		
To Share of Profit:			
Prashant (3/5 of Rs. 23,000)	13,800		
Sahil (2/5 of Rs. 23,000)	9,200		
	48,800		48,800



**Illustration 3**—X और Y एक फर्म में साझेदार हैं जो लाभ-हानि 2 : 1 के अनुपात में बांटते हैं। 1 अप्रैल 1994 को उनकी पूंजी क्रमशः 50000 रु. तथा 40000 रु. थी। वर्ष के दौरान X ने 8000 रु. और Y ने 6000 रु. के आहरण किए। 31 मार्च 1995 को समाप्त वर्ष के लिए फर्म का शुद्ध लाभ 20,000 रु. है जिसे साझेदारों में उनके तय किए गए अनुपात में विभाजित कर दिया गया है। 10 अप्रैल 1995 को ज्ञात हुआ कि निम्नलिखित व्यवहार 31 मार्च 1995 को समाप्त वर्ष के लिए फर्म की पुस्तकों में दर्ज नहीं किए गए थे—

- (i) 6 प्रतिशत वार्षिक दर से पूंजी पर ब्याज।
- (ii) 10 प्रतिशत वार्षिक दर से आहरण पर ब्याज।
- (iii) सम्पूर्ण वर्ष के लिए X 4,000 रु. वेतन के तथा Y 3,000 रु. कमीशन के प्राप्त करने के अधिकारी थे।

10 अप्रैल 1995 को होने वाली एक जर्नल प्रविष्टि बनाइए जो कि उस समय के लाभ-हानि को प्रभावित न करे और साझेदारों की आपसी स्थिति संशोधित कर दे।

X and Y are partners in a firm sharing profits and losses in the ratio of 2 : 1. Their capitals on 1st April 1994 were Rs. 50,000 and Rs. 40,000 respectively. During the year, the drawings of the partners are : X Rs. 8,000 and Y Rs. 6,000. The net profit of the firm for the year ended 31st March 1995 is Rs. 20,000 which has been duly distributed between the partners in their agreed ratio. It is discovered on 10th April 1995 that the undermentioned transactions were not passed through the books of accounts of the firm for the year ended 31st March 1995:

- (i) Interest on capital @ Rs. 6% p.a.
- (ii) Interest on drawings @ Rs. 10% p.a.
- (iii) X was entitled to a salary of Rs. 4,000 and Y, a commission of Rs. 3,000 for the whole year.

You are required to suggest a single journal entry to be made on 10th April, 1995 which will not affect the Profit and Loss Account on that time and will also rectify the position of the partners.

**Solution:**

TABLE SHOWING ADJUSTMENT

Particulars		X Rs.	Y Rs.	Firm Rs.
Interest on Capitals (Cr.)		3,000	2,400	
Salary to X (Cr.)		4,000	—	
Commission to Y (Cr.)		—	3,000	
	(Cr.)	7,000	5,400	
Less: Interest on drawings (Dr.)		400	300	
	(Cr.)	6,600	5,100	11,700
Rs. 11,700 is the loss to the firm due to adjustments which will be divided in the ration of 2 : 1 (Dr.)		7,800	3,900	(Loss)
Net effect to be debited or credited in capital a/cs (Cr.—Dr.)		(Dr.) 1,200	(Cr. 1,200)	

**JOURNAL ENTRY**

1995			Rs.	Rs.
April 10	X's Capital A/c	...Dr.	1,200	
	To Y's Capital A/c			1,200
	(For adjustment in respect of interest on capital, drawings, salary and commission omitted in previous year's accounts)			

**Working Notes:**

## 1. Interest on Capitals:

For X, Rs. 50,000  $\times \frac{6}{100} \times 1 =$  Rs. 3,000; For Y, Rs. 40,000  $\times \frac{6}{100} \times 1 =$  Rs. 2,400

## 2. Interest of Drawings: (Dates of drawings are not given)

For X, Rs. 8,000  $\times \frac{10}{100} \times \frac{6}{12} =$  Rs. 400; For Y, Rs. 6,000  $\times \frac{10}{100} \times \frac{6}{12} =$  Rs. 300

**Fixed and Fluctuating Capital**

प्रत्येक साझेदार के लिए एक अलग से पूंजी खाता बनाया जाता है और उस साझेदार द्वारा लगाई गई पूंजी, उसके द्वारा किए गए आहरण, वेतन, पूंजी पर ब्याज, उसके हिस्से का लाभ आदि को उसके पूंजी खाते में हस्तांतरित कर दिया जात है।

पूंजी खाते दो प्रकार से बनाए जा सकते हैं—

1. स्थायी पूंजी खाते (Fixed Capital Accounts)
2. अस्थायी अथवा परिवर्तनशील अथवा चल पूंजी खाते (Fluctuating Capital Account)

**1. स्थायी पूंजी खाते (Fixed Capital Accounts)**—जब साझेदार यह निश्चित कर लेते हैं कि उनकी पूंजियों में कोई परिवर्तन नहीं किया जाएगा तो ऐसी दशा में उनके पूंजी खाते स्थायी कहलाते हैं। जब यह विधि अपनाई जाती है तो प्रत्येक साझेदार के लिए यह एक चालू खाता (Current Account) और खोला जाता है जिसमें उसके द्वारा किए गए आहरण तथा आहरण पर ब्याज को डेबिट किया जाता है तथा पूंजी पर ब्याज, वेतन, कमीशन और लाभ के हिस्से को क्रेडिट किया जाता है।

इस प्रकार, पूंजियों के स्थाई होने की दशा में निम्न दो खाते अलग-अलग प्रकार से तैयार किए जाते हैं—

**PROFORMA OF CAPITAL ACCOUNTS (WHEN THE CAPITALS ARE FIXED)**

<i>Particulars</i>	<i>A</i>	<i>B</i>	<i>C</i>	<i>Particulars</i>	<i>A</i>	<i>B</i>	<i>C</i>
	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Balance c/d				By Balance b/d			
				By Cash (additional Capital)			

**CURRENT ACCOUNTS**

<i>Particulars</i>	<i>A</i>	<i>B</i>	<i>C</i>	<i>Particulars</i>	<i>A</i>	<i>B</i>	<i>C</i>
	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Drawings				By Balance b/d*			
To Interest on Drawings				By Interest on Capital			
To P & L A/c (share of loss, in case of loss)				By Salary			
				By Commission			
To Balance c/d*				By P & L A/c (share of profit, in case of profit)			

\* The balances may be on the opposite side also.

**2. अस्थायी पूंजी खाते (Fluctuating Capital Accounts)**—जब साझेदारों की पूंजी स्थिर नहीं हैं तो ऐसी दशा में

चालू खाते नहीं खोले जाते और चालू खातों में लिखे जाने वाले समस्त लेन-देनों को पूंजी खाते में ही लिख देते हैं।

PROFORMA OF CAPITAL ACCOUNTS (WHEN THE CAPITALS ARE FLUCTUATING)

Particulars	A	B	C	Particulars	A	B	C
	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Drawings				By Balance b/d			
To Interest on Drawings				By Cash (additional Capital)			
To P & L A/c (share of loss, in case of loss)				By Interest on capital			
To Balance c/d				By Salary			
				By Commission			
				By P & L A/c (share of profit, in case of profit)			

**Illustration 4**—On 1st January, 1984 X and Y entered into partnership contributing Rs. 50,000 and Rs. 40,000 respectively and sharing profits in the ratio of 3 : 2. Y is to be allowed a salary of Rs. 200 per month. Interest is to be allowed on capital and charged on drawings at 10% p.a. During the year, X with drew Rs. 400 per month at the beginning of every month; whereas Y withdrew Rs. 400 per month at the end of every month. The profit in 1984 before making of the above adjustments was Rs. 25,000. Show how the profit will be distributed. Also show the Capital A/cs (a) if they are fixed (b) if they are fluctuating.

**उदाहरण 3**—1 जनवरी, 1984 को X तथा Y ने क्रमशः 50,000 रुपए तथा 40,000 रुपए लगाकर साझेदारी आरम्भ की और 3 : 2 के अनुपात में लाभ-विभाजन करना तय किया। Y को 200 रुपए प्रति माह वेतन दिया जाना है। पूंजी एवं आहरण पर 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से ब्याज दिया तथा लगाया जाता है। वर्ष के दौरान X ने 400 रु. प्रतिमाह प्रत्येक महीने के प्रारम्भ में आहरण किया जबकि Y ने 400 रु. प्रतिमाह प्रत्येक महीने के अन्त में आहरण किए। उपयुक्त समायोजनों के करने से पूर्व 1984 में 25000 रुपए का लाभ था। दिखलाइए लाभ किस प्रकार विभाजित किया जाएगा। पूंजी खाते भी दिखलाइए। (a) यदि वे स्थिर हों (b) यदि वे परिवर्तनशील हों।

**Solution:**

Dr.				PROFIT AND LOSS APPROPRIATION ACCOUNT				Cr.	
To Interest on Capital:	Rs.			By Balance b/d (Profit)			Rs.	25,000	
X	5,000			By Interest on Drawings:	Rs.				
Y	4,000			X	260				
			9,000	Y	220				
To Salary (Y)			2,400					480	
To Capital/Current A/cs:									
X	8,448								
Y	5,632								
			14,080						
			25,480					25,480	

(a) When Capital Accounts are fixed:

Dr.				CAPITAL ACCOUNTS				Cr.	
To Balance c/d	X	Y		By Cash A/c	X	Y			
	Rs.	Rs.			Rs.	Rs.			
	50,000	40,000			50,000	40,000			
	50,400	40,000			50,000	40,000			

Dr.

## CURRENT ACCOUNTS

Cr.

	X	Y		X	Y
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Drawings A/c	3,600	3,600	By Salary A/c	—	2,400
To Interest on Drawings A/c	260	220	By Interest on Capital A/c	5,000	4,000
To Balance c/d .	9,588	8,212	By P & L Appropriation A/c	8,448	5,632
	13,448	12,032		13,448	12,032

(b) When Capital Accounts are fluctuating:

Dr.

## CAPITAL ACCOUNTS

Cr.

	X	Y		X	Y
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Drawings A/c	3,600	3,600	By Cash A/c	50,000	40,000
To Interest on Drawings A/c	260	220	By Salary A/c	—	2,400
To Balance c/d	59,588	48,212	By Interest on Capital A/c	5,000	4,000
	63,448	52,032	By P & L Appropriation A/c	8,448	5,632
	63,448	52,032		63,448	52,032

## Calculation of Interest on Drawings:

## Interest on X's Drawings:

Date of withdrawals	Amount	Months	Products
1984	Rs.		Rs.
1st January	400	12	4,800
1st February	400	11	4,400
1st March	400	10	4,000
1st April	400	9	3,600
1st May	400	8	3,200
1st June	400	7	2,800
1st July	400	6	2,400
1st August	400	5	2,000
1st September	400	4	1,600
1st October	400	3	1,200
1st November	400	2	800
1st December	400	1	400
Total	4,800		31,200

$$\text{Interest on Drawings} = 31,200 \times \frac{10}{100} \times \frac{1}{12}$$

$$= \text{Rs. } 260$$

Alternate Method (By Computing for  $6\frac{1}{2}$  months):

$$4,800 \times \frac{13}{2} \times \frac{1}{12} \times \frac{10}{100} = \text{Rs. } 260$$

**Interest on Y's Drawings:**

<i>Date of withdrawals</i> 1984	<i>Amount</i> Rs.	<i>Months</i>	<i>Products</i> Rs.
31st January	400	11	4,400
28th February	400	10	4,000
31st March	400	9	3,600
30th April	400	8	3,200
31st May	400	7	2,800
30th June	400	6	2,400
31st July	400	5	2,000
31st August	400	4	1,600
30th September	400	3	1,200
31st October	400	2	800
30th November	400	1	400
31st December	400	0	0
<b>Total</b>	<b>4,800</b>		<b>26,400</b>

$$\text{Interest on Drawings} = 26,400 \times \frac{10}{100} \times \frac{1}{12}$$

$$= \text{Rs. 220}$$

Alternate Method (By computing for 5½ months)

$$4,800 \times \frac{11}{12} \times \frac{1}{2} \times \frac{10}{100} = \text{Rs. 220}$$

## ख्याति (Goodwill)

वास्तव में जिस समय कोई व्यापार अथवा उद्योग शुरु किया जाता है, उसकी कोई ख्याति नहीं होती है। बहुत कम लोग परिचित होते हैं। किन्तु धीरे-धीरे जैसे ही समय बीतता है, अधिक-से-अधिक लोग सम्पर्क में आते हैं और उसके स्थायी ग्राहकों की संख्या बढ़ती ही जाती है। इस प्रकार कुछ समय बाद उस व्यापार अथवा उद्योग की काफी प्रसिद्धि हो जाती है। इस प्रसिद्धि को 'साख' अथवा 'ख्याति' कहते हैं। अपनी साख के कारण व्यापार सदैव अपने पुराने ग्राहकों को सुरक्षित रख सकता है और नए ग्राहक आकर्षित कर सकता है।

**ख्याति का अर्थ (Meaning of Goodwill)**—ख्याति एक अमूर्त सम्पत्ति (Intangible Asset) है जिसे देखा एवं छुआ नहीं जा सकता। परन्तु इसे महसूस किया जा सकता है। अन्य सम्पत्तियों की तरह इसका भी एक मूल्य होता है तथा इसका क्रय विक्रय हो सकता है, अर्थात् ख्याति एक कृत्रिम सम्पत्ति (Fictitious Assets) है। अतः ख्याति एक ऐसी प्रसिद्धि होती है जो फर्म के स्वामियों द्वारा भूतकाल में की गई मेहनत, ग्राहकों को प्रदान की गई सेवाओं, उनके साथ व्यवहार में ईमानदारी आदि के कारण प्राप्त होती है। यह वर्तमान में व्यापारी को उसी प्रकार के अन्य समान व्यापारों की तुलना में अधिक लाभ कमाने योग्य बना देती है। ख्याति को साख (Credit) के नाम से भी पुकारा जाता है।

**ख्याति की परिभाषाएं Definitions of Goodwill**—'ख्याति' शब्द की व्याख्या करना सरल है परन्तु एक निश्चित परिभाषा देना कठिन है। विभिन्न विद्वानों ने ख्याति को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया है—

लॉर्डे इल्डन के शब्दों में, "ख्याति इस सम्भावना के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है कि पुराने ग्राहक पुराने स्थान पर आएंगे।"  
प्रो. डिक्सी के शब्दों में, "एक व्यक्ति ख्याति का मूल्य इसलिए देता है क्योंकि इसके देने से वह इस स्थिति में आ जाता है कि वह इतनी मुद्रा अर्जित कर सके जितनी वह अपने स्वयं के प्रयत्नों से, बिना ऐसी सहायता के मुद्रा अर्जित नहीं कर सकता।"<sup>3</sup>

लॉर्ड मैकनाटन के अनुसार, "ख्याति एक व्यवसाय के अच्छे नाम, यश तथा सम्बन्ध का लाभ है। यह एक आकर्षक शक्ति है जो ग्राहक को व्यवसाय की ओर आकर्षित करती है। यह एक ऐसी वस्तु है जो एक पुराने स्थापित व्यवसाय को एक नए प्रारम्भिक स्थिति वाले व्यवसाय से भिन्न करती है।"<sup>4</sup>

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि ख्याति संस्था की ऐसी प्रसिद्धि होती है जिसके कारण ग्राहक सदैव संस्था की ओर आकर्षित होते रहते हैं जिसके फलनस्वरूप संस्था अधिक लाभ अर्जित करती है। एक संस्था में ख्याति जिन कारणों से उत्पन्न हो । उन्हें ख्याति के मूल्य को प्रभावित करने वाले घटक कहते हैं।

## ख्याति के मूल्य को प्रभावित करने वाले घटक (Factors Affecting the Value of Goodwill)

OR

### ख्याति की उत्पत्ति

#### (Origin of Goodwill)

एक संस्था में जिन कारणों से ख्याति उत्पन्न होती है उन्हें ख्याति को प्रभावित करने वाले घटक कहते हैं। जो निम्नलिखित हैं।

- 1. व्यवसाय का स्थान (Location of Business)**—यदि व्यवसाय किसी सुविधाजनक या प्रमुख व्यापारिक केन्द्र पर स्थापित है तो वहां पर ग्राहक अधिक पहुंचते हैं जिससे अधिक बिक्री होती है और लाभ की मात्रा भी बढ़ जाती है। अतः ऐसे व्यवसाय की ख्याति अधिक होगी।
- 2. बाजार स्थिति (Market Situation)**—यदि व्यवसाय के उत्पाद का बाजार में एकाधिकार (Monopoly) है तो उस व्यवसाय की ख्याति का मूल्य अधिक होगा।
- 3. व्यवसाय का प्रबन्ध (Management of Business)**—यदि व्यवसाय का प्रबन्ध योग्य अनुभवी एवं दूरदर्शी व्यक्तियों के हाथ में है तो वे अधिक उत्पादन तथा कम लागत के सिद्धान्त का लाभ उठाते हैं। इससे व्यवसाय में लाभ अधिक होंगे और व्यवसाय की ख्याति भी अधिक होगी।
- 4. विशेष प्रोत्साहन (Special Incentives)**—यदि व्यवसाय को लाइसेंस, कच्चे माल की पूर्ति का आश्वासन पेटेन्ट, ट्रेडमार्क, कापीराइट, बिजली की सप्लाय का आश्वासन आदि के विशेष लाभ प्राप्त हों तो उस व्यवसाय की ख्याति का मूल्य भी अधिक होगा।
- 5. जोखिम की मात्रा**—व्यवसाय में जोखिम की मात्रा जितनी अधिक होगी, ख्याति का मूल्य उतना ही कम होगा।
- 6. लाभों की प्रवृत्ति**—यदि किसी व्यवसाय में पिछले वर्षों में लाभ लगातार बढ़ रहे हैं तो उसकी ख्याति अधिक होगी परन्तु यदि लाभ अस्थिर प्रवृत्ति के हैं तो ख्याति का मूल्य कम होगा।

#### ख्याति का मूल्यांकन करने की विधियां (Methods of Valuation of Goodwill)

ख्याति एक अदृश्य सम्पत्ति है। अतः इसके उचित मूल्य की गणना करना एक कठिन कार्य है। ख्याति का मूल्यांकन किस विधि से किया जाएगा इसका उल्लेख प्रायः साझेदारी संलेख में कर दिया जाता है। ख्याति के मूल्यांकन करने की निम्नलिखित प्रमुख विधियां हैं—

1. औसत लाभ विधि (Average Profit Method)
2. अधि-लाभ विधि (Super Profit Method)
3. अधि-लाभ पूंजीकरण विधि (Capitalisation of Super Profit Method)

**1. औसत लाभ विधि (Average Profit Method)**—इस विधि के अनुसार गत कुछ वर्षों के लाभों (हानि सहित) का औसत लाभ ज्ञात किया जाता है जिसके लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया जा सकता है

$$\text{Average Profit} = \frac{\text{Total Profit}}{\text{No. of Years}}$$

उक्त औसत लाभ को एक निश्चित संख्या (जैसे दो वर्षों के क्रय के बराबर या तीन वर्षों के क्रय के बराबर आदि) से गुणा करके ख्याति का मूल्य निर्धारित किया जाता है। अतः

$$\text{Valuation of Goodwill} = \text{Average Profits} \times \text{No. of Years Purchased.}$$

OR

ख्याति के मूल्य की गणना हेतु सूत्र—

$$\text{Valuation of Goodwill} = \frac{\text{Total Profits}}{\text{No. of Years}} \times \text{No. of Years Purchased.}$$

एक साझेदारी समझौते के अनुसार ख्याति का मूल्यांकन फर्म के पिछले पांच वर्षों के लाभ के तिगुने के बराबर होगा। गत पांच वर्षों के लाभ इस प्रकार हैं—15,000 रु., 12,000 रु., 18,000 रु., 20,000 रु., व 25,000 रु.। ख्याति का मूल्य ज्ञात कीजिए।

According to a partnership agreement Goodwill is to be valued at 3 years' purchase of the average profit of the last 5 years. The profits of the last five years are Rs. 15,000; Rs. 12,000; Rs. 18,000; Rs. 20,000; Rs. 25,000. Calculate the value of Goodwill.

**Solution:**

$$(i) \text{ Calculation of Average Profits} = \frac{\text{Total Profits}}{\text{No. of Years}} = \frac{90,000}{5} = \text{Rs. } 18,000.$$

$$\text{Total Profits} = \text{Rs. } 15,000 + \text{Rs. } 12,000 + \text{Rs. } 18,000 + \text{Rs. } 20,000 + \text{Rs. } 25,000 = \text{Rs. } 90,000$$

$$(ii) \text{ Valuation of Goodwill} = \text{Average profit} \times \text{No. of years purchased} \\ = \text{Rs. } 18,000 \times 3 = \text{Rs. } 54,000.$$

**औसत लाभ की गणना करते समय ध्यान रखने योग्य बातें—**

1. वर्ष की असाधारण हानि जैसे आग लग जाने या चोरी होने से हानि को संबंधित वर्ष का आय में जाड़ देना चाहिए।
2. वर्ष की असाधारण आय जैसे सट्टे या लाटरी से आय को संबंधित वर्ष की आय में से घटा देना चाहिए।
3. वर्ष का सामान्य व्यय जो लाभों में से नहीं घटाया गया है तो ऐसे व्यय को संबंधित वर्ष की आय में से घटा देना चाहिए।
4. वर्ष का सामान्य लाभ जो लाभों में नहीं जोड़ा गया है तो ऐसे लाभ को संबंधित वर्ष की आय में जोड़ देना चाहिए।
5. विनियोगों की आय को संबंधित वर्ष की आय में से घटा देना चाहिए क्योंकि यह आय व्यवसाय की सामान्य व्यावसायिक क्रिया से संबंधित आय नहीं है।
6. व्यापार के स्वामी का पारिश्रमिक संबंधित वर्ष की आय में से घटा देना चाहिए।

**2. अधिलाभ विधि (Super Profit Method)—**इस विधि में दो या अनेक फर्मों के प्राप्त सामान्य लाभ (Normal Profits) का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। यदि कोई फर्म उसी प्रकार की अन्य फर्मों के सामान्य लाभ से अधिक लाभ पैदा कर रही है तो इस अधिक लाभ को अधिलाभ (Super Profit) कहते हैं। 'अ' अपने नए व्यापार में लगाई गई पूंजी पर 10 प्रतिशत लाभ कमाता है, 'ब' की एक पुरानी फर्म में 1,00,000 रु. की पूंजी लगी हुई है, और यह पुरानी फर्म 10,000 रु. अर्थात् 10 प्रतिशत लाभ कमाती है तो इसकी ख्याति कुछ नहीं होगी क्योंकि इस दशा में एक नई फर्म भी उतना कमा लेती है जितना पुरानी फर्म। परन्तु यदि पुरानी फर्म 10,000 रुपए से अधिक लाभ कमाए तो उसकी ख्याति होगी और ख्याति की रकम उसके अतिरिक्त लाभ पर आधारित होगी। यदि उस फर्म का वास्तविक

लाभ 18,000 रु. है तो उसकी ख्याति 8,000 रु. (18,000 – 10,000) को एक निश्चित संख्या जैसे—3, 4, 5 (जो निश्चित हो जाए) गुणा करके मालूम की जाएगी। इसी प्रकार का व्यापार करने वाली एक फर्म जो लाभ कमाती है उसे साधारण लाभ (Normal Profit) कहते हैं और वह निम्न प्रकार ज्ञात किया जाता है—

$$\frac{\text{Capital employed} \times \text{Rate of profit generally earned}}{100}$$

यदि वास्तव लाभ साधारण लाभ से अधिक है तो दोनों का अन्तर अधि-लाभ होगा। ख्याति की रकम अतिरिक्त लाभ होगी। ख्याति की रकम अतिरिक्त लाभ की एक निश्चित संख्या से गुणा करके निकाली जा सकती है।

$$\text{Super Profit} = \text{Actual Profit} - \text{Normal Profit}$$

$$\text{Goodwill} = \text{Super Profit} \times \text{No. of years Purchase}$$

**Illustration 5**—A Firm earned net profit during the last four years as follows:

	Rs.
1st year	2,00,000
2nd year	2,20,000
3rd year	2,80,000
4th year	3,40,000

The capital investment of the firm is Rs. 12,00,000. A fair return on the capital having regard to the risk involved is 10%. Calculate the value of goodwill on the basis of 3 years' purchases of average super profits earned during the above mentioned four years.

फर्म की विनियोजित पूंजी 12,00,000 रु. है। जोखिम को ध्यान में रखते हुए पूंजी पर उचित प्रतिफल की दर 10% है। उपरोक्त अवधि से प्राप्त औसत अधिलाभों के आधार पर तीन वर्ष के क्रय से ख्याति का मूल्य ज्ञात कीजिए।

**Solution.** (i) Average expected profit:

$$\begin{aligned} \text{Total profit for 4 years} \\ &= \text{Rs. } 2,00,000 + \text{Rs. } 2,20,000 + \text{Rs. } 2,80,000 + \text{Rs. } 3,40,000 \\ &= \text{Rs. } 10,40,000 \end{aligned}$$

$$\text{Average Profit} = \frac{\text{Rs. } 10,40,000}{4} = \text{Rs. } 2,60,000$$

$$(ii) \text{ Normal Profit : } 12,00,000 \times \frac{10}{100} = \text{Rs. } 1,20,000$$

(iii) Super Profit :

$$\begin{aligned} &= \text{Average expected profit} - \text{Normal profit} \\ &= \text{Rs. } 2,60,000 - \text{Rs. } 1,20,000 = \text{Rs. } 1,40,000 \end{aligned}$$

$$\begin{aligned} (iv) \text{ Goodwill} &= \text{Super profit} \times \text{No. of years purchased} \\ &= \text{Rs. } 1,40,000 \times 3 = 4,20,000 \end{aligned}$$

**3. पूंजीकरण विधि (Capitalisation Method)**—इस विधि में पहले कुछ वर्षों का औसत लाभ ज्ञात कर लिया जाता है। यह भी अनुमान लगाते हैं कि समान व्यवसायों में प्रतिफल की क्या दर (Rate of Return) है, इन दोनों राशियों का अंतर फर्म के अतिरिक्त लाभ को प्रदर्शित करता है। इस अतिरिक्त लाभ का सामान्य प्रतिफल की दर से पूंजीकृत मूल्य ही ख्याति का मूल्य होता है। इस विधि के अन्तर्गत निम्न सूत्र ख्याति का मूल्य निकाला जाता है।

$$\text{Goodwill} = \frac{\text{Super Profit} \times 100\%}{\text{Normal Rate of Return}}$$

एक फर्म का औसत लाभ 1,00,000 रु. है तथा फर्म की कुल विनियोजित पूंजी 7,50,000 रु. है तथा इसी प्रकार की अन्य फर्म औसत रूप से 10 प्रतिशत लाभ अर्जित करती है। ख्याति (Goodwill) की गणना कीजिए।

**Solution—** Super Profit = Actual – Normal Profit

$$25,000 = 1,00,000 - 75,000$$

$$\begin{aligned} \text{Goodwill} &= \frac{\text{Super Profit} \times 100\%}{\text{Normal Rate of Return}} \\ &= \frac{25,000 \times 100}{10} = \text{Rs. } 2,50,000. \end{aligned}$$

$$\begin{aligned} \therefore \text{Normal Profit} &= \text{Capital Employed} \times \frac{\text{Normal Rate of Return}}{100} \\ &= 750000 \times \frac{10}{100} = 75000 \end{aligned}$$

### संयुक्त जीवन बीमा पालिसी (Joint Life Policy)

मनुष्य की जीवन यात्रा कब समाप्त हो जाएगी इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। उस की अकाल मृत्यु पर साझेदारी व्यवसाय में साझेदारों को बड़े संकट का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे संकट काल में जीवन बीमा एक रामबाण औषधि है। साझेदारी की दशा में फर्म संयुक्त जीवन बीमा पालिसी ले लेती है। अर्थात् दो या दो से अधिक व्यक्ति एक ही बीमा पॉलिसी लेते हैं और उनमें से किसी एक की मृत्यु होने पर बीमा रकम शेष बीमाधारियों को मिल जाती है। फर्म द्वारा संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी लेने के निम्न उद्देश्य हैं।

**1. आर्थिक भार को कम करना—**यदि फर्म को बीमा पॉलिसी का रुपया प्राप्त न हो तो मृत साझी को भुगतान व्यवसाय में से करना पड़ेगा जिससे की पूंजी का एक बड़ा भाग व्यापार से निकल जाएगा और फर्म की आर्थिक दशा पर उसका काफी बुरा असर पड़ेगा।

**2. मृत्यु दर दी जाने वाली राशि का प्रबन्ध—**प्रायः किसी साझेदार की मृत्यु पर उसे दी जाने वाली रकम का प्रबन्ध करना फर्म के लिए एक समस्या बन जाती है। अतः साझेदार फर्म के नाम से एक संयुक्त जीवन बीमा पालिसी ले लेते हैं और किसी भी साझी की मृत्यु पर बीमा पालिसी की रकम बीमा कम्पनी से मिल जाती है। जिससे मृतक साझी के हिस्से का भुगतान कर दिया जाता है।

### लेखांकन व्यवहार (Accounting Treatment)

फर्म की पुस्तकों में संयुक्त बीमा पालिसी सम्बन्धी लेखे करने की निम्न तरीके (Methods) प्रचलित हैं—

1. प्रीमियम को खर्च मानना (Premium as Expenditure)
2. प्रीमियम को विनियोग मानना (Premium as Investment)
3. विभाजन योग्य लाभ में से संचय करना (Reserve out of Divisible Profits)\*

**1. प्रीमियम को खर्च मानना (Premium is considered as Expenditure)—**प्रथम विधि में बीमा प्रीमियम की राशि को व्यापार का खर्च माना जाता है और इसका लेखा निम्न प्रकार किया जाता है—

- (1) बीमा प्रीमियम का भुगतान करने पर—

Insurance Premium A/c	Dr.
To Bank A/c	
(Being insurance premium paid)	

- (2) अन्तिम खाते तैयार करते समय—

Profit and Loss A/c	Dr.
To Insurance Premium A/c	
(Being insurance premium transferred to P & L A/c)	

(3) साझेदारी की मृत्यु पर बीमा पालिसी की रकम मिलने पर—

Bank A/c  
To Joint Life Policy A/c  
(Being the amount of joint life policy received) Dr.

(4) बीमा पालिसी की रकम बांटने पर—

Joint Life Policy A/c  
To Partner's Capital A/c  
(Being the amount of J.L.P. transferred to partner's A/c) Dr.

उपरोक्त विधि पूर्णतः ठीक नहीं है क्योंकि एक तो इस विधि से लाभ को दिखाया जाता है तथा विनियोग को चिट्ठे में उचित मूल्य पर नहीं दिखाया जाता।

2. बीमा प्रीमियम का विनियोग मानना (Premium is considered as Investment)—कुछ साझेदारी संस्थाएं बीमा प्रीमियम को विनियोग मानकर निम्न लेखे करती हैं—

(1) संयुक्त जीवन बीमा पालिसी खाता खोलना—पालिसी की प्रथम किश्त का भुगतान करने पर—

Joint Life Policy A/c  
To Bank A/c  
(Being premium of J. Life Policy paid) Dr.

(2) प्रीमियम में से समर्पण मूल्य घटाने के बाद बचे मूल्य को अपलिखित करने पर—

Profit & Loss A/c  
To Joint Life Policy A/c Dr.

(3) साझेदार की मृत्यु पर पालिसी की रकम मिलने पर—

Bank A/c  
To Joint Life Policy A/c Dr.

(4) संयुक्त पालिसी खाते के शेष (Balance) को साझेदारों में हस्तांतरित करने पर—

Joint Life Policy A/c  
To All Partners Capital A/cs Dr.

उपरोक्त लेखा करने से संयुक्त जीवन बीमा पालिसी खाते को डेबिट शेष होता है और प्रति वर्ष से इसे चिट्ठे में 'सम्पत्ति' की ओर से दिखाया जाता है इस विधि में दोष यह है कि चिट्ठा व्यापार की सही दशा नहीं दिखाता क्योंकि जीवन बीमा पालिसी की जो रकम चिट्ठे में दिखाई जाती है वह उसके समर्पण मूल्य (Surrender Value) से अधिक होती है।

3. विभाजन योग्य लाभ में से संचय करना—यह विधि सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है तथा इस विधि में निम्न लेखे प्रतिवर्ष किए जाते हैं—

(1) बीमा प्रीमियम का भुगतान करने पर—

Joint Life Policy A/c  
To Bank A/c  
(Being Premium paid) Dr.

(2) अन्तिम खाते बनाने पर—

Profit & Loss Appropriation A/c  
To Joint Life Policy Reserve A/c  
(Being amount equal to Premium A/c transferred to Policy Reserve A/c out of divisible profits) Dr.

(3) समर्पण मूल्य से अधिक प्रीमियम को अपलिखित करना—

Joint Life Policy Reserve A/c  
To Joint Life Policy A/c  
(Being the excess of J.L.P. A/c over surrender value written off) Dr.

(4) किसी साझे की मृत्यु होने पर लेखे किए जाते हैं—

1. बीमा पालिसी की रकम प्राप्त होने पर—

Bank A/c

Dr.

To Joint Life Policy A/c

(Being the amount of Joint L. Policy received)

2. संयुक्त बीमा पालिसी संचय का शेष हस्तांतरण करने पर—

Joint Life Policy Reserve A/c

Dr.

To Joint Life Policy A/c

(Being balance of J.L.P. Reserve A/c transferred to J. L. P. A/c)

3. संयुक्त बीमा पालिसी का शेष साझेदारों में बांटने पर—

Joint Life Policy A/c

Dr.

To Partners Capital A/c

(Being the balance of J.L.P. A/c transferred to Partners Cap. A/c)

## साझेदारी फर्म का पुनर्गठन (Reconstitution of Partnership Firm)

किसी साझेदार के व्यवसाय में प्रवेश अधिक पूंजी, तकनीकी ज्ञान अथवा व्यावसायिक प्रबन्ध अथवा फर्म से साझेदार के अवकाश ग्रहण अथवा मृत्यु-मतभेद वृद्धावस्था, अस्वस्थाता के कारण फर्म में उसकी साझेदारी समाप्त हो जाती है तथा शेष साझेदारों के मध्य नई साझेदारी शुरू हो जाती है और वही फर्म चालू रहती है। अतः साझेदार के अवकाश ग्रहण या मृत्यु पर फर्म का पुनर्गठन होता है।

### साझेदार का प्रवेश (Admission of a Partner)

भारतीय साझेदारी अधिनियम की धारा 30 के अनुसार, नया साझेदार तभी बनाया जा सकता है जब समस्त विद्यमान साझेदार प्रवेश के लिए सहमत हों। वह व्यक्ति जो फर्म में प्रवेश करता है उसे नया साझेदार (New Partner) कहते हैं। नए साझेदार का प्रवेश अधिक पूंजी प्राप्त करने हेतु (For procuring more capital), फर्म की प्रगति हेतु (For progress of the firm), प्रतियोगिता को घटाने हेतु (For reducing Competition), तथा अधिक कुश्यालता प्राप्त करने हेतु (For acquiring more ability) किया जाता है।

नए साझेदार को फर्म में प्रवेश के पश्चात निम्नलिखित दो अधिकार प्राप्त होते हैं—

**लाभ-हानि में हिस्सा पाने का अधिकार**—फर्म में प्रवेश के पश्चात नया साझेदार फर्म के लाभों में से एक निश्चित अनुपात में लाभ पाने का अधिकार प्राप्त कर लेता है और इस लाभ के लिए पुराने साझेदारों को या उनमें से एक या एक से अधिक साझेदारों को अपने लाभ के कुछ हिस्से का त्याग करना पड़ता है। इस त्याग से उनके हिस्से कम हो जाते हैं।

**व्यवसाय की सम्पत्ति में हिस्सा**—फर्म में प्रवेश के पश्चात नया साझेदार अपनी पूंजी के बराबर फर्म की सम्पत्तियों में अधिकार प्राप्त कर लेता है। अतः इस अधिकार के बदले वह पूंजी का भाग देता है।

जब कोई नया साझेदार फर्म में प्रवेश करता है तो लेखांकन के दृष्टिकोण से निम्न समस्याएं आती हैं जिनका समाधान करना अत्यन्त जरूरी है।

1. नए लाभ-हानि विभाजन अनुपात की गणना (Calculation of New Profit Sharing Ratio)
2. त्याग अनुपात की गणना (Calculation of Sacrificing Ratio)
3. ख्याति का लेखा करना (Treatment of Goodwill)
4. सम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन (Revaluation of Assets and Liabilities)

5. अवितरित लाभों का विभाजन (Division of Undistributed Profits)
6. साझेदारों की पूंजी का समायोजन (Adjustment of Partner's Capital)

### नए लाभ-हानि विभाजन अनुपात की गणना (Calculation of New Profit Sharing Ratio)

यदि फर्म में किसी नए साझेदार का प्रवेश होता है तो पुराने साझेदारों को या उनमें से एक या एक से अधिक साझेदारों को अपने हिस्से का कुछ भाग, नए साझेदार के हित में त्याग करना पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप पुराने साझेदारों के लाभ-हानि विभाजन के अनुपात में परिवर्तन होता है अर्थात् उनका भाग पहले की अपेक्षा कम हो जाता है। अतः नए लाभ-हानि विभाजन का अनुपात की गणना करने की आवश्यकता पड़ती है।

नए साझेदार के प्रवेश के समय लाभ-हानि विभाजन अनुपात की गणना विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न विधियों द्वारा की जा सकती है जो निम्नलिखित हैं—

**1. जब नए साझेदार का हिस्सा दिया हुआ हो (When only ratio of new partner is given)**—जब प्रश्न में केवल नए साझेदार का अनुपात दिया हुआ होता है और यह स्पष्ट नहीं होता कि नए साझेदार ने अपना हिस्सा पुराने साझेदारों से किन अनुपात में लिया है तो यह मान लिया जाता है कि पुराने साझेदारों के अनुपात में कोई परिवर्तन नहीं होगा और वे पुराने अनुपात में ही लाभ-हानि का विभाजन करते रहेंगे।

**Illustration 6**—आशीष और नमीश 5 : 3 में लाभ बांटते हैं। अमन को  $\frac{1}{4}$  भाग के लिए साझेदार बनाया। नए अनुपात की गणना कीजिए।

Ashish and Namish divide profit in 5 : 3 Aman is admitted for  $\frac{1}{4}$  Share. Calculate New ratio.

**Solution—**

नए लाभ हानि विभाजन अनुपात की गणना—

$$\text{माना, फर्म का कुल भाग} = 1$$

$$\text{अमन को दिया गया भाग} = \frac{1}{4}$$

$$\text{अतः शेष भाग} = 1 - \frac{1}{4} = \frac{3}{4}$$

अब नए साझेदार के प्रवेश से पुराने साझेदार केवल  $\frac{3}{4}$  शेष भाग के स्वामी होंगे जो कि उनके पुराने लाभ-हानि 5 : 3 में बांटा जाएगा। अतः

$$\text{आशीष का भाग} = \frac{3}{4} \text{ का } \frac{5}{8} = \frac{15}{32}$$

$$\text{नमीश का भाग} = \frac{3}{4} \text{ का } \frac{3}{8} = \frac{9}{32}$$

$$\text{अमन का भाग (ज्ञात)} = \frac{1}{4}$$

अतः आशीष, नमीश तथा अमन का नया लाभ-हानि अनुपात क्रमशः निम्न प्रकार होगा—

$$\frac{15}{32} : \frac{9}{32} : \frac{1}{4} = \frac{15:9:8}{32} = 15 : 9 : 8$$

**2. नए साझेदार द्वारा पुराने साझेदारों से एक निश्चित अनुपात में लाभ का हिस्सा प्राप्त करना (When new partner acquires his share of profit from old partners in certain ratio)**—यदि नया साझेदार पुराने साझेदारों

से एक निश्चित अनुपात में लाभ का हिस्सा प्राप्त करता है तो ऐसी दशा में त्याग के हिस्से की गणना करके इसे पुराने साझेदारों के पुराने लाभ-हानि विभाजन में से घटा दिया जाता है। अर्थात्—

$$\text{New share} = \text{old share} - \text{Sacrifice share.}$$

**Example**—एक फर्म में राजेश और महेश दो साझेदार हैं जो 5 : 3 में लाभ-हानि का विभाजन करते हैं। राम को  $\frac{1}{4}$  भाग देकर फर्म में साझेदार बनाया जाता है जिसे राम ने राजेश व महेश से बराबर-बराबर अनुपात में प्राप्त किया। तीनों साझेदारों का नया लाभ-हानि विभाजन अनुपात ज्ञात कीजिए।

Rajesh and Mahesh are two partners in a firm sharing profits and losses in the ratio of 5 : 3 Ram is admitted in the firm as a partner with  $\frac{1}{4}$  th share which he acquires equally from Rajesh and Mahesh. Calculate the new profit sharing ratios of three partners.

**Solution**—

त्याग के हिस्से की गणना—

राम को लाभों में  $\frac{1}{4}$  भाग दिया गया जिसका  $\frac{1}{8}$  ( $\frac{1}{4}$  का  $\frac{1}{2}$ ) उसने राजेश से और  $\frac{1}{8}$  ( $\frac{1}{4}$  का  $\frac{1}{2}$ ) भाग ही महेश से प्राप्त किया है।

नए लाभ-हानि विभाजन अनुपात की गणना—

$$\text{राम को } \frac{1}{8} \text{ भाग देने के बाद राजेश का शेष भाग} = \frac{5}{8} - \frac{1}{8} = \frac{4}{8}$$

$$\text{राम को } \frac{1}{8} \text{ भाग देने के बाद महेश का शेष भाग} = \frac{3}{8} - \frac{1}{8} = \frac{2}{8}$$

$$\text{राम का भाग} = \frac{1}{8} + \frac{1}{8} = \frac{2}{8} \text{ या } \frac{1}{4}$$

अतः राजेश, महेश व राम का नया लाभ-हानि विभाजन अनुपात

$$= \frac{4}{8} : \frac{2}{8} : \frac{2}{8} = \frac{4}{8} : \frac{2}{8} : \frac{2}{8} = 4 : 2 : 2 \text{ या } 2 : 1 : 1$$

**3. जब पुराने साझेदारों के त्याग के हिस्से दिए हुए हों (When the sacrifice share of old partners is given)—**  
जब प्रश्न में पुराने साझेदारों के त्याग के हिस्से दिए हुए हों तो ऐसी दशा में पुराने साझेदारों के पुराने लाभ-हानि विभाजन अनुपात में से ऐसे त्याग (Sacrifice) के हिस्से को घटाकर नए लाभ-हानि विभाजन अनुपात को ज्ञात किया जाएगा।

**Example**—अमित और सुमित 2 : 3 के अनुपात में साझेदार हैं। वे मोहित को फर्म में  $\frac{1}{4}$  भाग के लिए प्रवेश देते हैं वह अमित से  $\frac{4}{20}$  भाग एवं सुमित से  $\frac{1}{20}$  भाग प्राप्त करता है। साझेदारों के नए लाभ-विभाजन अनुपात की गणना कीजिए।

Amit and Sumeet are partners in the ratio of 2 : 3. They admit Mohit for  $\frac{1}{4}$  th share in the firm. He takes  $\frac{4}{20}$  th share from Amit and  $\frac{1}{20}$  th share from Sumeet. Calculate the new profit sharing ratio of partners.

**Solution**—

नए लाभ-हानि विभाजन अनुपात की गणना—

(क) अमित का पुराना हिस्सा  $\frac{2}{5}$  जिसमें से उसने  $\frac{4}{20}$  हिस्सा मोहित को दिया।

$$\text{अतः अमित का नया हिस्सा} = \frac{2}{5} - \frac{4}{20} = \frac{8-4}{20} = \frac{4}{20}$$

(ख) सुमित का पुराना हिस्सा  $\frac{3}{5}$  जिसमें से उसने  $\frac{1}{20}$  हिस्सा मोहित को दिया।

$$\text{अतः सुमित का नया हिस्सा} = \frac{3}{5} - \frac{1}{20} = \frac{12-1}{20} = \frac{11}{20}$$

(ग) अतः मोहित का नया हिस्सा  $= \frac{4}{20} + \frac{1}{20} = \frac{5}{20}$  अथवा  $\frac{1}{4}$

अतः अमित, सुमित तथा मोहित का नया लाभ-हानि अनुपात—

$$\frac{4}{20} : \frac{11}{20} : \frac{1}{4} = \frac{4}{20} : \frac{11}{20} : \frac{5}{20} = 4 : 11 : 5$$

4. नए साझेदारा द्वारा पुराने साझेदारों के हिस्से में से निश्चित हिस्सा प्राप्त करना (When new partner acquires his share of profit from old partners in particular fraction of old partner's share)—यदि पुराने साझेदार अपने हिस्सों का एक निश्चित हिस्सा नए साझेदार को देते हैं तो ऐसी दशा में पहले साझेदारों के त्याग के हिस्से की गणना की जाती है तथा फिर पुराने साझेदारों के पुराने अनुपात में से उसे घटाकर नया अनुपात ज्ञात किया जाता है।

**Example**—ए और बी एक फर्म में बराबर के साझेदार हैं। उन्होंने सी को नया साझेदार बनाया। ए ने अपने हिस्से का  $\frac{1}{4}$  भाग और बी ने अपने हिस्से का  $\frac{1}{3}$  भाग सी को दिया। नए अनुपात की गणना कीजिए।

A and B are equal partners in a firm. They admit C as a partner. A gave  $\frac{1}{4}$  th of his share and B gave  $\frac{1}{3}$  rd of his share to C. Calculate new ratio.

**Solution**—

त्याग के हिस्से की गणना—

(i) ए का पुराना अनुपात  $= \frac{1}{2}$ ; ए ने  $\frac{1}{2}$  का  $\frac{1}{4}$  हिस्सा सी को दिया।

$$\text{अतः} \frac{1}{2} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{8} \text{ (अर्थात् बी ने सी को अपने लाभों में से } \frac{1}{8} \text{ हिस्सा दिया।)}$$

(ii) बी का पुराना अनुपात  $= \frac{1}{2}$ ; बी ने  $\frac{1}{2}$  का  $\frac{1}{3}$  भाग सी को दिया।

$$\text{अतः} \frac{1}{2} \times \frac{1}{3} = \frac{1}{6} \text{ (अर्थात् बी ने सी को अपने लाभों में से } \frac{1}{6} \text{ हिस्सा दिया।)}$$

नए लाभ-हानि विभाजन अनुपात की गणना—

$$(i) \text{ सी को } \frac{1}{8} \text{ हिस्सा देने के बाद ए का नया हिस्सा} = \frac{1}{2} - \frac{1}{8} = \frac{4-1}{8} = \frac{3}{8}$$

$$(ii) \text{ सी को } \frac{1}{6} \text{ हिस्सा देने के बाद ए का नया हिस्सा} = \frac{1}{2} - \frac{1}{6} = \frac{3-1}{6} = \frac{2}{6}$$

$$(iii) \text{ सी का हिस्सा} = \text{एक का त्याग} + \text{बी का त्याग} = \frac{1}{8} + \frac{1}{6} = \frac{3+4}{24} = \frac{7}{24}$$

$$\text{ए, बी और सी के नए अनुपात क्रमशः} \frac{3}{8} : \frac{2}{6} : \frac{7}{24} = \frac{9}{24} : \frac{8}{24} : \frac{7}{24} = 9 : 8 : 7$$

## साझेदार के प्रवेश पर ख्याति का लेखा (Treatment of goodwill at the time of Admission)

ख्याति के मूल्यांकन की विभिन्न विधियों—औसत लाभ विधि, अधिलाभ विधि अथवा पूंजीकरण विधि में से एक विधि द्वारा ख्याति का मूल्यांकन कर साझेदार के प्रवेश पर ख्याति का लेखा निम्न में से एक विधि अपना कर किया जाता है। ख्याति का लेखा करने की मुख्य दो विधियाँ (Methods) हैं—

1. प्रीमियम पद्धति (Premium Method)
2. मेमोरण्डम पद्धति (Memorandum Method)

**1. प्रीमियम पद्धति (Memorandum Method)**—इस पद्धति का प्रयोग उस समय किया जाता है जब नया साझेदार अपने हिस्से की ख्याति अथवा प्रीमियम की राशि नकद लाता है। इस दशा में निम्न तीन प्रकार से लेखा किया जा सकता है—

- (i) यदि ख्याति की राशि निजी रूप से दी जाती है (When the amount of goodwill is paid privately)—यदि नया साझेदार अपने हिस्से की ख्याति की राशि पुराने साझेदारों को निजी रूप में दे देता है तो ऐसी दशा में फर्म की पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं की जाएगी क्योंकि ख्याति की राशि फर्म में नहीं लाई जाती है।
- (ii) यदि ख्याति की राशि को व्यापार में ही रखा जाता है (When the amount of goodwill is retained in the business)—यदि नया साझेदार अपने हिस्से की ख्याति की राशि को फर्म में नकद लाता है और उस राशि को फर्म में ही रखा जाता है तो इस राशि को पुराने साझेदारों के खातों में क्रेडिट कर दिया जाता है। अतः इसके लिए निम्नलिखित दो रोजनामचा प्रविष्टियाँ की जाती हैं—

(a) Cash brought in by new partner for capital and goodwill :

Cash A/c	Dr.
To New Partner's Capital A/c	
(For the amount of goodwill and capital brought in cash)	

(b) On the distribution of amount of goodwill among old partners:

New Partner's Capital A/c	Dr.
To Old Partner's Capital A/cs	
(For the amount of goodwill transferred to old partner's capital a/cs in their sacrificing ratio)	

(iii) यदि ख्याति की राशि पुराने साझेदारों द्वारा निकाल ली जाए (When the amount of goodwill is withdrawn by old partners)—यदि पुराने साझेदार अपने पूंजी खाते में जमा की गई ख्याति का सम्पूर्ण या आंशिक भाग निकाल लेते हैं तो इस दशा में निम्नलिखित तीन रोजनामचा प्रविष्टियाँ की जाती हैं—

(a) Cash A/c	Dr.
To New Partner's Capital A/c	
(For the amount of goodwill and capital brought in cash)	

(b) New Partner's Capital A/c	Dr.
To Old Partner's Capital A/cs	
(For the amount of goodwill transferred to old partner's capital a/c in their sacrificing ratio)	

(c) Old Partners Capital A/c	Dr.
To Cash A/c	
(For the amount of goodwill withdrawn by old partners)	

**Illustration 7**—एक्स और वाई एक फर्म में साझेदार हैं। वे लाभ-हानि 2 : 1 के अनुपात में बांटते हैं। उनकी पूंजी क्रमशः 8,000 रु. तथा 4,000 रु. है उन्होंने जेड का इस शर्त पर साझेदार बनाया कि वह 30,000 रु. ख्याति के लिए और 5,000 रु. पूंजी के लिए लाएगा और फर्म के लाभ में  $\frac{1}{3}$  भाग का अधिकारी होगा। यह मानते हुए कि नया

साझेदार पूंजी और ख्याति की राशि नकद में लाया है, जर्नल के लेखे कीजिए यदि—

- (i) पुराने साझेदारों को ख्याति की राशि व्यक्तिगत रूप से भुगतान कर दी है।
- (ii) पुराने साझेदारों ने ख्याति को फर्म में रहने दिया है।
- (iii) पुराने साझेदारों ने ख्याति को निकाल लिया है।

X and Y are partners in a firm, sharing profits and losses in the ratio of 2 : 1. Their capitals are Rs. 8,000 and Rs. 4,000 respectively. They admit Z into partnership on the conditions that he will bring in Rs. 3,000 as goodwill and Rs. 5,000 as capital and will get  $\frac{1}{3}$ rd share in the profits of the firm. Assuming that the goodwill and capital have been brought in cash by the new partner. Pass the necessary Journal entries when:

- (i) Goodwill is paid privately to old partners;
- (ii) Goodwill is retained in the firm by old partners and
- (iii) Goodwill be withdrawn by old partners.

**Solution:**

- (i) When goodwill is paid privately – No Journal entry is made in the books.
- (ii) When goodwill is retained in the firm –

**JOURNAL**

		Rs.	Rs.
Cash A/c To Z's Capital A/c (For the amount of goodwill and capital brought in cash by Z)	Dr.	8,000	8,000
Z's Capital A/c To X's Capital A/c To Y's Capital A/c (For the amount of goodwill credited to old partner's capital A/cs in their sacrificing ratio 2 : 1)	Dr.	3,000	2,000 1,000

- (iii) When goodwill is withdrawn by old partners:

**JOURNAL**

		Rs.	Rs.
Cash A/c To Z's Capital A/c (For the amount of goodwill and capital brought in cash)	Dr.	8,000	8,000
Z's Capital A/c To X's Capital A/c To Y's Capital A/c (For the amount of goodwill transferred to old partner's capital a/cs in their sacrificing ratio)	Dr.	3,000	2,000 1,000
X's Capital A/c Y's Capital A/c To Cash A/c (For the amount of goodwill withdrawn by old partners)	Dr. Dr.	2,000 1,000	3,000

नोट—प्रश्न में नया अनुपात नहीं दिया हुआ अतः पुराना अनुपात ही त्याग अनुपात होगा।

**2. मेमोरण्डम पद्धति (Memorandum or Revaluation Method)**—यदि नया साझेदार ख्याति की राशि नकद लाने में असमर्थ है तो ऐसी दशा में ख्याति का लेखा करने के लिए मेमोरण्डम विधि का प्रयोग किया जाता है। इस दशा में निम्न दो परस्थितियां हो सकती हैं—

(A) यदि पुस्तकों में ख्याति खाता विद्यमान न हो।

(B) यदि पुस्तकों में ख्याति खाता विद्यमान हो।

(A) यदि पुस्तकों में ख्याति खाता विद्यमान न हो—इस दशा में निम्न प्रकार से प्रविष्टियां की जाती हैं—

(i) **ख्याति खाता खालना (Raising th Goodwill Account)**—यदि नया साझेदार अपने हिस्से की ख्याति की राशि नकद लाने में असमर्थ है तो ऐसी दशा में ख्याति का लेखा करने के लिए ख्याति खाता खोला जात है जिसके लिए निम्न प्रविष्टि की जाती है—

Goodwill A/c

Dr.

To Old Partner's Capital A/cs

(For Goodwill a/c raised at its full value in old ratio)

ऐसा करने से ख्याति खाता ख्याति के कुल मूल्य से डेबिट तथा पूर्व साझेदारों के पूंजी खाते उनके पुराने लाभ-हानि विभाजन अनुपात में क्रेडिट किए जाते हैं इस प्रकार ख्याति फर्म के लिए चिट्ठे में (New Balance Sheet) सम्पत्ति के रूप में दर्शाई जाती है।

(ii) **ख्याति खाता बन्द करना (Writing off the Goodwill Account)**—यदि नई फर्म में समस्त साझेदार नए साझेदार सहित ख्याति खाता पुस्तकों में नहीं दिखाना चाहते तो ऐसी दशा में यह खाता बन्द कर दिया जाता है। इसको बन्द करते समय ख्याति की राशि को नई फर्म के समस्त साझेदारों में उनके नए लाभ-हानि विभाजन अनुपात में बांट दिया जाता है। अतः इसके एि निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है—

All Partners' Capital A/cs

Dr.

To Goodwill A/c

(For goodwill written off in new profit sharing ratio)

**Example 2**—J and K are partners sharing profits and losses in 3 : 2 ratio. They admit R into partnership giving him  $\frac{1}{6}$  share of profit. R brings in Rs. 50,000 as capital. Goodwill of the firm is raised at Rs. 45,000 which is written off immediately. Calculate the new profit sharing ratio and give journal entries to record the above transactions.

**Solution:**

Calculation of new profit-sharing ratio:

Suppose the total profit = 1

$$\text{Share given to R} = \frac{1}{6}$$

$$\text{Remainng Profits (after R's share)} = 1 - \frac{1}{6} = \frac{5}{6}$$

$$\text{J's new share} = \frac{3}{5} \text{ of } \frac{5}{6} = \frac{3}{6}$$

$$\text{K's new share} = \frac{2}{5} \text{ of } \frac{5}{6} = \frac{2}{6}$$

J K R

$$\text{New Ratio } \frac{3}{6} : \frac{2}{6} : \frac{1}{6} \text{ or } 3 : 2 : 1$$

## Firm's Journal

Cash Account To R's Capital Account (Being capital brought in by R)	Rs. Dr.	50,000	50,000
Goodwill Account To J's Capital Account To K's Capital Account (Being goodwill raised on R's admission partner)	Dr.	45,000	27,000 18,000
J's Capital Account K's Capital Account R's Capital Account To Goodwill Account (Being goodwill written off in new ratio)	Dr. Dr. Dr.	22,500 15,000 7,500	45,000

(B) जब ख्याति पहलेसे ही चिट्ठे में दिखाई गई हों (When Goodwill account is already Appears in the Books)—नया साझेदार ख्याति की राशि नकद नहीं लाता तथा ख्याति को पहले ही चिट्ठे में दी गई हो तो विभिन्न परिस्थितियों में ख्याति को निम्न प्रकार दिखाया जाएगा—

- जितनी राशि से ख्याति पुस्तकों में दिखाई गई है उतने ही मूल्य से ख्याति खाता खुलता हो तो ऐसी दशा में ख्याति की कोई प्रविष्टि नहीं की जाएगी। क्योंकि ख्याति के मूल्य में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।
- यदि चिट्ठे में दिखाई गई ख्याति नई ख्याति के मूल्य से कम हो तो ऐसी दशा में ख्याति के मूल्य को बढ़ाना होगा और उसके लिए निम्न प्रविष्टि की जाएगी—

Goodwill A/c

    To Old Partner's Cap. A/c

(Being increase in value of goodwill credited.)

ख्याति की ये बढ़ी हुई राशि पुराने साझेदारों में पुराने अनुपात में बांट दी जायेगी।

- यदि चिट्ठे में दिखाई गई ख्याति की रकम नई ख्याति मूल्य से अधिक है तो अन्तर की राशि से निम्न प्रविष्टि की जायेगी।

Old Partner's Cap. A/c      Dr.

    To Goodwill A/c

(Being Goodwill written off in old Ratio)

ये अन्तर की राशि पुराने अनुपात में पुराने साझियों में डेबिट कर दी जाएगी।

**Example**—राकेश के प्रवेश पर यह सहमति हुई कि मुकेश तथा महेश की फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 24,000 रु. होगा राकेश लाभों में से 1/6 हिस्सा प्राप्त करेगा। पहले मुकेश तथा महेश लाभों को 7 : 5 के अनुपात में बांटते थे राकेश ख्याति की राशि नकद नहीं लाता है। जर्नल प्रविष्टियां कीजिए, जबकि मुकेश तथा महेश की पुस्तकों में—

- ख्याति 24000 रु. दिखाई गई है।
- ख्याति 9600 रु. दिखाई गई है।
- ख्याति 28800 रु. दिखाई गई है।
- पहले से पुस्तकों में कोई ख्याति नहीं दिखाई है।

On the Admission of Rakesh, it was agreed that the goodwill of Mukesh and Mahesh firm should be valued at 24,000. Rakesh is to get 1/6th share of Profits previously Mukesh and Mahesh shared profits in the ration of 7 : 5. Rakesh cannot bring in any cash for goodwill. Give Jurnal entries in the books of

Mukesh and Mahesh when:

- A – Goodwill appears at Rs. 24,000.  
 B – Goodwill appears at Rs. 9,600  
 C – Goodwill appears at Rs. 28,800.  
 D – No Goodwill A/c already appears in the books.

**Solution. (A) No Entry.**

(B) JOURNAL

		Rs.	Rs.
Goodwill A/c	Dr.	14,400	
To Mukesh Capital A/c			8,400
To Mahesh Capital A/c			6,000
(Being goodwill Raised from 9,600 to 24,000)			

(C)

		Rs.	Rs.
Mukesh Capital A/c	Dr.	2,800	
Mahesh Capital A/c	Dr.	2,000	
To Goodwill A/c			4,800
(Being the entry to Record the fall in the value of goodwill from 28,800 to 24,000)			

(D)

		Rs.	Rs.
Goodwill A/c		24,000	
To Mukesh Capital A/c			14,000
To Mahesh Capital A/c			10,000
(Being goodwill Raised at 24,000)			

### लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन (Change in Profit Sharing Ratio)

कभी-कभी साझेदार लाभ-हानि विभाजन अनुपात में परिवर्तन कर लेते हैं। ऐसी दशा में पुस्तकों में ख्याति का मूल्यांकन करके निम्न प्रकार प्रविष्टि की जाती है। इसके लिए दो प्रविष्टियां की जाती हैं।

- (i) **खति खाता खोलना (Raising Goodwill A/c)**—सर्वप्रथम पुस्तकों में ख्याति की पूर्ण राशि से एक ख्याति खाता खोला जाता है। इसके लिए ख्याति खाता डेबिट तथा सभी साझेदारों के पूंजी खाते पुराने लाभ-विभाजन अनुपात में क्रेडिट किए जाते हैं—

Goodwill A/c		Dr.	
To All partners' Capital Accounts			
(For goodwill account raised in old ratio)			

- (ii) **ख्याति खाता बन्द करना (Writting of the Goodwill account)**—अब साझेदारों के नए लाभ-विभाजन अनुपात में ख्याति खाता क्रेडिट कर दिया जाता है साझेदारों के खाते डेबिट कर दिए जाते हैं। जिससे ख्याति खाता बन्द हो जाता है—

All Partner' Capital Accounts		Dr.	
To Goodwill A/c			
(For goodwill written back in the new ratio)			

बिना ख्याति खाता खोले लेखा करना—यदि लाभ-हानि विभाजन अनुपात में परिवर्तन का लेखा बिना ख्याति खाता खोले करना है तो इस दशा में त्याग/लाभ प्राप्ति अनुपात की गणना की जाती है। जिस साझेदार ने त्याग किया है उसके त्याग के हिस्से से उसका पूंजीखाता क्रेडिट तथा जिस साझेदार ने लाभ प्राप्त किया है उसके लाभ प्राप्ति के हिस्से से पूंजी खाता डेबिट किया जाता है। अतः इस दशा में केवल एक प्रविष्टि (Entry) बनाई जाती है।

**Example 3**—एक्स, वाई और जेड लाभों को 3 : 2 : 1 के अनुपात में बांटते हुए साझेदार हैं। उन्होंने भविष्य में लाभों को बराबर-बराबर बांटने का निश्चय किया। ख्याति का मूल्यांकन 6,000 रु. किया गया है। पुस्तकों में ख्याति खाता नहीं है।

X, Y and Z are partner sharing profits in the ratio of 3 : 2 : 1. It is now agreed that they will share the future profits equally. Goodwill of the firm is valued at Rs. 6000. The goodwill of the firm does not appear in the books.

(a) ख्याति खाता खोलना और बन्द करना—

(i)	Goodwill A/c	Dr.	6000	
	To X's Capital A/c			3000
	To Y's Capital A/c			2000
	To Z's Capital A/c			1000
	(For good will account raised in old ratio i.e., 3 : 2 : 1)			
(ii)	X's Capital A/c	Dr.	2,000	
	Y's Capital A/c	Dr.	2,000	
	Z's Capital A/c		2,000	
	To Goodwill A/c			6,000
	(For goodwill written off in new ration)			

(b) बिना ख्याति खाता खोले—

Z's Capital A/c	Dr.	1,000	
To X's Capital			1,000
(Being adjustment of goodwill among partners in their sacrificing/gaining ratio)			
New Ratio — Old ratio			

$$X \frac{1}{3} - \frac{3}{6} = \frac{2-3}{6} = \frac{1}{6} \text{ हिस्से का त्याग}$$

$$Y \frac{1}{3} - \frac{2}{6} = \frac{2-2}{6} = 0$$

$$Z \frac{1}{3} - \frac{1}{6} = \frac{2-1}{6} = \frac{1}{6} \text{ हिस्से की प्राप्ति}$$

### सम्पत्तियों तथा दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन (Revaluation of Assets & Liabilities)

नए साझेदारों को फर्म में प्रवेश के पश्चात व्यवसाय की सम्पत्ति तथा लाभों में हिस्सा पाने का अधिकार प्राप्त हो जाता है नए साझेदार के प्रवेश पर सम्पत्तियों तथा दायित्वों के मूल्य सही होने चाहिए। दूसरे शब्दों में किसी भी स्थाई सम्पत्ति का मूल्य चिट्ठे में दिखाए गए मूल्य से अधिक या कम है तो उसका समायोजन होना चाहिए। इस प्रकार के मूल्य समायोजन का लेखा पुस्तकों में उल्लेख करने के लिए लाभ-हानि समायोजन खाता या मूल्यांकन खाता (Profit and Loss Adjustment Account या Revaluation Account) बनाया जाता है।

पुनर्मूल्यंकन खाता (Revaluation Account)—पुनर्मूल्यांकन खाता एक नाम-मात्र खाता (Nominal Account) होता

हैं जो लाभ-हानि खाते की तरह बनाया जाता है। नाम-मात्र खाते के नियमानुसार हानियों को डेबिट तथा लाभों को क्रेडिट किया जाता है। इसलिए यह खाता सम्पत्तियों के मूल्य के घटने और दायित्वों की राशि में वृद्धि होने वाली हानि की राशियों से डेबिट किया जाता है तथा सम्पत्तियों के मूल्य में वृद्धि और दायित्वों की राशि में कमी से होने वाले लाभों की राशियों से क्रेडिट किया जाता है। यदि पुनर्मूल्यांकन खाते के क्रेडिट पक्ष का योग डेबिट पक्ष से अधिक है तो लाभ होता है और यदि डेबिट पक्ष का योग क्रेडिट पक्ष से अधिक होता है तो हानि होती है। पुनर्मूल्यांकन की लाभ या हानि को पुराने साझेदारों में उनके पुराने लाभ-हानि विभाजन अनुपात में बांट दिया जाता है। अतः पुनर्मूल्यांकन खाता तैयार करने के लिए अग्रलिखित जर्नल की प्रविष्टियां की जाती हैं।

## (1) सम्पत्तियों के मूल्य घटने पर (हानि)–

Revaluation A/c	Dr.
To Assets A/c	
(For decrease in the value of assets)	

## (2) सम्पत्तियों के मूल्य बढ़ने पर (लाभ)–

Assets A/c	Dr.
To Revaluation A/c	
(For increase in the value of assets)	

## (3) दायित्वों की राशि बढ़ने पर (हानि)–

Revaluation A/c	Dr.
Liabilities A/c	
(For the amount of liabilities increased)	

## (4) दायित्वों की राशि घटने पर (लाभ)–

Liabilities A/c	Dr.
To Revaluation A/c	
(For the amount of liabilities decreased)	

## (5) लाभ होने पर–

Revaluation A/c	Dr.
To Old Partner's Capital A/cs	
(For profit on revaluation transferred to old partner's capital a/cs in old ratio)	

## हानि होने पर–

Old Partner's Capital A/cs	Dr.
To Revaluation A/c	
(For loss on revaluation transferred to old Partner's capital a/cs in old ratio)	

PROFORMA OF REVALUATION ACCOUNT  
OR  
PROFIT & LOSS ADJUSTMENT ACCOUNT

Dr.

Cr.

To Asset (By Name) (Decrease in value)		By Asset (By Name) (Increase in value)	
To Liabilities (By Name) (Increase in value)		By Liabilities (By Name) (Decrease in value)	
To Capital A/c (if Profit)		By Capital A/c (if Loss)	

संचित लाभों और संचय का समायोजन (Adjustment of Accumulated Profit & Reserve)—यदि चिट्ठे में कोई संचय (Reverse) या लाभ-हानि खाते का शेष दिया हो उसे पुराने साझेदारों में पुराने लाभ-हानि अनुपात में बांट देना चाहिए। इसके लिए निम्न प्रविष्टि की जाती है।

(i) Geeneral Reserve A/c  
P & L A/c  
To old Partners  
(Being Reserve & Cr)  
Balance of P & L Credited  
to old partner's capital A/c

(ii) Old Partners capital  
To P & L a/c  
  
(Being P & L (Dr Balance) transfered  
to old Partners capital a/c).

### साझेदारों की पूंजी का समायोजन (Adjustment of Partner's Capital)

नए साझेदार के प्रवेश पर साझेदारों में ऐसा ठहराव भी हो सकता है कि भविष्य में सभी साझेदारों की पूंजी उनके नए लाभ-हानि विभाजन अनुपात में होनी चाहिए। ऐसी दशा में पुराने साझेदारों की पूंजी या नए साझेदार की पूंजी को आधार मानकर साझेदारों की पूंजी में आवश्यक समायोजन किया जाता है।

1. पुराने साझेदारों की पूंजी को आधार मानना—यदि प्रश्न में यह नहीं दिया होता है कि नया साझेदार कितनी पूंजी लाएगा तो इस दशा में पुराने साझेदारों की पूंजी को आधार मानकर नए साझेदार के हिस्से की पूंजी ज्ञात की जाती है। अतः नए साझेदार को लाभों में जितना हिस्सा मिलता है वह उसी के अनुपात में पूंजी लाता है। पूंजी की गणना समायोजनाओं के बाद की जाती है।

2. नए साझेदारों की पूंजी को आधार मानना—यदि प्रश्न में यह दिया होता है कि नया साझेदार इतनी पूंजी लाएगा तो इस दशा में नए साझेदार की पूंजी को आधार मानकर पुराने साझेदारों के हिस्से की पूंजी ज्ञात की जाती है। सर्वप्रथम नए साझेदार के हिस्से की पूंजी के आधार पर फर्म की कुल पूंजी मालूम की जाती है और तत्पश्चात् इस कुल पूंजी को समस्त साझेदारों में उनके नए लाभ-हानि विभाजन अनुपात में बांट दिया जाता है। यदि किसी साझेदार की वर्तमान पूंजी ज्ञात की गई उनकी नई पूंजी से अधिक है तो उसे नकद भुगतान कर दिया जाता है और कम है तो उससे नकदी मंगाई जाती है या चालू खाते में हस्तांतरित कर दी जाती है। अतः पूंजी का समायोजन निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है—

(i) नकदी मंगाकर या भुगतान करके, या (ii) चालू खाते में हस्तांतरित करके।

उक्त दशा में पूंजी के समायोजन के लिए निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है—

(a) यदि पुराने साझेदार की पूंजी कम है—नकदी लाएगा—

Cash/Bank A/c	.....Dr.	.....
To Partner's Capital A/c		.....

या चालू खाते में हस्तान्तरित करके—

Partners' Current A/cs	.....Dr.	.....
To Partner's Capital A/c		.....

(b) यदि पुराने साझेदार की पूंजी अधिक है—नकदी ले जाएगा—

Partner's Capital A/c	.....Dr.	.....
To Cash/Bank A/c		.....

या चालू खाते में हस्तान्तरित करके—

Partner's Capital A/c	.....Dr.	.....
To Partner's Current A/c		.....

**Illustration 8**—The following was the Balance Sheet of Anurag and Bhawna, who were sharing profits in the ratio of 2/3 and 1/3 on 31st December, 1988:

	Rs.		Rs.
Creditors	65,900	Cash	1,200
Capitals:		Sundry Debtors	9,700
Anurag	30,000	Stock	20,000
Bhawna	20,000	Plant & Machinery	35,000
		Building	50,000
	<u>1,15,900</u>		<u>1,15,900</u>

निम्न शर्तों पर उन्होंने मौनिका को साझेदार बनाने का निर्णय किया।

- मोनिका को लाभ का 1/3 हिस्सा मिलेगा और उसे 15,000 रु. पूंजी और 6,000 रु. ख्याति के लाने होंगे।
- स्टॉक, प्लान्ट एवं मशीनरी का मूल्य 10 प्रतिशत कम किया जाएगा।
- संदिग्ध ऋणों के लिए 5 प्रतिशत का प्रावधान बनाया जाएगा।
- भवन का 20 प्रतिशत अधिक मूल्यांकन होगा।
- 1,400 रु. के विनियोग खाते में लेने हैं (जो चिट्ठे में नहीं दिखाए गए हैं।)
- ख्याति की राशि पुराने साझेदारों द्वारा निकाल ली जाएगी।

आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा पुनः मूल्यांकन खात, पूंजी खाते और नई फर्म का आरम्भ का चिट्ठा दिखाइए।

They agreed to admit Monika into partnership on the following terms:

- Monika was to be given 1/3 share in profits, and was to bring Rs. 15,000 as capital and Rs. 6,000 as share of goodwill.
- That the value of stock and plant & machinery were to be reduced by 10%.
- That a provision of 5% was to be created for doubtful debts.
- That the building account was to be appreciated by 20%.
- Investments worth Rs. 1,400 (not mentioned in the Balance Sheet) were to be taken into account.
- That the amount of goodwill was to be withdrawn by the old partners.

Pass necessary journal entries and prepare the Revaluation A/c, Capital Accounts and the Opening Balance Sheet of the new firm.

**Solution:**

### JOURNAL

		Rs.	Rs.
Revaluation A/c	Dr.	5,985	
To Stock A/c			2,000
To Plant & Machinery A/c			3,500
To Provision for Doubtful Debts			485
(For reduction in the value of Assets and provision made for doubtful debts)			
Building A/c	Dr.	10,000	
Investments A/c	Dr.	1,400	
To Revaluation A/c			11,400
(For increase in the value of Building and investments)			
Revaluation A/c	Dr.	5,415	
To Anurag Capital A/c			3,610
To Bhavna's Capital A/c			1,805
(For the transfer of profit on revaluation to the capital accounts of old partners in old ratio)			

Cash A/c	Dr.	21,000	21,000
To Monika Capital A/c			
(For the amount of capital and goodwill brought in cash by Monika)			
Monika's Capital A/c	Dr.	6,000	4,000
To Anurag's Capital A/c			
To Bhawna's Capital A/c			2,000
(For the amount of goodwill credited to old partners in the sacrificing ratio 2:1)			
Anurag's Capital A/c	Dr.	4,000	
Bhawna's Capital A/c	Dr.	2,000	
To Cash A/c			6,000
(For the amount of goodwill withdrawn by old partners)			

## REVALUATION ACCOUNT

To Stock A/c	Rs. 2,000	By Building A/c	Rs. 10,000
To Plant & Machinery	3,500	By Investments A/c	1,400
To Provision for Doubtful debts	485		
To Profit Transferred to Capital Accounts:			
Anurag	3,610		
Bhawna	1,805		
	<u>5,415</u>		
	11,400		<u>11,400</u>

## CAPITAL ACCOUNTS

Particulars	Anurag	Bhawna	Monika	Particulars	Anurag	Bhawna	Monika
	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Anurag's Capital A/c	—	—	4,000	By Balance b/d	30,000	20,000	—
To Bhawna's Capital A/c	—	—	2,000	By Revaluation A/c	3,610	1,805	—
To Cash A/c	4,000	2,000	—	By Cash A/c	—	—	21,000
To Balance c/d	33,610	21,805	15,000	By Monika's Capital A/c	4,000	2,000	—
	<u>37,610</u>	<u>23,805</u>	<u>21,000</u>		<u>37,610</u>	<u>23,805</u>	<u>21,000</u>

## OPENING BALANCE SHEET

Sundry Creditors	Rs. 65,900	Cash in hand	Rs. 16,200 <sup>2</sup>
Capitals:		Sundry Debtors	9,700
Anurag	33,610	Less: Provision	<u>485</u>
Bhawna	21,805	Stock	18,000
Monika	<u>15,000</u>	Investments	1,400
	<u>70,415</u>	Plant & Machinery	31,500
	<u>1,36,315</u>	Building	60,000
			<u>1,36,315</u>

नोट— 1. पुनः मूल्यांकन (Revaluation) का लाभ-हानि हमेशा पुराने साझेदारोंमें पुराने लाभ-हानि विभाजन अनुपात में ही बांटा जाता है।

2. रोकड़ शेष की गणना—	रु.
प्रारम्भिक शेष	1,200
(+) नए साझेदार द्वारा नकद लाई गई ख्याति	6,000
(+) नए साझेदार द्वारा नकद लाई गई पूंजी	15,000
	<u>22,000</u>
(-) पुराने साझेदारों द्वारा नगद निकाली गई ख्याति	6,000
शेष	<u>16,200</u>

**Illustration 9**—अ तथा ब का चिट्ठा, जिनका लाभों में हिस्सा 2 : 1 था, 31 दिसम्बर, 1980 को निम्न है।

The following is the Balance sheet of A & B who were sharing profits in the ratio of 2 : 1 on 31st December, 1980.

Liabilities		Amount	Assets		Amount
Rs.			Rs.		
विविध लेनदार Sundry Creditors		65,900	भवन Building		50,000
सामान्य संचय General Reserve		30,000	संयन्त्र Plant and Machinery		35,000
पूंजी खाते Capital Accounts:			स्टॉक Stock		20,000
अ (A)	30,000		विविध देनदार Sundry Debtors		9,700
ब (B)	20,000		रोकड़ हस्त Cash in hand		1,200
		50,000	बैंक Bank		30,000
		<u>1,45,900</u>			<u>1,45,900</u>

C is admitted into the partnership on the following terms:

1. C was to bring Rs. 15,000 as his share of capital and Rs. 6,000 as goodwill for 1/4 share of profit.
2. The values of Stock and plant & Machinery were to be reduced by 5%.
3. That a reserve was to be created in respect of Sundry Debtors, Rs. 750.
4. That the building was to be appreciated by 10%.
5. That the Goodwill was to be retained in the firm.

Make the Journal Entries and prepare Profit & Loss Adjustment A/c, Capital Accounts and the Balance sheet of new firm.

**Solution—**

**JOURNAL ENTRIES**

Date	Particulars	L.F.	Dr.	Cr.
1.	Cash A/c Dr. To C's Capital A/c To Goodwill A/c (Being Cash and Goodwill is bought by C)		21,000	15,000 6,000
2.	Goodwill A/c Dr. To A's Capital A/c To B's Capital A/c (Being Goodwill is distributed among old partners in old ratio)	6,000		
3.	General Reserve A/c Dr. To A's Capital A/c To B's Capital A/c (Being General Reserves distributed)	30,000		

4.	Profit & Loss Adjustment A/c To Stock A/c To Plant & Machinery To Provision for Bad Debts (Being Stock, Plant & Machinery is reduced and provision on debtors in made)	Dr.	3,500	1,000 1,750 750
5.	Building A/c To Profit & Loss Adjust. A/c (Being value of building appreciated by 10%)	Dr.	5,000	5,000
6.	Profit & Loss Adjustment A/c To A's Capital A/c To B's Capital A/c (Being Profit on Revaluation is distributed among old Partners)	Dr.	1,500	1,000 500

## PROFIT &amp; LOSS ADJUSTMENT (REVALUATION) A/C.

To Stock A/c	Rs. 1,000	By Building A/c	Rs. 5,000
To Plant & Machinery A/c	1,750		
To Provision for Bad-Debts A/c	750		
To A (Profit) 1,000 } B (Profit) 500 }	1,500		
	5,000		5,000

## CAPITAL ACCOUNTS

Particulars	A	B	C	Particulars	A	B	C
	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Balance c/d	55,000	32,500	15,000	By balance b/d	30,000	20,000	—
				By Reserve	20,000	10,000	—
				By P & L Adj. A/c	1,000	500	—
				By Goodwill A/c	4,000	2,000	—
				By Cash	—	—	15,000
	55,000	500	15,000		55,000	32,500	15,000

## BALANCE SHEET OF NEW FIRM

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Capital	65,900	Building	55,000
		Plant & Machinery	33,500
	55,000	Stock	19,000
	32,500	S. Debt	9,750
	15,000	Less: Provision	750
		Cash in hand	1,200
		Bank Balance	51,000
	168,400		168,400

## साझेदार का अवकाश ग्रहण या मृत्यु (Retirement or Death of a Partner)

**अर्थ (Meaning)**—साझेदार का अवकाश ग्रहण से आशय साझेदार का फर्म को छोड़कर जाने से है। भारतीय साझेदारी अधिनियम की धारा 32(1) के अनुसार साझेदार अवकाश ग्रहण कर सकता है—

- (अ) समस्त साझेदारों का सहमति से,
- (ब) साझेदारों के स्पष्ट ठहराव के अनुसार
- (द) यदि साझेदारी एच्छिक है तो साझेदार अपने अवकाश ग्रहण करने की इच्छा की लिखित सूचना शेष साझेदारों को देकर।

### अवकाश ग्रहण पर समस्याएं—

1. नए लाभ-हानि विभाजन अनुपात की गणना। (Calculation of New Profit sharing Ratio).
2. लाभ प्राप्ति अनुपात की गणना। (Calculation of Gaining Ratio).
3. ख्याति का समायोजन एवं उसका लेखा करना। (Adjustment of Goodwill and its Treatment).
4. सम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन। (Revaluation of Assets and Liabilities).
5. अवितरित लाभों का विभाजन। (Division of Undistributed Profits).
6. संयुक्त जीवन बीमा पालिसी में हिस्सा। (Share in Joint Life Policy).
7. देय राशि का निर्धारण एवं उसका भुगतान। (Determination of amount payable and its Settlement).
8. नए अनुपात में पूंजी का समायोजन। (Adjustment of Capital in New Profit Sharing Ratio).

**1. नए लाभ-हानि विभाजन अनुपात की गणना (Calculation of New Profit Sharing Ratio)**—जब कोई साझेदार फर्म से अवकाश ग्रहण करता है या उसकी मृत्यु हो जाती है तो ऐसी स्थिति में शेष साझेदारों के लाभ के हिस्से में वृद्धि होती है जिससे लाभ-हानि विभाजन अनुपात में परिवर्तन हो जाता है। अतः नए लाभ-हानि विभाजन अनुपात ज्ञात करने पड़ते हैं।

(i) जब कोई साझेदार अवकाश ग्रहण करता है तथा शेष साझेदारों के नए अनुपात के बारे में कुछ नहीं बताया गया तो ऐसी दशा में शेष साझेदार भविष्य में लाभ-हानि को पुराने अनुपात में ही बांटते रहेंगे।

**उदाहरण**—अनु, तनु, मनु तीन साझेदार हैं जो लाभ-हानि को 5 : 4 : 3 के अनुपात में बांटते हैं। नए लाभ-हानि अनुपात की गणना कीजिए यदि—

- (a) अनु अवकाश ग्रहण करता है।
- (b) तनु अवकाश ग्रहण करता है।
- (c) मनु अवकाश ग्रहण करता है।

**Solution**—अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार के अनुपात को हटाकर जो अनुपात बचेगा वह शेष साझेदारों का नया लाभ-हानि विभाजन अनुपात होगा।

- (a) अनु के अवकाश ग्रहण करने पर तनु और मनु का नया अनुपात 4 : 3 होगा।
  - (b) तनु के अवकाश ग्रहण करने पर अनु और मनु का नया अनुपात 5 : 3 होगा।
  - (c) मनु के अवकाश ग्रहण करने पर अनु और तनु का नया अनुपात 5 : 4 होगा।
- (ii) यदि अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार का हिस्सा शेष साझेदारों द्वारा किसी विशेष अनुपात में ले लिया जाता है

तो ऐसी अवस्था में शेष साझेदारों के पुराने अनुपात में उनके द्वारा लिया गया हिस्सा जोड़कर ही नए अनुपात की गणना की जाती है।

अनु, तनु, मनु लाभ हानि को 5 : 4 : 3 के अनुपात में बांटते हैं। मनु अवकाश ग्रहण करता है। तब उसका हिस्सा अनु और तनु के द्वारा 3 : 2 में लिया जाता है।

**Solution—** मनु का हिस्सा अनु और तनु में 3 : 2 के अनुपात में बांटा जाएगा।

$$\text{अनु को मनु से हिस्सा मिलता है } \frac{3}{12} \text{ का } \frac{3}{5} = \frac{9}{60}$$

$$\text{अतः अनु का नया हिस्सा } \frac{5}{12} + \frac{9}{60} = \frac{25+9}{60} = \frac{34}{60}$$

$$\text{तनु को मनु से हिस्सा मिलता है } \frac{3}{12} \text{ का } \frac{2}{5} = \frac{6}{60}$$

$$\text{अतः तनु का नया हिस्सा } = \frac{4}{12} + \frac{6}{60} = \frac{20+6}{60} = \frac{26}{60}$$

$$\text{नया अनुपात अनु } \frac{34}{60} : \text{तनु } \frac{26}{60} : \text{or } 34 : 26$$

## 2. लाभ प्राप्ति अनुपात की गणना (Calculation of Gaining Ratio)

**अर्थ (Meaning)—** किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण करने पर या उसकी मृत्यु होने पर भविष्य में नई फर्म का लाभ कम साझेदारों में बांटा जाएगा। इस स्थिति में शेष साझेदारों के लाभों के हिस्से में कुछ न कुछ वृद्धि अवश्य होती है, अतः शेष साझेदारों के मध्य जिस अनुपात में यह वृद्धि होता है इस अनुपात को ही लाभ प्राप्ति अनुपात (Gaining Ratio) कहते हैं।

### गणना (Calculation)

(a) जब प्रश्न में साझेदार के अवकाश ग्रहण करने के बाद, शेष साझेदारों के नए लाभ-हानि विभाजन अनुपात नहीं दिए हुए हैं—उस दशा में शेष साझेदारों का पुराना अनुपात ही लाभ प्राप्ति अनुपात होगा।

ए, बी और सी फर्म में तीन साझेदार हैं जो लाभ-हानि को 4 : 3 : 1 अनुपात में बांटते हैं। लाभ प्राप्ति अनुपात गणना कीजिए, यदि (i) ए अवकाश ग्रहण करता है। (ii) बी अवकाश ग्रहण करता है। (iii) सी अवकाश ग्रहण करता है।

**Solution—** लाभ प्राप्ति अनुपात की गणना—क्योंकि प्रश्न में शेष साझेदारों के नए लाभ विभाजन अनुपात नहीं दिए हुए हैं इसलिए शेष साझेदारों को उनके पुराने अनुपात में ही लाभ प्राप्त होगा—

(i) यदि ए अवकाश ग्रहण करता है तो बी और सी को 3 : 1 में लाभ प्राप्त होगा।

(ii) यदि बी अवकाश ग्रहण करता है तो एक तथा सी को 4 : 1 में लाभ प्राप्त होगा।

(iii) यदि सी अवकाश ग्रहण करता है तो एक तथा बी को 4 : 3 में लाभ प्राप्त होगा।

अतः लाभ प्राप्ति अनुपात (i) 3 : 1 (ii) 4 : 1 (iii) 4 : 3.

(2) यदि प्रश्न में शेष साझेदारों का नया अनुपात दिया हुआ हो तो लाभ प्राप्ति अनुपात की गणना नए अनुपात में से पुराना अनुपात घटा कर की जाती है। लाभ प्राप्ति की गणना निम्न सूत्र द्वारा की जा सकती है—

लाभ प्राप्ति अनुपात = नया अनुपात - पुराना अनुपात (Gaining Ratio = New Ratio - Old Ratio)

**उदाहरण—** 1 जनवरी, 1988 को पी, क्यू और आर साझेदार हैं जो कि लाभों को क्रमशः  $\frac{2}{5}$ ,  $\frac{2}{5}$  और  $\frac{1}{5}$  के अनुपात में

बांटते हैं। इस स्थिति को क्यू अवकाश ग्रहण करता है। पी और आर का नया लाभ-हानि अनुपात क्रमशः  $\frac{3}{4}$  और

$\frac{1}{4}$  होगा। लाभ प्राप्त अनुपात की गणना कीजिए।

**Solution.**

Gaining Ratio = New Ratio – Old Ratio

$$\text{P's New Ratio} = \frac{3}{4}$$

$$\text{P's Old Ratio} = \frac{2}{5}$$

$$\text{P's Gaining Ratio} = \frac{3}{4} - \frac{2}{5} = \frac{15-8}{20} = \frac{7}{20}$$

$$\text{R's New Ratio} = \frac{1}{4}$$

$$\text{R's Old Ratio} = \frac{1}{5}$$

$$\text{R's Gaining Ratio} = \frac{1}{4} - \frac{1}{5} = \frac{5-4}{20} = \frac{1}{20}$$

Gaining Ratio 7 : 1

**त्याग अनुपात तथा लाभ प्राप्ति अनुपात में अन्तर**

**(Difference between Sacrificing Ratio and Gaining Ratio)**

क्र.सं.	अन्तर का आधार	त्याग अनुपात	लाभ प्राप्ति अनुपात
(i)	अर्थ	जिस अनुपात में पुराने साझेदार अपने हिस्से का त्याग करते हैं वह त्याग अनुपात (Sacrificing Ratio) कहलाता है।	शेष साझेदारों के लाभोंके हिस्से में जिस अनुपात में यह वृद्धि होती है लाभ प्राप्ति अनुपात (gaining Ratio) कहलाता है।
(ii)	समय (time)	त्याग अनुपात की गणना किसी साझेदार के प्रवेश के समय की जाती है।	लाभ प्राप्ति अनुपात की गणना किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण या मृत्यु के समय की जाती है।
(iii)	प्रभाव (Effect)	इस अनुपात से पुराने साझेदार के लाभ के हिस्से में कमी हो जाती है।	इस अनुपात से पुराने साझेदार के लाभ के हिस्से में वृद्धि होती है।
(iv)	गणना (Calculation)	इस अनुपात की गणना निम्न सूत्र द्वारा की जाती है। पुराना अनुपात – नया अनुपात	इस अनुपात की गणनानिम्न सूत्र द्वारा की जाती है। नया अनुपात – पुराना अनुपात

### 3. ख्याति का समायोजन एवं उसका लेखा (Adjustment of Goodwill and its Treatment)

(a) जब पुस्तकों में ख्याति विद्यमान न हो (When goodwill does not appear in the Books)—ख्याति का लेखा करने के निम्न तीन तरीके हैं—

1. फर्म की ख्याति की सम्पूर्ण राशि से लेखा करने (When goodwill is raised at its full value)—इस दशा में लेखा करने की निम्न दो स्थितियां हो सकती हैं—

(क) यदि फर्म की सम्पूर्ण ख्याति की राशि से ख्याति खाता खोला जाए और उसे लेखा पुस्तकों में दिखाया जाए—  
ख्याति खाता खोलने पर (**Goodwill account is raised**)—

(i) Goodwill A/c Dr.  
    To All Partners' Capital A/cs  
(For goodwill raised at full value on partners' retirement in their old ratio)

(ख) यदि फर्म की सम्पूर्ण ख्याति की राशि से ख्याति खोला जाए और साझेदार के अवकाश ग्रहण के पश्चात उसे बन्द कर दिया जाए—

(i) ख्याति खाता खोलने पर (**Goodwill account is raised**)—  
Goodwill A/c Dr.  
    To All Partners' Capital A/cs  
(For goodwill raised at full value on partners' retirement in their old ratio)

(ii) ख्याति खाता बन्द करने पर (**Goodwill account is written off**)—  
Continuing Partners' Capital A/cs Dr.  
    To Goodwill A/c  
(For goodwill account written off by continuing Partners' in their new ratio)

2. अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार की ख्याति के हिस्से की राशि से लेखा करना (**When goodwill account is raised with the retiring partner's share only**)—इस दशा में भी निम्न दो स्थितियां हो सकती हैं—

(क) यदि अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार के हिस्से की ख्याति की राशि से ख्याति खाता खोला जाए और उसे लेखा पुस्तकों में दिखाए जाए—

ख्याति खाता खोलने पर (**Goodwill account is raised**):

(i) Goodwill A/c Dr.  
    To Retiring Partner's Capital A/c  
(For retiring partner's share of goodwill raised in the books)

(ख) जब अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार के हिस्से की ख्याति की राशि से ख्याति खोला जाए और साझेदार के अवकाश ग्रहण के बाद उसे बन्द कर दिया जाए।

(i) ख्याति खाता खोलने पर (**Goodwill account is raised**):  
Goodwill A/c Dr.  
    To Retiring Partner's Capital A/c  
(For retiring partner's share of goodwill raised in the books)

(ii) ख्याति खाता बन्द करने पर (**Goodwill account is written off**):  
Continuing Partners' Capital A/cs Dr.  
    To Goodwill A/c  
(For goodwill written off in the **Gaining Ratio** of remaining partners)

3. बिना ख्याति खाता खोले लेखा करना (**Without raising a goodwill account**)—अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार की ख्याति के हिस्से की राशि से करना—

Continuing Partners' Capital A/cs Dr.  
    To Retirement Partners' Capital A/cs  
(For retiring partner's share of goodwill adjusted to remaining partners' in their **Gaining Ratio**)

**Illustration 10**—A, B और C साझेदार हैं जो लाभ-हानि को 7 : 5 : 4 के अनुपात में बांटते हैं। C अवकाश ग्रहण करता है और फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 32,000 रु. किया जाता है। पुस्तकों में कोई ख्याति खाता नहीं है। A और B भविष्य में लाभों को समान बांटेंगे। निम्नलिखित दशाओं में ख्याति के लेखों के लिए आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियां कीजिए—

1. यदि ख्याति खाता खोला जाए और उसे पुस्तकों में रहने दिया जाए।
2. यदि ख्याति खाता खोला जाए परन्तु बाद में इसे अपलिखित कर दिया जाए।
3. यदि C जो कि अवकाश ग्रहण करता है के हिस्से से ख्याति खाता खोला जाए और उसे पुस्तकों में रहने दिया जाए।
4. यदि C के हिस्से से ख्याति खाता खोला जाए परन्तु बाद में इसे अपलिखित कर दिया जाए।
5. यदि ख्याति खाता पुस्तकों में नहीं खोला जाता है।

**Solution**—1. यदि ख्याति खाता सम्पूर्ण मूल्य से खोला जाए और इसे पुस्तकों में रहने दिया जाए;

**JOURNAL ENTRY**

	Dr.	Rs.	Rs.
Goodwill A/c	Dr.	32,000	
To A's Capital A/c			14,000
To B's Capital A/c			10,000
To C's Capital A/c			8,000
(For goodwill A/c raised at its full value in old profit sharing ratio)			

2. यदि ख्याति खाता सम्पूर्ण मूल्य से खोला जाए परन्तु बाद में इसे अपलिखित कर दिया जाए—

**JOURNAL ENTRIES**

	Dr.	Rs.	Rs.
(i) Goodwill A/c	Dr.	32,000	
To A's Capital A/c			14,000
To B's Capital A/c			10,000
To C's Capital A/c			8,000
(For goodwill A/c raised at its full value in old profit sharing ratio)			
(ii) A's Capital A/c	Dr.	16,000	
B's Capital A/c	Dr.	16,000	
To Goodwill A/c			32,000
(For goodwill written off in the new ratio)			

3. यदि अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार के हिस्से से ख्याति खाता खोला जाए और पुस्तकों में रहने दिया जाए—

**JOURNAL ENTRY**

	Dr.	Rs.	Rs.
Goodwill A/c	Dr.	8,000	
To C's Capital A/c			8,000
(For goodwill A/c raised by R's share of goodwill)			

4. यदि अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार के हिस्से ख्याति खोला जाए परन्तु इसे अपलिखित कर दिया जाए—

## JOURNAL ENTRIES

(i)	Goodwill A/c To C's Capital A/c (For goodwill account raised by R's share of goodwill)	Dr.	Rs. 8,000	Rs. 8,000
(ii)	A's Capital A/c B's Capital A/c To Goodwill A/c (For goodwill raised is written off in gaining ratio 1 : 3)	Dr. Dr.	2,000 6,000	8,000

5. यदि ख्याति खाता पुस्तकों में नहीं खोला जाता है—

## JOURNAL ENTRY

	A's Capital A/c B's Capital A/c To C's Capital A/c (For retiring partner's share of goodwill adjusted to remaining partners in their gaining ratio 1 : 3)	Dr. Dr.	2,000 6,000	8,000
--	--	------------	----------------	-------

**Note:** (i) लाभ प्राप्ति अनुपात = नया अनुपात - पुराना अनुपात

$$\text{अतः } A = \frac{1}{2} - \frac{7}{16} = \frac{8-7}{16} = \frac{1}{16}$$

$$\text{और } = \frac{1}{2} - \frac{5}{16} = \frac{8-5}{16} = \frac{3}{16}$$

$$\text{अतः लाभ प्राप्ति अनुपात } = 1 : 3$$

(ii) जब सम्पूर्ण राशि से ख्याति खाता खोला जाता है तो इसे शेष साझेदारों के नए लाभ-विभाजन अनुपात में अपलिखित किया जाता है। परन्तु यदि ख्याति खाता केवल अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार के हिस्से से ही खोला जाता है तो इसे शेष साझेदारों के लाभ प्राप्ति अनुपात में अपलिखित किया जाता है।

## जब पुस्तकों में ख्याति विद्यमान हो (When goodwill appears in the books)

जब पुस्तकों में ख्याति पहले से दिखाई हुई हो तो निम्नलिखित तीन परिस्थितियों में से एक परिस्थिति हो सकती है—

- यदि ख्याति का पुस्तक मूल्य (Book value) मूल्यांकित मूल्य (Agreed value) से कम है तो ख्याति के मूल्य में वृद्धि (Increase) से ख्याति खाता खोला जाएगा।
- यदि ख्याति का पुस्तक मूल्य मूल्यांकित मूल्य से अधिक है तो ख्याति के मूल्य में कमी (Decrease) से ख्याति खाता अपलिखित किया जाएगा।
- यदि ख्याति खाता का पुस्तक मूल्य (Book value) मूल्यांकित मूल्य (Agreed value) के बराबर है तो कोई प्रविष्टि नहीं की जाएगी।

X, Y, Z साझेदार हं जो लाभ हानि को 4 : 3 : 2 के अनुपात में बांटते हैं। Y अवकाश ग्रहण करता है और फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 90000 रु. किया गया है। ख्याति की प्रविष्टियां कीजिए।

जब चिह्न में ख्याति (a) 54,000/- (b) 1,35,000/- (c) 90,000/- दिखाई हो।

## JOURNAL

Dr.		Cr.
(a)	Goodwill A/c <span style="float: right;">Dr.</span> To X's Capital A/c To Y's Capital A/c To Z's Capital A/c (For increase in the value of goodwill i.e. Rs. 36,000 raised and credited to partners' capital (including retiring partner in their old ratio 4 : 3 : 2))	Rs. 36,000 16,000 12,000 8,000
(b)	X's Capital A/c <span style="float: right;">Dr.</span> Y's Capital A/c <span style="float: right;">Dr.</span> Z's Capital A/c <span style="float: right;">Dr.</span> To Goodwill A/c (For decrease in value of goodwill i.e. Rs. 45,000 written off and debited partners' capital a/c (including retiring partner) in their old ratio 4 : 3 : 2)	20,000 15,000 10,000 45,000
(c)	No Entry	

4. सम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन (Revaluation of Assets and Liabilities)—किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण करने पर सम्पत्तियों एवं दायित्वों का मूल्यांकन ठीक उसी प्रकार किया जाता है। जिस प्रकार नए साझेदार के प्रवेश पर किया जाता है। परन्तु साझेदार के अवकाश ग्रहण की दशा में पुनर्मूल्यांकन के परिणामस्वरूप लाभ या हानि को समस्त साझेदारों में उनके लाभ-हानि के विभाजन अनुपात में बांटा जाता है जबकि नए साझेदार के प्रवेश के समय नए साझेदार में यह लाभ या हानि नहीं बांटा जाता।

5. अवितरित लाभों का विभाजन (Division of Undistributed Profits)—यदि चिह्ने में संचय कोष, सामान्य संचय, लाभ-हानि विभाजन के अनुपात में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। इसके लिए निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है—

Reserve A/c	Dr.
Profit & Loss A/c	Dr.
General Reserve A/c	Dr.
To All Partners' Capital A/cs	
(For undistributed profits transferred to partners' capital a/cs in their old ratio)	

अवितरित हानि जैसे लाभ-हानि खातेके (डेबिट शेष) की दशा में निम्न विपरीत प्रविष्टि की जाती है।

All Partners Capital A/c	Dr.
To P & L A/c	

6. अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार के खाते का भुगतान (Patymnt)—अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार का पूँजी खाता बनाकर अवकाश ग्रहण करने वाले साझे को दी जाने वाली कुल रकम का ज्ञान होता है। जाने वाले साझे को भुगतान निम्न प्रकार से हो सकता है—

(1) एक मुश्त भुगतान करने पर—

•Retiring Partner's Capital A/c	Dr.
To Cash/Bank A/c	
(Being due amount of retiring partner paid to him)	

(2) यदि किश्तों में भुगतान किया जाए तो निम्नलिखित प्रविष्टियां होंगी—

(i) पूँजी खाते को ऋण खाते (Loan A/c) में हस्तांतरण करते समय—

Retiring Partner Capital A/c	Dr.
To Retiring Partner's Loan A/c	
(Being transfer to retiring partner's Capital A/c to his Loan A/c)	

## (ii) ऋण पर ब्याज देने पर—

Interest A/c Dr.  
 To Retiring Partner's Loan A/c  
 (Being interest on Loan transferred to Loan A/c)

## (iii) किश्त की राशि का भुगतान करने पर—

Retiring Partner's Loan A/c Dr.  
 To Cash/Bank A/c  
 (Being payment of instalment)

नोट—जब तक अवकाश ग्रहण करने वाली साझे के ऋण (Loan) का पूर्ण भुगतान नहीं कर दिया जाता तब तक चिह्ने के दायित्व पक्ष में ही इसे दिखाया जाएगा।

**Illustration 7**—अनिल, बिमला तथा चिराग साझेदार हैं जो कि लाभ-हानि क्रशत: 2 : 2 : 1 के अनुपात में बांटते हैं। 1 जनवरी, 1995 को उनकी फर्म का चिह्ना इस प्रकार था—

## BALANCE SHEET

		Rs.			Rs.
Account Payable		25,000	Cash		3,000
Outstanding Expenses		12,000	Debtors	20,000	
Reserve		15,000	Less: Provision	1,000	19,000
Capital A/cs	Rs.		Stock		30,000
Anil	40,000		Furniture		10,000
Bimla	40,000		Plant & Machinery		40,000
Chirag	30,000	1,10,000	Buildings		60,000
		<u>1,62,000</u>			<u>1,62,000</u>

उपर्युक्त तिथि को Bimla अवकाश ग्रहण करती है और साझेदारों में सहमति हुई कि—

1. फर्म की ख्याति का मूल्यांकन 20,000 रु. किया गया।
2. फर्नीचर, प्लांट एवं मशीनरी के मूल्य को क्रमशः 10 प्रतिशत तथा 5 प्रतिशत से घटाना है।
3. संदिग्ध ऋणों के आयोजन को 1,500 रु. तक बढ़ाना है।
4. स्टॉक और भवन के मूल्य को क्रमशः 20 प्रतिशत तथा 10 प्रतिशत से बढ़ाना है।
5. बिमला की देय राशि ऋण खाते में हस्तान्तरित कर दी जाएगी।

रोजानामचा प्रविष्टियां बनाइए और पुनर्मूल्यांकन खाता; पूंजी खाते; नई फर्म का प्रारम्भिक चिह्ना तैयार कीजिए—

**Solution :**

## JOURNAL

		Rs.	Rs.
Reserve A/c	Dr.	15,000	
To Anil Capital A/c			6,000
To Bimla Capital A/c			6,000
To Chirag Capital A/c			3,000
(For the transfer of reserve to partners' capital a/cs in their ratio 2 : 2 : 1)			
Revaluation A/c	Dr.	3,500	
To Furniture A/c			1,000
To Plant & Machinery A/c			2,000
To Provision for Doubtful Debts A/c			500
(For decrease in the value of assets and increase in the amount of liabilities)			

Stock A/c	Dr.	6,000	
Buildings A/c	Dr.	6,000	12,000
To Revaluation A/c			
(For increase in the value of assets)			
Revaluation A/c	Dr.	8,500	
To Anil Capital A/c			3,400
To Bimla Capital A/c			3,400
To Chirag Capital A/c			1,700
(For profit on revaluation transferred to partners' capital a/cs in their old ratio)			
Goodwill A/c	Dr.	20,000	
To Anil Capital A/c			8,000
To Bimla Capital A/c			8,000
To Chirag Capital A/c			4,000
(For goodwill raised at full value in old ratio 2 : 2 : 1)			
Bimla Capital A/c	Dr.	57,400	
To Bimla Loan A/c			57,400
(For B's balance of capital a/c transferred to B's loan a/c)			

### REVALUATION ACCOUNT

To Furniture A/c	Rs. 1,000	By Stock A/c	Rs. 6,000
To Plant & Machinery A/c	2,000	By Building A/c	6,000
To Provision for Doubtful Debts A/c	500		
To Profit transferred to Capital A/cs:			
Anil - 2/53	Rs. 3,400		
Bimla - 2/5	3,400		
Chirag - 1/5	1,700		
	8,500		
	12,000		12,000

### CAPITAL ACCOUNTS

Particulars	Anil	Bimla	Chirag	Particulars	Anil	Bimla	Chirag
	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Balance c/d	57,400	57,400	38,700	By Balance b/d	40,000	40,000	30,000
				By Reserve A/c	6,000	6,000	3,000
				By Revaluation A/c	3,400	3,400	1,700
				By Goodwill A/c	8,000	8,000	4,000
	57,400	57,400	38,700		57,400	57,400	38,700
To Bimla Loan A/c	-	57,400	-	By Balance b/d	57,400	57,400	38,700
To Balance c/d	57,400	-	38,700				
	57,400	57,400	38,700		57,400	57,400	38,700

## BALANCE SHEET OF NEW FIRM

<i>Liabilities</i>	<i>Rs.</i>	<i>Assets</i>	<i>Rs.</i>
Accounts Payable	25,000	Cash	3,000
Outstanding Expenses	12,000	Debtors	20,000
Bimla Loan	57,400	Less : Provision	1,500
Capital A/cs		Stock	36,000
Anil	57,400	Furniture	9,000
Chirag	38,700	Plant & Machinery	38,000
	96,100	Buildings	66,000
		Goodwill	20,000
	<u>1,90,500</u>		<u>1,90,500</u>

**Illustration 8**—The Balance Sheet of A, B and C who were sharing profits in proportion to their capitals stood as follows on 31st December, 1984:

	<i>Rs.</i>		<i>Rs.</i>
Sundry Creditors	6,900	Cash at Bank	5,500
Capital Accounts:		Sundry Debtors	5,000
A	20,000	Less: Provision	100
B	15,000	Stock	8,000
C	<u>10,000</u>	Plant and Machinery	8,500
	45,000	Land and Building	25,000
	<u>51,900</u>		<u>51,900</u>

‘ब’ ने अवकाश ग्रहण किया और निम्नलिखित पर सहमति हुई—

- स्टाक में 6 प्रतिशत की कमी की जाए।
- देनदारों का आयोजन 5 प्रतिशत तक कर दिया जाए।
- भूमि एवं भवन में 20 प्रतिशत की वृद्धि की जाए।
- अदत्त कानूनी व्ययों के लिए 770 रु. का प्रावधान किया जाए।
- फर्म की ख्याति 10,800 रु. में से ‘ब’ का भाग ‘अ’ और ‘स’ के खातों में समायोजित कर दिया जाए जो भविष्य में लाभों को 5 : 3 के अनुपात में बांटेंगे। (ख्याति के लिए कोई खाता नहीं खोला जाएगा)।
- नई फर्म की कुल पूंजी 28,000 रु. निर्धारित की गई है जो कि ‘अ’ और ‘स’ में 5 : 3 के अनुपात में रहेगी। दोनों के पूंजी खाते इसी के आधार पर समायोजित किए जाएंगे और कमी एवं आधिक्य को रोकड़ में लाया या ले जाया जाएगा।

जर्नल में आवश्यक लेखे कीजिए, चिह्न बनाइए और ‘ब’ के भाग की बाकी उसके नाम के पृथक खाते में हस्तांतरित कीजिए।

**Solutuion—1**

## JOURNAL ENTRIES

	<i>Dr.</i>	<i>Rs.</i>	<i>Rs.</i>
Revaluation A/c		1,400	
To Stock A/c			480
To Provision for Doubtful Debts A/c			150
To Outstanding Legal Charges A/c			770
(For decrease in the value of assets and increase in liabilities)			

Land and Building A/c To Revaluation A/c (For increase in the value of assets)	Dr.	5,000	5,000
Revaluation A/c To A's Capital A/c To B's Capital A/c To C's Capital A/c (For profit on revaluation transferred to partner's capital accounts)	Dr.	3,600	1,600 1,200 800
A's Capital a/c C's Capital A/c To B's Capital A/c (For B's share of goodwill adjusted to the accounts of continuing partners in their gaining ratio 13 : 11 without raising goodwill A/c)	Dr. Dr.	1,950 1,650	3,600
B's Capital A/c To B's Loan A/c (For the transfer of B's Capital A/c to B's Loan C/c)	Dr.	19,000	19,800
A's Capital A/c To Bank A/c (For the amount returned to A/ to bring his capital to profit sharing ratio)	Dr.	2,150 <sup>2</sup>	2,150
Bank A/c To C's Capital A/c (For the amount brought in by C to raise his capital to profit sharing ratio)	Dr.	1,350 <sup>3</sup>	1,350

## CAPITAL ACCOUNTS

	A Rs.	B Rs.	C Rs.		A Rs.	B Rs.	C Rs.
To B's Capital A/c (Goodwill)	1,950	—	1,650	By bklance b/d	20,000	15,000	10,000
To B's Loan A/c	—	19,800	—	By Revaluation A/c	1,600	1,200	800
To Balance c/d	19,650	—	9,150	By A's capital A/c (goodwill)	—	1,950	—
				By C's Capital A/c (Goodwill)	—	1,650	—
	<u>21,600</u>	<u>19,800</u>	<u>10,800</u>		<u>21,600</u>	<u>19,800</u>	<u>10,800</u>
To Bank A/c (Balancing figure)	2,150	—	—	By Balance b/d	19,650	—	9,150
To balance c./d	17,500	—	10,500	By Bank A/c (Balancing figure)	—	—	1,350
	<u>19,650</u>	<u>—</u>	<u>10,500</u>		<u>19,650</u>	<u>—</u>	<u>10,500</u>

## BALANCE SHEET (After B's Retirement)

Sundry Creditors	Rs. 6,900	Cash at Bank	Rs. 4,700 <sup>4</sup>
Outstanding legal charges	770	Sundry Debtors	5,000
B's Loan	19,800	Less : Provision	<u>250</u>
Capital Accounts :		Stock	7,520
A	17,500	Plant and Machinery	8,500
C	<u>10,500</u>	Land and Building	<u>30,000</u>
	<u>55,470</u>		<u>55,470</u>

**Working Notes—**

1. ब के अवकाश ग्रहण पर लाभ प्राप्ति अनुपात की गणना—

$$\text{लाभ प्राप्ति अनुपात} = \text{नया अनुपात} - \text{पुराना अनुपात}$$

$$\text{अतः अ का लाभ प्राप्ति अनुपात} = \frac{8}{5} - \frac{4}{9} = \frac{45 - 32}{72} = \frac{13}{72}$$

$$\text{स का लाभ प्राप्ति अनुपात} = \frac{3}{8} - \frac{2}{9} = \frac{27 - 16}{72} = \frac{11}{72}$$

$$\text{अतः अ और स का लाभ प्राप्ति अनुपात} = \frac{13}{72} : \frac{11}{72} \text{ or } 13 : 11$$

2. नई फर्म की कुल पूंजी 28,000 रु. होनी चाहिए जिसमें से अ की पूंजी  $28,000 \times \frac{5}{8} = 17,500$  रु. होनी चाहिए परन्तु अ की वर्तमान पूंजी 19,650 रु. है अतः उसे  $19,650 - 17,500 = 2,150$  रु. वापिस दे दिए जाएंगे।
3. स की पूंजी  $28,000 \times \frac{3}{8} = 10,500$  रु. होनी चाहिए परन्तु उसकी वर्तमान पूंजी 9,150 रु. है अतः वह  $10,500 - 9,150 = 1,350$  रु. लाएगा।
4. Calculation of Bank Balance is as follows—

**BANK ACCOUNT**

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	5,500	By A's Capital A/c	2,150
To C's Capital A/c	1,350	By Balance c/d	4,700
	6,850		6,850

**साझेदार की मृत्यु (Death of Partner)**

किसी साझेदार के प्रवेश अथवा मृत्यु के कारण फर्म में उसकी साझेदारी समाप्त हो जाती है तथा शेष साझेदारों के मध्य नई साझेदारी शुरु हो जाती है और वही फर्म चालू रहती है। अतः साझेदार की मृत्यु अथवा अवकाश ग्रहण पर फर्म का पुनर्गठन होता है साझेदारी संलेख के नियमों के अनुसार मृतक साझेदार की देय राशि का निर्धारण किया जाता है देय राशि का निर्धारण के लिए फर्म की पुस्तकों में उसी प्रकार समायोजन (Adjustment) किए जाते हैं जिस प्रकार साझेदार के अवकाश ग्रहण पर। अवकाश ग्रहण तथा मृत्यु में निम्न दो अन्तर पाए जाते हैं।

1. साझेदार की मृत्यु पर उसका हिसाब-किताब मृत साझेदार का उत्तराधिकारी करता है। और उसी को मृत साझेदार के हिस्से की रकम प्राप्त होती है। जबकि अवकाश ग्रहण करने पर अवकाश करने वाला साझेदार अपना हिसाब-किताब स्वयं करता है।

2. अवकाश ग्रहण करने पर अन्तिम खाते बनाने की तिथि पर ही हिसाब-किताब किया जाता है। क्योंकि साझेदार की मृत्यु किसी भी समय हो सकती है अतः उसका हिसाब उसी समय करना पड़ता है।

**मृत साझेदार के कानूनी अधिकारी को दी जाने वाली राशि का निकालना****(Calculation of Amount to be given to Deceased Partner's Executor)**

मृत साझेदार के कानूनी अधिकारी को दी जाने वाली राशि निकालने के लिए मृतक साझेदार का खाता बनाया जाता है तथा निम्न मदों से डेबिट तथा क्रेडिट किया जाता है।

### मृत साझेदार का खाता प्रायः निम्न मदों से क्रेडिट किया जाएगा

1. मृत साझेदार की मृत्यु की तिथि पर पूंजी खाते तथा चालू खाते का क्रेडिट शेष।
2. पूंजी पर दिया जाने वाला ब्याज।
3. फर्म की ख्याति की बढ़ोतरी।
4. सम्पत्तियों और दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन से होने वाला लाभ।
5. पिछले चिट्ठे की तिथि से मृत साझे की तिथि तक के लाभ के हिस्सा।
6. चिट्ठे में दिए गए अवितरित लाभों में हिस्सा।
7. चिट्ठे में दिए गए संचय (Reverse) में हिस्सा।
8. संयुक्त जीवन बीमा पालिसी में मृतक का भाग।

### मृत साझेदार का खाता प्रायः निम्न मदों से डेबिट किया जाता है

1. मृत साझे द्वारा मृत्यु की तिथि तक किए गए आहरण (Drawings)।
2. मृत साझे द्वारा आहरण पर दिया गया ब्याज।
3. मृत साझे के पूंजी तथा चालू खाते का डेबिट शेष।
4. ख्याति के मूल्य में कमी होने से होने वाली हानि।
5. पिछले स्थिति विवरण की तिथि से मृत्यु की तिथि तक की हानि में हिस्सा।
6. सम्पत्तियों तथा दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन से होने वाली हानि।
7. मृत साझेदार द्वारा फर्म से लिए गए ऋण से ॥

#### PROFORMA

Dr.	Deceased Partner's Capital Account		Cr.
To Undistributed Losses (Share in such losses)	Rs.	By Balance b/d	Rs.
To Revaluation A/c (share of loss)	—	By Interest on Capital	—
To Goodwill (Share of the reduction in Goodwill)	—	By Salary and Commission	—
To Drawings	—	By Undistributed Profits (Share in Such Profit)	—
To Interest on Drawings	—	By Goodwill A/c (Share of goodwill)	—
To Executor's Loan A/c (Balance)	—	By Joint Life Policy A/c (share of J.L.P.)	—
		By P/L Suspense A/c (share in Profits till death)	—

### साझेदारी की मृत्यु पर लेखांकन व्यवहार (Accounting Treatment at the time of death of a partner)

मृतक साझेदार के पूंजी खाते द्वारा प्रकट देय राशि को उसके वैधानिक प्रतिनिधि खाते में हस्तांतरित करना होता है। इसके लिए निम्न प्रविष्टि की जाती है—

Deceased Partner's Capital A/c	Dr.
To Deceased Partner's Executor's Loan A/c	
(For amount due to a deceased partner transferred to his executor's loan A/c)	

## मृत साझी के हिस्से का लाभ निकालना (Calculation of Deceased Partner's Share)

साझेदार जब किसी की मृत्यु हो जाती है तो पिछले चिट्ठे (B/S) की तिथि से मृत्यु की तिथि तक का लाभ उसके उत्तराधिकार को दिया जाता है। प्रायः लाभ निकालने की दो रीतियाँ हैं।

**1. विक्रय के आधार पर (Basis of Turnover)**—यदि साझेदारी संलेख में यह दिया हो कि किसी साझी की मृत्यु पर लाभ विक्रय के आधार पर निकाला जाएगा तो सबसे पहले साझी की मृत्यु की तिथि तक कुल बिक्री का योग किया जाएगा। इसके पश्चात् गत वर्ष की कुल बिक्री तथा उस पर होने वाले, लाभ का प्रतिशत निकाला जाएगा। अब इस प्रतिशत के आधार पर ही मृत्यु की तिथि तक की बिक्री पर लाभ निकाला जाएगा। कहने का तात्पर्य यह है कि गत वर्ष के लाभ को गत वर्ष की बिक्री से विभाजित कर इस वर्ष की बिक्री से गुणा कर दिया जाता है इसको हम निम्न फार्मूले द्वारा आसानी से समझ सकते हैं—

$$\text{अन्तिम चिट्ठे की तिथि से मृत्यु की तिथि तक का लाभ} = \frac{\text{गत वर्ष का लाभ} \times \text{मरने की तिथि तक की बिक्री}}{\text{गत वर्ष की कुल बिक्री}}$$

जैसे माना कि मृत्यु की तिथि तक बिक्री 10,000 रुपए की थी गत वर्ष की कुल बिक्री 100,000 रु. की तथा कुल लाभ 20,000 रु. का था। अतः अब मृत्यु की तिथि तक का लाभ इस प्रकार निकाला जाएगा—

$$\frac{20,000 \times 10,000}{1,00,000} = 2,000 \text{ रु.}$$

**2. समय के आधार पर (Basis of time)**—यदि साझेदारी संलेख के नियमानुसार मृत साझेदार का मृत्यु की तिथि तक का लाभ समय के आधार पर निकाला जाता है तो सर्वप्रथम यह ज्ञात किया जाता है कि अन्तिम चिट्ठे की तिथि तक कितने दिन हो गए अथवा महीने हो गए। इसके पश्चात् गत वर्ष का लाभ जाना जाता है और जितने दिन अथवा मास मृत साझी जीवित रहा है उतने दिन का गत वर्ष के लाभ के आधार पर उसे लाभों में हिस्सा दिया जाता है।

यदि साझी की मृत्यु महीना पूरा होने पर होती है तो वहां पर दिनों के अतिरिक्त महीनों के हिसाब से लाभ निकाला जाता है।

$$\text{फार्मूला} = \frac{\text{गत वर्ष का लाभ} \times \text{मरने की तिथि तक के महीने}}{12}$$

उदाहरण—माना कि X की मृत्यु 1 अप्रैल को होती है तथा गत वर्ष का लाभ 12,000 रु. है

$$\frac{12,000 \times 2}{12} \times 3,000 \text{ रु.}$$

**Illustration 9**—अंकित, बलजीत, तथा चन्की फर्म के साझेदार हैं जो लाभों को 2 : 1 : 1 के अनुपात में बांटते हैं। अंकित, बलजीत तथा चन्की के जीवन पर व्यक्तिगत पॉलिसी क्रमशः 20,000 रु., 10,000 रु. और 10,000 रु. की ली हुई हैं और उन पर भुगतान किया गया प्रीमियम लाभ-हानि खाते में दिखाया जाता है, जो प्रत्येक वर्ष 31 दिसम्बर को तैयार किया जाता है।

चन्की की 31 मार्च, 1995 को मृत्यु हो जाती है। इस तिथि को समर्पण मूल्य पॉलिसी की राशि का 20 प्रतिशत है। साझेदारी संलेख के अनुसार मृतक साझेदार के वैधानिक प्रतिनिधि को निम्न अधिकार हैं—

1. गत स्थिति विवरण के अनुसार उसकी पूंजी।
2. मृत्यु की तिथि तक उक्त पूंजी पर ब्याज 9 प्रतिशत वार्षिक दर से।
3. मृत्यु की तिथि तक लाभों का उसका हिस्सा, जिसकी गत वर्ष के लाभ के आधार पर गणना की जाएगी।
4. उसका जीवन बीमा पॉलिसी का हिस्सा।
5. आहरण पर 3 प्रतिशत औसत दर से ब्याज लिया जाना है।

31 दिसम्बर, 1994 को सी की पूंजी 60,000 रु. थी। वर्ष के दौरान मृत्यु की तिथि तक उसके आहरण 8,000 रु. के थे। गत वर्ष का लाभ 40,000 रु. था।

चन्की का पूंजी खाता तैयार कीजिए।

Dr.	<b>CHUNKY'S CAPITAL ACCOUNT</b>		Cr.
	Rs.		Rs.
To Drawings A/c	8,000	By Balance b/d (1.1.95)	60,000
To Interest on Drawings	240	By Interest on Capital	1,350
To Chunky Executor's Loan A/c (Amount payable)	59,610	By Profit & Loss Suspense A/c	2,500
		By Joint Life Policy A/c	4,000
	<u>67,850</u>		<u>67,850</u>

**Working Notes:**

(1) **Interest on capital** =  $60,000 \times \frac{9}{100} \times \frac{3}{12} = \text{Rs. } 1,350.$

(2) **Chunky Share of profits till date of death:**

3 months profit based on the last year's profit =  $40,000 \times \frac{3}{12} = \text{Rs. } 10,000$

Chunky share & profit =  $10,000 \times \frac{1}{4} = 2,500$

(3) **Chunky Share in life policies:**

If instead of one joint life policy a number of individual policies are taken, on the death of a partner the amount of policy on the life of the deceased partner will be received in cash. The other policies will be shown at their respective surrender value while ascertaining the amount due to the executors of the deceased partner.

	Rs.
Surrender value of Ankit's policy = $\text{Rs. } 20,000 \times \frac{20}{100}$	= 4,000
Surrender value Baljeet's policy = $\text{Rs. } 10,000 \times \frac{20}{100}$	= 2,000
Full sum assured of Chunky's policy received due to his death	<u>10,000</u>
Total Valuation of Life Policies	<u><u>16,000</u></u>
Chunky share in life policies = $16,000 \times \frac{1}{4} = \text{Rs. } 4,000$	

(4) **Interest on Chunky Drawings** =  $\text{Rs. } 8,000 \times \frac{3}{100} = \text{Rs. } 240$

## फर्मों का संविलयन अथवा फर्मों का एकीकरण

### (Amalgamation of Firms)

एकीकरण अथवा संविलयन का उद्देश्य व्यावसायिक व्ययों में कमी लाना, पारस्परिक प्रतिस्पर्धा को समाप्त करना एकाधिकर उत्पन्न करना, वित्तीय संसाधनों में वृद्धि करना आदि हो सकता है।

**अर्थ (Meaning)**—जब एक समान व्यवसाय करने वाली दो या दो से अधिक फर्म परस्पर संयोजित होकर एक नई फर्म बना लेती हैं, तो इस प्रकार के संयोजन को फर्मों का संविलयन कहा जाता है। उदाहरणार्थ दो साझेदारी फर्म

Anil Bros., तथा Sunil Bros. एक समान व्यवसाय करती हैं। ये दोनों फर्म परस्पर संयोजित होकर एक नई फर्म Anil & Sunil Bros. बनाने का निर्णय लेती हैं, इस स्थिति को फर्मों का संविलयन कहा जाएगा। अथवा फर्मों का एकीकरण कहा जाएगा।

**एकीकरण अथवा संविलयन के लिए लेखा पद्धति (Accounting Procedure for Amalgamation)**

- (A) पूर्ववर्ती फर्मों की पुस्तकों में लेखा (In the Books of the old Firms)  
 (B) नई फर्म की पुस्तकों में लेखा (In the Books of New Firm)

**(A) पूर्ववर्ती फर्मों की पुस्तकों में लेखा**

1. सम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन (Revaluation of Assets and Liabilities)—फर्म की सम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन लाभ-हानि समायोजन खाते (Profit and Loss Adjustment Account) के द्वारा किया जाता है तथा पुनर्मूल्यांकन के लाभ अथवा हानि को साझेदारों के पूंजी खातों में उनके पूर्व लाभ-विभाजन अनुपात में स्थानान्तरित कर दिया जाता है।

- (a) सम्पत्तियों के मूल्यों में वृद्धि अथवा दायित्वों के मूल्यों में कमी होने पर—

Sundry Assets/Liabilities A/c Dr.  
 To Profit and Loss A/c

- (b) सम्पत्तियों के मूल्य में कमी एवं दायित्वों के मूल्य में वृद्धि होने पर—

Profit and Loss Adjustment A/c Dr.  
 To Sundry Assets/Liabilities A/c

- (c) पुनर्मूल्यांकन के लाभ के विभाजन के लिए—

Profit and Loss Adjustment A/c Dr.  
 To Partners' Capital A/c

**Note**—पुनर्मूल्यांकन पर हानि होने की दशा में उपर्युक्त प्रविष्टि विपरीत हो जाएगी।

2. संचित लाभ एवं संचितियां (Accumulated profits and reserves)—इनको प्रत्येक फर्म की पुस्तकों में उनके साझेदारों के पूंजी खातों में क्रेडिट कर दिया जात है तथा निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है—

Profit and Loss A/c Dr.  
 Reserve A/c Dr.  
 To Partners' Capital A/c

**Note**—लाभ-हानि खाते के डेबिट शेष होने की दशा में उपर्युक्त प्रविष्टि विपरीत हो जाएगी।

3. ख्याति का मूल्यांकन (Value of Goodwill)—प्रत्येक फर्म की ख्याति का मूल्यांकन किया जाता है तथा फर्मों की अपनी-अपनी पुस्तकों में साझेदारों के पूंजी खातों में निम्नलिखित प्रविष्टि द्वारा ख्याति की राशि को क्रेडिट कर दिया जात है—

Goodwill A/c Dr.  
 To Partners' Capital A/c

4. नई फर्म के द्वारा सम्पत्तियों एवं दायित्वों को न लेने पर (Asset and Liabilities not taken over by the new firm)—इनको या तो नकद प्राप्ति अथवा भुगतान करके तय कर लिया जाएगा और या साझेदारों द्वारा व्यक्तिगत रूप से ले लिया जाएगा।

- (a) साझेदार द्वारा सम्पत्ति लेने पर—

Partners' Capital Account Dr. at agreed value  
 To asset A/c

**(b) साझेदार द्वारा दायित्व लेने पर—**

Liability A/c Dr. at agreed value  
 To Partner's Capital A/c

**Note—**(i) उपर्युक्त स्थिति में सम्पत्तियों अथवा दायित्वों के किसी भी लाभ अथवा हानि को साझेदारों के पूंजी खातों में स्थानान्तरित कर दिया जाता है

(ii) किसी भी अन्य सूचना के अभाव में सम्पत्तियों एवं दायित्वों को साझेदारों द्वारा उनकी पूंजी के अनुपात में ले लिया जाता है।

**5. नई फर्म द्वारा सम्पत्तियों एवं दायित्वों को ले लेने पर (Assets and Liabilities thaken over by the new Firm)—नई फर्म द्वारा सम्पत्तियों एवं दायित्वों को ले लिए जाने पर निम्नलिखित प्रविष्टि की जाएगी—**

New Firm Dr. —Excess of Assets over Liabilities  
 Sundry Liabilities Dr. —Liabilities taken over  
 To Sundry Assets — Assets taken over

**6. साझेदारों के पूंजी खातों को बन्द करने पर (Closing of Partners' Capital Accounts)—साझेदारों के पूंजी खातों को बन्द करने के लिए इनको नई फर्म के खाते में स्थानान्तरित कर दिया जाएगा, जिसके लिए निम्नलिखित प्रविष्टि की जाएगी—**

Partner's Capital Accounts Dr  
 To New Firm

**B. नई फर्म की पुस्तकों में लेखा (Entries in the Books of New Firm)**

**1. पूर्व की सम्पत्तियों एवं दायित्वों को ले लेने पर (Assets and Liabilities of old Firms taken over)—पूर्व फर्म की सम्पत्तियों एवं दायित्वों को ले लेने पर निम्नलिखित प्रविष्टि की जाएगी—**

Sundry Assets A/c  
 To Sundry Liabilities  
 To Partner's Capital A/c

**2. Further capital, if any, contributed by partners—**

Bank A/c Dr.  
 To Partners' Capital A/c  
 (Being additional capital brought in by partners)

**3. Part of capital, if any withdrawn by partners—**

Partners' Capital A/c Dr.  
 To Bank a/c

**Illustration 14—**On 1st April, 1993, A & B and C & D, who have previously been engaged in competitive business agreed to amalgamate. The Balance Sheets of the two firms on 31st March, 1993, were as follows:

	A & B Rs.	C & D Rs.		A & B Rs.	C & D Rs.
Creditors	3,000	25,000	Stock	50,000	75,000
Bills Payable	6,000	—	Debtors	30,000	45,000
Bank overdraft	—	10,300	Premises	20,000	—
A's Capital	50,000	—	Plant and Machinery	5,000	20,000
B's Capital	50,000	—	Bank	1,500	—
C's Capital	—	52,500	Furniture	500	300
D's Capital	—	52,500	Investments	2,000	—
	1,09,000	1,40,300		1,09,000	1,40,300

A valuation of both businesses was made and it was agreed that Premises and Plant and Machinery belonging to A & B should be taken over by the new firm at s. 25,000 and Rs. 10,000 respectively. C & D were to be credited with Rs. 5,000 as the value of certain Patent Rights possessed by them not shown in the Balance Sheet but taken over by the new firm. All the other assets were taken over at the values stated in the Balance Sheets but investments of A & B were not taken over. Both firms undertook to discharge their liabilities and it was agreed that A and B should introduce cash to make their capital equal to total of C & D. Pass journal entries in the books of old firms and opening entries in the books of new firm. Also prepare the Balance Sheet of the new firm.

दोनों व्यवसायों का मूल्यांकन किया गया और यह सहमति हुई कि ए एण्ड बी के व्यवसाय से सम्बन्धित भवन (Premises) और प्लांट एण्ड मशीनरी नई फर्म द्वारा 25,000 रु. तथा 10000 रु. में क्रमशः ले लिए जाए। नई फर्म पेटेन्ट राईट जो स्थिति विवरण में नहीं दर्शाए गए 5000 रु. में ले लिए गए इस राशि से सी एण्ड डी को क्रेडिट कर दिया जाए। स्थिति विवरण में दिखाई गई सभी सम्पत्तियां को दर्शाई गई कीमत/मूल्य पर नई फर्म ने ले लिया परन्तु ए एण्ड बी के विनियोगों को नहीं लिया गया। दोनों फर्म अपने दायित्वों का भुगतान करने में सहमत हो गई। और यह भी सहमति हुई कि ए एण्ड बी पूंजी के लिए इतनी राशि लाएंगे कि वह सी एण्ड डी के बराबर हो जाए।

पुरानी फर्म की पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए और नई फर्म की पुस्तकों में आरम्भिक प्रविष्टियां कीजिए। नई फर्म का चिह्न भी बनाइए।

**Solution:**

**A & B'S JOURNAL**

		Rs.	Rs.
1993			
April 1	Plant and Machinery A/c Dr.	5,000	
	Premises A/c Dr.	5,000	
	To Profit and Loss Adjustment A/c		10,000
	(Being Plant and Machinery and Premises written up)		
April 1	Profit and Loss Adjustment A/c Dr.	10,000	
	To A's Capital A/c		5,000
	To B's Capital A/c		5,000
	(Being profit on revaluation divided between Partners)		
April 1	Creditors Dr.	3,000	
	Bills Payable A/c Dr.	6,000	
	To A's Capital A/c		4,500
	To B's Capital A/c		4,500
	(Being the transfer of liabilities not taken over by new firm to capital accounts in capital ratio)		
April 1	A's Capital A/c Dr.	1,000	
	B's Capital A/c Dr.	1,000	
	To Investments A/c		2,000
	(Being the transfer of Investments not taken over by new firm to capital accounts in capital ratio)		
April 1	A B C D Dr.	1,17,000	
	To Bank A/c		1,500
	To Stock A/c		50,000
	To Debtors A/c		30,000
	To Premises A/c		25,000
	To Plant and Machinery A/c		10,000
	To Furniture A/c		500
	(Being assets taken over by new firm)		

A's Capital A/c	Dr.	58,500	
B's Capital A/c	Dr.	58,500	
To A B C D			1,17,000
(Being the transfer of capital accounts to new firm)			

Note : The balance of capital account of each A and B has been calculated as to:

$$\text{Rs. } 50,000 + 5,000 + 4,500 - 1,000 = \text{Rs. } 58,500$$

### C & D'S JOURNAL

1993			Rs.	Rs.
April 1	Patent Rights A/c	Dr.	5,000	
	To Profit and Loss Adjustment A/c			5,000
	(Being Patent Rights brought into books)			
April 1	Profit and Loss Adjustment A/c	Dr.	5,000	
	To C's Capital A/c			2,500
	To D's Capital A/c			2,500
	(Being profit on revaluation divided between partners)			
April 1	Creditors	Dr.	25,000	
	Bank Overdraft A/c	Dr.	10,300	
	To C's Capital A/c			17,650
	To D's Capital A/c			17,650
	(Being the transfer of liabilities not taken over by new firm to the partners' capital accounts in Capital ratio)			
April 1	A B C D	Dr.	1,45,300	
	To Stock A/c			75,000
	To Debtors A/c			45,000
	To Plant and Machinery A/c			20,000
	To Patent Rights A/c			5,000
	To Furniture A/c			300
	(Being assets taken over by new firm)			
April 1	C's Capital A/c	Dr.	72,650	
	D's Capital A/c	Dr.	72,650	
	To A B C D			1,45,300
	(Being the transfer of partners' Capital accounts to New firm)			

The balance of capital account of each C and D has been calculated as to : Rs. 52,500 + 2,500 + 17,650 = Rs. 72,650

### A B C D'S JOURNAL

1993			Rs.	Rs.
April 1	Bank A/c	Dr.	1,500	
	Stock A/c	Dr.	50,000	
	Debtors A/c	Dr.	30,000	
	Premises A/c	Dr.	25,000	
	Plant and Mahinery A/c	Dr.	10,000	
	Furniture A/c	Dr.	500	
	To A's Capital A/c			58,500
	To B's Capital A/c			58,500
	(Being assets of A & B taken over)			

April 1	Stock A/c	Dr.	5,000	
	Debtors A/c	Dr.	45,000	
	Plant and Machinery A/c	Dr.	20,000	
	Patents Rights A/c	Dr.	5,000	
	Furniture A/c	Dr.	300	
	To C's Capital A/c			72,650
	To D's Capital A/c			72,650
	(Being assets of C & D taken over)			
April 1	Bank Account	Dr.	28,300	
	To A's Capital A/c			14,150
	To B's Capital A/c			14,150
	(Being cash brought in by A and B to make their capitals equal to C and D)			

**BALANCE SHEET OF A B C D AS ON 1ST APRIL, 1993**

	Rs.		Rs.
Capital A/cs:		Cash at Bank (Rs. 1500 + 28,300)	29,800
A 72,650		Sundry Debtors	75,000
B 72,650		Stock	1,25,000
C 72,650		Patent Rights	5,000
D 72,650		Furniture	800
	2,90,600	Plant and Machinery	30,000
		Premises	25,000
	2,90,600		2,90,600

**साझेदारी का अंत  
(Dissolution of Partnership)**

**अर्थ (Meaning)**

साझेदारी के विघटन का अर्थ साझेदारी व्यवसाय के संगठन की समाप्ति से होता है। यह फर्म के विघटन से भिन्न होता है क्योंकि फर्म का विघटन अधिक व्यापक है। किसी साझेदार के प्रवेश पर, अवकाश ग्रहण करने पर, दिवालिया होने पर अथवा साझेदारी संलेख (Partnership deed) में किसी प्रकार का संशोधन होने पर साझेदारी का विघटन (अन्त) हो जाता है, परन्तु फर्म बहुधा चलती रहती है उसका विघटन नहीं होता।

उदाहरण के लिए A, B, C और D साझेदार हैं तथा D अवकाश ग्रहण करता है तो इस दशा में A, B, C तथा D के मध्य पुरानी साझेदारी का अन्त हो जाता है परन्तु शेष साझेदार A, B तथा C के मध्य साझेदारी अस्तित्व में आ जाती है। इस दशा में फर्म पुरानी पुस्तकों के साथ व्यापार चालू रख सकती है जबकि किसी कारण से फर्म का व्यापार बन्द कर दिया जाता है तो वह फर्म का विघटन कहलाता है।

**परिभाषा (Definition)**

भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 की धारा 39 के अनुसार "किसी फर्म के सब साझेदारों के बीच साझेदारी का विघटन फर्म का विघटन कहलाता है।" अर्थात् फर्म का विघटन केवल उस स्थिति में होता है जबकि फर्म के व्यवसाय को ही समाप्त कर दिया जाता है।

**फर्म के विघटन के रूप (Modes of Dissolution of Firm)**

साझेदारी अधिनियम की धारा 39 से लेकर 55 तक साझेदारी के विघटन (समापन) से सम्बन्धित है। अधिनियम के अनुसार साझेदारी का अन्त निम्न प्रकार से हो सकता है—

**I. न्यायालय के हस्तक्षेप के बिना (Without the intervention of court)**

- (a) समझौते द्वारा (By agreement) (See 40)
- (b) सूचना द्वारा (By Notice) (See 43)
- (c) कानून द्वारा (By Law) (See 41)
- (d) विशेष घटना घटित होने पर (On Certain Contingencies) (See 42)

**II. न्यायालय द्वारा फर्म का विघटन (Dissolution of firm by Court)**

**I. न्यायालय के बिना हस्तक्षेप के विघटन (Dissolution without the intervention of the Court):** न्यायालय के बिना हस्तक्षेप के साझेदारी फर्म का समापन निम्नलिखित विधियों द्वारा हो सकता है:

**(A) समझौते द्वारा समाप्ति (Dissolution by agreement)**—सभी साझेदारों की सहमति अथवा साझेदारों के बीच किसी समझौते द्वारा फर्म का समापन किसी भी समय किया जा सकता है।

**(B) सूचना द्वारा समाप्ति (Dissolution by information)**—ऐच्छिक साझेदारी होने की दशा में कोई भी साझेदार नियमित रूप से नोटिस देकर उसे समाप्त कर सकता है। यदि नोटिस में किसी तारीख का उल्लेख किया गया हो, तो फर्म उसी दिन से समाप्त हो जाती है अन्यथा नोटिस की तिथि से फर्म समाप्त मानी जाती है।

**(C) अनिवार्य विघटन या कानून द्वारा विघटन (Compulsory Dissolution or Dissolution by Law)**—किसी भी साझेदारी फर्म का निम्न दशाओं में अनिवार्य विघटन किया जा सकता है:

- (i) जब एक साझेदार को छोड़कर अन्य के दिवालिया हो जाने पर या सभी साझेदारों के दिवालिया हो जाने पर।
- (ii) ऐसी किसी घटना के घटित होने पर जिसके कारण साझेदारी फर्म का व्यवसाय अवैध हो जाए।

**(D) कुछ विशेष घटनाओं के घटित होने पर विघटन (Dissolution on the happening of certain Contingencies)**—साझेदारों के बीच निम्न दशाओं के विरुद्ध कोई अनुबन्ध न होने पर निम्नलिखित दशाओं में फर्म का विघटन हो जाता है:

- (i) निश्चित अवधि की समाप्ति पर।
- (ii) फर्म का कार्य पूरा होने पर।
- (iii) किसी साझेदार की मृत्यु हो जाने पर।
- (iv) किसी साझेदार के दिवालिया हो जाने पर।

**II. न्यायालय द्वारा समापन (Dissolution by Court)**—धारा 44 के अनुसार किसी साझेदार द्वारा प्रार्थना पत्र देने पर निम्नलिखित परिस्थितियों में फर्म के विघटन के लिए न्यायालय आदेश दे सकता है—

- (1) जब कोई साझेदार पागल हो जाए।
- (2) जब मुकदमा चलाने वाले साझेदार के अस्तित्व अन्य कोई साझेदार साझी के रूप में अपने कर्तव्य पालन करने के स्थायी रूप से असमर्थ हो जाये।
- (3) जब मुकदमा चलाने वाली साझी के अलावा अन्य कोई साझी किसी ऐसे आचरण का दोषी हो जाये जो व्यवसाय को क्षति पहुँचाने वाला हो (Guilty of Misconduct)।
- (4) जब मुकदमा चलाने वाले साझी के अलावा अन्य कोई साझी जानबूझकर लगातार फर्म के प्रबन्ध सम्बन्धी ठहराव को तोड़े।
- (5) जब मुकदमा चलाने वाले साझी के अलावा कोई अन्य साझेदार बिना समस्त साझेदारों की सहमति के अपना अंश (Share) किसी तीसरे पक्ष को हस्तांतर कर दे।
- (6) जब व्यवसाय को और चालू रखने में केवल हानि होने की आशंका हो।
- (7) जब न्यायालय की दृष्टि में फर्म का विघटन उचित हो।

## साझेदारी फर्म की समाप्ति पर कार्य विधि (Procedure of Dissolution of Partnership Firm)

### अथवा

### लेखांकन व्यवहार (Accounting Treatment)

साझेदारी फर्म की समाप्ति पर फर्म के समस्त खातों को बन्द करना होता है। पुस्तकों में एक नया खाता वसूली खाता (Realisation Account) खोला जाता है। इसे सम्पत्ति विक्रय खाता भी कहते हैं। यह एक नाम मात्र खाता (Nominal Account) होता है। इस खाते को बनाने का प्रमुख उद्देश्य यह है कि फर्म के समापन पर सम्पत्तियों के विक्रय तथा दायित्वों के भूगतान करने पर फर्म को क्या लाभ-हानि हो रहा है। इसे ज्ञात करने के लिए साझेदारी की समस्त सम्पत्तियों को जो वसूली योग्य होती है वसूली खाते के डेबिट में स्थानान्तरित कर देते हैं और समस्त दायित्वों को जो देय योग्य है वसूली खाते के क्रेडिट पक्ष में स्थानान्तरित कर देते हैं।

### लेखांकन प्रविष्टियाँ (Accounting Entries)—

विघटन/समापन के समबन्ध में पुस्तकों में निम्न प्रविष्टियाँ की जाती हैं।

#### 1. विभिन्न सम्पत्तियों के खातों को बन्द करने के लिए प्रविष्टि:

(i) Realisation A/c Dr.....  
     To Each Assets A/c .....  
 (Being assets transferred at book value to the Realisation A/c.)

**Note:** (1) रोकड़ बैंक शेष तथा लाभ-हानि खाते का डेबिट शेष (Debit Balance) को छोड़कर सभी सम्पत्तियाँ वसूली खातों में पुस्तकीय मूल्य (Book value) पर हस्तांतरित की जाती हैं।

(2) केवल उन्हीं सम्पत्तियों को हस्तांतर करना चाहिए जिससे कोई नकदी प्राप्त हो सके।

(3) रोकड़ (Cash) तथा बैंक (Bank) को वसूली खाते में हस्तांतर नहीं किया जाता क्योंकि यह रकम स्वयं नकदी है इन दोनों खातों के शेष को रोकड़ खाते (Cash A/c) में हस्तांतर कर दिया जाता है।

(ii) विभिन्न आयोजनों एवं संचय सम्बन्धी खातों के शेष को वसूली खाते के क्रेडिट (Credit) पक्ष में हस्तांतरित किया जाएगा। इसके लिए निम्न प्रविष्टियाँ की जाएगी:

Provision for Depreciation A/c	Dr.	
Provision for Doubtful Debt A/c	Dr.	
Investment Fluctuation Fund A/c	Dr.	
Joint Life Policy Reserve A/c	Dr.	
To Realisation A/c		

(Being the various provisions and reserves transferred to Realisation Account.)

टिप्पणी: विशेष संचय का भुगतान नहीं किया जाता है, क्योंकि यह दायित्व नहीं है।

(iii) कभी-कभी लाभ-हानि खाते का डेबिट शेष अर्थात् हानियों तथा अमूर्तसम्पत्तियाँ जैसे असमाप्त विज्ञापन खर्च को फर्म के चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष में दिखाया गया होता है, तो उस दशा में यह शेष वसूली खाते में हस्तांतरित न करके साझेदारों के पूँजी खातों अथवा चालू खातों में लाभ-विभाजन के अनुपात में हस्तांतरित किया जाता है:

Partner's Capital/Current A/c	Dr.	
To Profit and Loss A/c		

(Being the debit balance of Profit and Loss Account transferred to Capital/Current A/c.)

2. दायित्वों के खातों को बन्द करने के लिए प्रविष्टियाँ—(i) विभिन्न दायित्वों के खातों को बन्द करने के लिए उन्हें पुस्तकीय मूल्य (Book value) पर वसूली खातों में हस्तांतरित किया जाएगा। इसके लिए निम्न प्रविष्टियाँ की जाएँगी:

(i) Outstanding Expenses A/c	Dr.	.....
Employees' Saving Fund A/c	Dr.	.....
Sundry Creditors A/c	Dr.	.....
Bills Payable A/c	Dr.	.....
Bank Overdraft A/c	Dr.	.....
To Realisation A/c		.....

(Being transfer of Sundry Liabilities to Realisation Account.)

नोट: (a) उन्हीं दायित्वों को जो तृतीय पक्ष (Third Party) से सम्बन्ध रखते हैं वसूली खाते में हस्तांतर करने चाहिए जैसे लेनदार (Creditors), बैंक अधिविकर्ष (Bank Over draft), देय बिल (Bills Payable) प्रोविडेंट फंड (Provident Fund) आदि।

(b) आन्तरिक दायित्वों जैसे साझेदारों के ऋणों को वसूली खातों में हस्तांतर न करके उनका प्रत्यक्ष भुगतान (Direct Payment) किया जाता है अर्थात् 'साझेदारों से ऋण' तथा 'पूँजी एवं चालू खातों के शेषों' को वसूली खाते में हस्तांतरित नहीं किया जाता।

(ii) साधारण संचय (General Reserve), संचय निधि (Rserve fund) तथा लाभ-हानि खातों का क्रेडिट (Credit) शेष साझेदारों के पूँजी खातों या चालू खातों में हस्तांतरित किया जाएगा। इसके लिए प्रविष्टि इस प्रकार से की जाएगी:

General Reserve A/c	Dr.	.....
Profit and Loss A/c	Dr.	.....
Reserve Funds A/c	Dr.	.....
To Partners Capital/Current A/cs		.....

(Being the credit balance of Profit and Loss Account/General

Reserve and Reserve Fund transferred to Capital/ Current Account.

3. सम्पत्तियों के वसूली पर प्रविष्टि: सम्पत्तियों को बाजार में बेचा जा सकता है; अथवा किसी साझेदार द्वारा क्रय किया जा सकता है; अथवा किसी साझेदार किसी लेनदार द्वारा आंशिक या पूर्ण भुगतान के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। इसके लिए निम्न प्रविष्टियाँ की जाएँगी:

(i) सम्पत्तियों की बाजार में नकद बिक्री करने पर:

Cash/Bank A/c	Dr.	.....
To Realisation A/c		.....

(ii) साझेदारों द्वारा सम्पत्ति लिए जाने पर:

Partner's Capital/Current A/c	Dr.	.....
To Realisation A/c		.....

(Being assets taken over by partner.)

**Note:** यदि फर्म में किसी लेनदार द्वारा आंशिक या पूर्ण भुगतान में सम्पत्ति की जाती है, तो सम्पत्ति की राशि को उन लेनदारों के दावे में से घटाकर लेखा किया जाता है।

4. दायित्वों का भुगतान करने पर:

(i) लेनदारों को नकद भुगतान करने पर (केवल भुगतान की गई रकम से):

Realisation A/c	Dr.	.....
To Cash/Bank A/c		.....

(Being liabilities paid in cash.)

(ii) किसी साझेदार द्वारा भुगतान की जिम्मेदारी लिए जाने पर:

Realisation A/c	Dr.	.....
To Partner's Capital/Current A/c		.....

(Being Partners agreed to pay liabilities.)

**5. वसूली व्ययों का भुगतान करने पर:**

- (i) फर्म के विघटन के लिए नकद भुगतान करने पर:

Realisation A/c	Dr.	.....
To Bank/Cash A/c		.....

(Being the realisation expenses paid.)

- (ii) कभी-कभी किसी साझेदार को निश्चित रकम अथवा कमीशन का भुगतान किया जाता है जिसके बदले वह साझेदार विघटन व्यय वहन करता है। इसके लिए निम्न प्रविष्टि की जाएगी:

Realisation A/c	Dr.	.....
To Partner's Capital/Current A/c		.....

(Being expenses paid by partner.)

- (iii) यह साझेदार विघटन व्यय वहन कर रहा है परन्तु उसका भुगतान फर्म के द्वारा किया जा रहा है तो इसके लिए निम्न प्रविष्टिया की जाएगी:

Partner's Capital/Current A/c	Dr.	.....
To Cash/Bank A/c		.....

(Being expenses paid by the firm on behalf of partner.)

**Note:** If the partner is to bear all expenses of realisation, **no journal entry** is required in the books of the firm.

**6. वसूली खाता बंद करना:**

- (i) लाभ होने की दशा में:

Realisation A/c	Dr.	.....
To Partner's Capital/Current A/c		.....

(Being the profit on realisation transferred to Capital Account.)

- (ii) हानि होने की दशा में:

Partner's Capital/Current A/c	Dr.	.....
To Realisation A/c		.....

(Being loss on realisation transferred to Capital/Current Accounts of the partners.)

**7. साझेदारों के ऋण का भुगतान करना—**यदि साझेदारों या किसी साझेदार न फर्म को अपनी पूँजी के अतिरिक्त कोई ऋण दिया है, तो उसके ऋण का भुगतान कर दिया जाता है। इसके लिए निम्न प्रविष्टि की जाएगी:

Partner's Loans A/c	Dr.	.....
To Cash/Bank A/c		.....

(Being amount paid for partner's loan.)

**8. सम्भाव्य दायित्व का लेखा—**यदि किसी सम्भाव्य (contingent) दायित्व का भुगतान फर्म के समापन पर करना पड़े, तो उस दशा में निम्न प्रविष्टि की जाएगी:

Realisation A/c	Dr.	.....
To Cash/Bank A/c		.....

(Being amount paid for contingent liabilities.)

**9. साझेदारों के चालू खातों को पूँजी खाते में हस्तांतरित करने की प्रविष्टि करना:**

- (i) चालू खाते का क्रेडिट शेष होने पर:

Partner's Current A/c	Dr.	.....
To Partners' Capital A/c		.....

(Being the balance of Current Accounts transferred to Partners' Capital Accounts.)

(ii) चालू खाते का डेबिट शेष होने पर:

Partner's Capital A/c Dr. ....  
 To Partners' Current A/c .....

(Being the balance of Current Accounts transferred to Partners' Capital Accounts.)

10. पूँजी खातों का भुगतान किए जाने पर निम्न प्रविष्टि की जाएगी:

(i) Partners' Capital A/c Dr. ....  
 To Cash/Bank A/c .....

(Being cash paid to partners.)

(ii) किसी साझेदार के पूँजी खाते का डेबिट शेष होने पर निम्न प्रविष्टि की जाएगी:

Cash/ Bank A/c Dr. ....  
 To Partner's Capital A/c .....

(Being share of deficiency brought in by the partner in cash.)

समापन की दशा में फर्म की लेखा पुस्तकें में निम्न चार खाते मुख्य रूप से तैयार किए जाते हैं। रोकड़ अथवा बैंक खाता (Cash or Bank Account) सबसे आखिर में बनाया जाता है सम्पत्तियों से प्राप्त रकम, दायित्वों, खर्चों तथा साझेदारों को देय रकम का भुगतान करने के पश्चात् रोकड़ खाते में कोई शेष नहीं बचता। इसका खाते के दोनों पक्षों का जोड़ हमेशा समान होता है जिसका आशय यह है कि समस्त खाते बन्द हो गये।

1. वसूली खाता (Realisation Account)
2. साझेदार का ऋण खाता (Partners' Loan Account)
3. साझेदारों के पूँजी खाते (Partners' Capital Accounts)
4. रोकड़ अथवा बैंक खाता (Cash or Bank Account)

**Illustration 15**—Sharma, Jain, Gill were partners in a firm sharing and losses in the ratio of 4 : 3 : 2. Following was their Balance Sheet as on 31st December, 1985:

शर्मा, जैन और गिल एक फर्म में 4 : 3 : 2 के अनुपात में लाभ-हानि का विभाजन करते हुए साझेदार थे। 31 दिसम्बर, 1985 को उनका निम्न चिट्ठा था:

Liabilities		Amount	Assets		Amount
		Rs.			Rs.
Creditors		12,000	Cash in hand		4,000
General Reserve		18,000	Cash at Bank		14,000
Bills Payable		7,000	Buildings		35,000
Sharma's Loan		15,000	Machinery		30,000
Capital Accounts:	Rs.		Furniture		10,000
Sharma	40,000				
Jain	30,000		Debtors	Rs. 22,000	
Gill	20,000		Less: Reserve for Bad		
		90,000	and Doubtful Debts	3,000	
Current Accounts:					19,000
Sharma	6,000		Stock		3,000
Gill	4,000		Goodwill		20,000
		10,000	Profit & Loss A/c		9,000
			Gill's Current A/c		8,000
		1,52,000			1,52,000

The partners decided to dissolve the firm as from 1st January, 1986 and assets realised as follow; Building Rs. 27,000, Machinery Rs. 25,000, Furniture Rs. 1,000, Debtors Rs. 15,000, Sharma took over the

(ii) चालू खाते का डेबिट शेष होने पर:

Partner's Capital A/c Dr. ....  
 To Partners' Current A/c .....

(Being the balance of Current Accounts transferred to Partners' Capital Accounts.)

10. पूँजी खातों का भुगतान किए जाने पर निम्न प्रविष्टि की जाएगी:

(i) Partners' Capital A/c Dr. ....  
 To Cash/Bank A/c .....

(Being cash paid to partners.)

(ii) किसी साझेदार के पूँजी खाते का डेबिट शेष होने पर निम्न प्रविष्टि की जाएगी:  
 Cash/ Bank A/c Dr. ....  
 To Partner's Capital A/c .....

(Being share of deficiency brought in by the partner in cash.)

समापन की दशा में फर्म की लेखा पुस्तकें में निम्न चार खाते मुख्य रूप से तैयार किए जाते हैं। रोकड़ अथवा बैंक खाता (Cash or Bank Account) सबसे आखिर में बनाया जाता है सम्पत्तियों से प्राप्त रकम, दायित्वों, खर्चों तथा साझेदारों को देय रकम का भुगतान करने के पश्चात रोकड़ खाते में कोई शेष नहीं बचता। इसका खाते के दोनों पक्षों का जोड़ हमेशा समान होता है जिसका आशय यह है कि समस्त खाते बन्द हो गये।

1. वसूली खाता (Realisation Account)
2. साझेदार का ऋण खाता (Partners' Loan Account)
3. साझेदारों के पूँजी खाते (Partners' Capital Accounts)
4. रोकड़ अथवा बैंक खाता (Cash or Bank Account)

**Illustration 15**—Sharma, Jain, Gill were partners in a firm sharing and losses in the ratio of 4 : 3 : 2. Following was their Balance Sheet as on 31st December, 1985:

शर्मा, जैन और गिल एक फर्म में 4 : 3 : 2 के अनुपात में लाभ-हानि का विभाजन करते हुए साझेदार थे। 31 दिसम्बर, 1985 को उनका निम्न-घिट्टा था:

<i>Liabilities</i>		<i>Amount</i>	<i>Assets</i>		<i>Amount</i>
		Rs.			Rs.
Creditors		12,000	Cash in hand		4,000
General Reserve		18,000	Cash at Bank		14,000
Bills Payable		7,000	Buildings		35,000
Sharma's Loan		15,000	Machinery		30,000
Capital Accounts:	Rs.		Furniture		10,000
Sharma	40,000			Rs.	
Jain	30,000		Debtors	22,000	
Gill	<u>20,000</u>		Less: Reserve for Bad		
		90,000	and Doubtful Debts	<u>3,000</u>	
Current Accounts:					19,000
Sharma	6,000		Stock		3,000
Gill	<u>4,000</u>		Goodwill		20,000
		10,000	Profit & Loss A/c		9,000
			Gill's Current A/c		<u>8,000</u>
		<u>1,52,000</u>			1,52,000

The partners decided to dissolve the firm as from 1st January, 1986 and assets realised as follow; Building Rs. 27,000, Machinery Rs. 25,000, Furniture Rs. 1,000, Debtors Rs. 15,000, Sharma took over the

Cash A/c To Bank A/c (Being Bank balance withdrawn.)	Dr.	14,000	14,000
Cash A/c To Realisation A/c (Being sale proceeds of assets.)	Dr.	68,000	68,000
Sharma's Capital A/c To Realisation A/c (Being stock taken over by Sharma.)	Dr.	3,000	3,000
Realisation A/c To Jain's Capital A/c (Being liability of Bills Payable assumed by Jain.)	Dr.	7,000	7,000
Realisation A/c To Cash A/c (Being creditors paid off @ 75 paise in a rupee.)	Dr.	9,000	9,000
Realisation A/c To Cash A/c (Being realisation expenses paid.)	Dr.	2,000	2,000
Sharma's Capital A/c Jain's Capital A/c Gill's Capital A/c To Realisation A/c (Being Loss on Realisation transferred.)	Dr. Dr. Dr.	20,000 15,000 10,000	45,000
Sharma's Loan A/c To Cash A/c (Being Sharma loan's paid off.)	Dr.	15,000	15,000
Sharma's Capital A/c Jain's Capital A/c Gill's Capital A/c To Cash A/c (Being balance of Partners' Capital Accounts paid.)	Dr. Dr. Dr. Dr.	27,000 29,000 4,000	60,000

## Ledger Accounts

Dr.	REALISATION ACCOUNT		Cr.
	Rs.		Rs.
To Building A/c	35,000	By Sundry Liabilities	
To Machinery A/c	30,000	Crs. B/P & Rs. for B. Debts)	22,000
To Furniture A/c	10,000	By Sharma's Capital A/c (Stock)	3,000
To Debtors A/c	22,000	By Cash (Sale Proceeds)	68,000
To Stock A/c	3,000	By Capital A/cs (Loss);	
To Goodwill A/c	20,000	Sharma	20,000
To Jain's Capital (B/P)	7,000	Jain	15,000
To Cash (Crs.)	9,000	Gill	10,000
To Cash A/c (Expenses)	2,000		45,000
	<u>1,38,000</u>		<u>1,38,000</u>

Dr.

## PARTNER'S CAPITAL ACCOUNTS

Cr.

Particulārs	Sharma	Jain	Gill	Particulars	Sharma	Jain	Gill
To Current A/c	—	—	8,000	By Balance b/d	40,000	30,000	20,000
To P & L A/c	4,000	3,000	2,000	By Gen. Reserve	8,000	6,000	4,000
To Realisation A/c (Stock)	3,000	—	—	By Current A/cs	6,000	4,000	—
To Realisation A/c (Loss)	20,000	15,000	10,000	By Realisation A/c (B/P)	—	7,000	—
To Cash A/c	27,000	29,000	4,000				
	54,000	47,000	24,000		54,000	47,000	24,000

Dr.

## SHARMA'S LOAN ACCOUNT

Cr.

	Rs.		Rs.
To Cash A/c	15,000	By Balance b/d	15,000
	<u>15,000</u>		<u>15,000</u>

Dr.

## CASH ACCOUNT

Cr.

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	4,000	By Realisation A/c (Crs.)	9,000
To Bank A/c	14,000	By Realisation A/c (Exp.)	2,000
To Realisation A/c	68,000	By Sharma's loan A/c	15,000
		By Sharma's Capital A/c	27,000
		By Jain's Capital A/c	29,000
		By Gill's Capital A/c	4,000
	<u>86,000</u>		<u>86,000</u>

**Calculations:**

(i) Cash realised for Sundry Assets:

	Rs.
Building	27,000
Machinery	25,000
Furniture	1,000
Debtors	15,000
	<u>68,000</u>

(ii) Amount paid to creditors:

$$75\% \text{ of Rs. } 12,000 = 12,000 \times 75/100 = \text{Rs. } 9,000.$$

**Note:** (अ) अप्राप्य ऋण संचय एक विशेष दायित्व है, जिसे सम्पत्ति के लिए रखा जाता है, इसलिए इसको वसूली खाते में हस्तांतरित कर देते हैं।

(ब) शर्मा का ऋण खाता वसूली खाते में हस्तांतरित नहीं किया जाएगा। इसका सीधा भुगतान रोकड़ से सभी दायित्वों के भुगतान के बाद किया जाएगा।

**Illustration 16:** A and B share profit in the ratio of 3 : 2. Their balance sheet as on 31st Dec. 1997 was as follows:

अ तथा ब लाभों को 3 : 2 के अनुपातों में बाँटते हैं। 31 दिसम्बर, 1997 को उनका चिट्ठा निम्न प्रकार था

<i>Liabilities</i>		<i>Rs.</i>	<i>Assets</i>		<i>Rs.</i>
Creditors		20,000	Cash at Bank		18,000
Loan from A		16,000		Rs.	
General Reserve		25,000	Debtors	40,000	
Capitals			Less: Provision	1,800	38,200
A	1,20,000		Stock		54,800
B	90,000	2,10,000	Investments		20,000
			Machinery		40,000
			Land & Building		1,00,000
		<u>2,71,000</u>			<u>2,71,000</u>

इस तिथि को साझेदारी ने फर्म को भंग करने का निर्णय किया। सम्पत्तियों से निम्न राशियाँ वसूल हुईं:

स्टॉक से 45,000 रु. मशीनरी से पुस्तक मूल्य का 20% कम, देनदारों से 35,000 रु., और भूमि तथा भवन से पुस्तक मूल्य से 30,000 रु. अधिक। विनियोगों को ए ने 15,000 रु. के निर्धारित मूल्य पर लिया।

लेनदार 5% कम राशि लेने को सहमत हो गए। सम्पत्तियों के वसूली व्यय 1,200 रु. हुए। एक टाइपराइटर जो कि फर्म के रुपयों में खरीदा गया था और जो पुस्तकों में नहीं दिखाया गया है 5,000 रु. में बेच दिया गया।

रोनामचा प्रविष्टियाँ तथा आवश्यक खाते बनाए।

Partners decide to dissolve the firm on the above date. Assets realised as follows:

Stock Rs. 45,000; Machinery 20% less than book value, Debtors Rs. 35,000. Land and Building Rs. 30,000 more than the book value. A took over investments at an agreed value of Rs. 15,000.

Creditors agreed to accept 5% less. Expenses of realisation of assets amounted to Rs. 1,200. There was typewriter in the firm, which was brought out of the firm's money, was not shown in the books of the firm. It is now sold for Rs. 5,000.

Prepare Journal entries and give necessary accounts.

**Solution**

#### JOURNAL ENTRIES

		<i>Rs.</i>	<i>Rs.</i>
Realisation A/c	Dr.	2,54,800	
To Debtors A/c			40,000
To Stock A/c			54,800
To Investments A/c			20,000
To Machinery A/c			40,000
To Land and Building A/c			1,00,000
<i>(For the transfer of various assets except cash to realisation a/c, at book values)</i>			
Creditors A/c	Dr.	20,000	
Provision for Doubtful Debts A/c	Dr.	1,800	
To Realisation A/c			21,800
<i>(For outside liabilities and provision transferred to realisation a/c at book values)</i>			
General Reserve A/c	Dr.	25,000	
To A's Capital A/c			15,000
To B's Capital A/c			10,000
<i>(For General Reserve credited to partner's capital account)</i>			

Bank A/c	Dr.	2,42,000	
To Realisation A/c			2,42,000
(For amount realised on sale of Assets:)			
Stock	Rs.	45,000	
Machinery		32,000	
Debtors		35,000	
Land & Buildings		1,30,000	
		2,42,000	
A's Capital A/c	Dr.	15,000	
To Realisation A/c			15,000
(For Investment taken over by A)			
Realisation A/c	Dr.	19,000	
To Bank A/c			19,000
(For Creditor paid at a discount of 5%)			
Realisation A/c	Dr.	1,200	
To Bank A/c			1,200
(For the payment of realisation expenses)			
Bank A/c	Dr.	5,000	
To Realisation A/c			5,000
(For the payment on sale of Typewriter)			
A's loan A/c	Dr.	16,000	
To Bank A/c			16,000
(For the payment of A's loan)			
Realisation A/c	Dr.	8,800	
To A's Capital A/c			5,280
To B's Capital A/c			3,520
(For profit on realisation transferred to partner's capital's accounts)			
A's Capital A/c	Dr.	1,25,280	
B's Capital A/c	Dr.	93,520	
To Bank A/c			2,18,800
(For final payment made to partners)			

## LEADGER ACCOUNTS

## Realisation A/c

	Rs.		Rs.
To Debtors A/c	40,000	By Creditors A/c	20,000
To Stock A/c	54,800	By Provision for Doubtful Debts A/c	1,800
To Investment A/c	20,000	By Bank A/c (Assets realised)	2,42,000
To Machinery A/c	40,000	By A's Capital A/c	
To Land & Building A/c	1,00,000	(Investment taken by A)	15,000
To Bank A/c		By Bank A/c	
(Creditors paid)	19,000	(Sale of Typewriter)	5,000
To Bank A/c (Expenses paid)	1,200		
(Profit on realisation)	Rs.		
A 3/5	5,280		
B 2/5	3,520		
	8,800		
	<u>2,83,800</u>		<u>2,83,800</u>

## A'S LOAN A/C

	Rs.		Rs.
To Bank A/c	16,000	By Balance b/d	16,000
	<u>16,000</u>		<u>16,000</u>

## CAPITAL ACCOUNTS

	Rs. A	Rs. B		Rs. A	Rs. B
To Realisation A/c (Investments taken)	15,000		By Balance b/d	1,20,000	90,000
To Bank A/c (Final Payment)	1,25,280	1,03,520	By General Reserve	15,000	10,000
	<u>1,40,280</u>	<u>1,03,520</u>	By Realisation A/c (Profit)	5,280	3,520
				<u>1,40,280</u>	<u>1,03,520</u>

## BANK A/C

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	18,000	By Realisation A/c (Creditors paid)	19,000
To Realisation A/c (Sale of assets)	2,42,000	By Realisation A/c (Expenses paid)	1,200
To Realisation A/c (Sale of Typewriter)	5,000	By A's loan A/c	16,000
	<u>2,65,000</u>	By A's Capital A/c	1,25,280
		By B's Capital A/c	1,03,520
			<u>2,65,000</u>

**Illustration 17:** आर तथा एस का 31 दिसम्बर, 1994 को चिट्ठा निम्न प्रकार था (The Balance Sheet of R and S as on 31 December, 1994 was as under):

## BALANCE SHEET

Liabilities		Rs.	Assets		Rs.
Creditors		20,000	Goodwill		18,000
R's Loan		10,000	Building		60,000
R's Brother's Loan		30,000	Stock		45,000
Capital Accounts:	Rs.		Debtors		18,000
R	30,000		Cash in Hand		6,000
S	<u>60,000</u>	90,000	Cash at Bank		3,000
		<u>1,50,000</u>			<u>1,50,000</u>

फर्म का 1 जनवरी, 1995 को समापन हो गया। देनदारों में 1,500 रु. डूब गये, ख्याति का कुछ भी वसूल नहीं हुआ। स्टॉक पुस्तक मूल्य से 10 प्रतिशत कम पर बिका तथा भवन से 90,000 रु. वसूल हुए। लेनदारों को 3% बट्टे पर भुगतान किया। समापन व्यय 1,500 रु. थे।

फर्म की पुस्तकों को बन्द करने के लिए जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए एवं आवश्यक खाते बनाइए।

The firm was dissolved on 1st January, 1995. Rs. 1,500 became bad out debtors and nothing could be realised of goodwill. Stock was sold at 10% less than book value and Building realised at Rs. 90,000. Creditors were paid off at discount of 3%. Dissolution expenses amounted of Rs. 1,500.

Pass Journal entries and prepare necessary accounts to close the books of the firm.

**Solution:**

## JOURNAL

		Rs.	Rs.
Realisation A/c	Dr.	1,41,000	
To Goodwill A/c			18,000
To Building A/c			60,000
To Stock A/c			45,000
To Debtors A/c			18,000
(For transfer of various assets to realisation a/c at their book value)			
Cash A/c	Dr.	3,000	
To Bank A/c			3,000
(For cash withdraw from bank)			
Creditors A/c	Dr.	20,000	
R's Brother's Loan A/c	Dr.	30,000	
To Realisation A/c			50,000
(For transfer of outside liabilities to realisation a/c at their book value)			
Cash A/c	Dr.	1,47,000 <sup>1</sup>	
To Realisation A/c			1,47,000
(For assets realised in cash)			
Realisation A/c	Dr.	1,500	
To Cash A/c			1,500
(For payment of dissolution expenses)			
Realisation A/c	Dr.	49,400 <sup>2</sup>	
To Cash A/c			49,400
(For payment of outside liabilities)			
R's Loan A/c	Dr.	10,000	
To Cash A/c			10,000
(For R's loan paid off)			
Realisation A/c	Dr.	5,100 <sup>4</sup>	
To R's Capital A/c			2,550
To S's Capital A/c			2,550
(For profit on realisation transferred to partners' capital a/cs in their profit sharing ratio)			
R's Capital A/c	Dr.	32,550	
S's Capital A/c	Dr.	62,550	
To Cash A/c			95,100
(For final payment made to the partners)			

## Necessary Accounts:

## Realisation Account

	Rs.		Rs.
To Goodwill A/c	18,000	By Creditors A/c	20,000
To Building A/c	60,000	By R's Brother's Loan A/c	30,000
To Stock A/c	45,000	By Cash A/c (assets realised)	1,47,000
To Debtors A/c	18,000		
To Cash A/c (expenses)		1,500	
To Cash A/c (liabilities paid) <sup>2</sup>	49,400		
	1,91,900		1,97,000
To Profit transferred to:	Rs.		
R's Capital 1/2	2,550		
S's Capital 1/2	2,550		
	5,100		
	1,97,000		1,97,000

## R'S LOAN ACCOUNT

	Rs.		Rs.
To Cash A/c	10,000	By Balance b/d	10,000

## CAPITAL ACCOUNTS

Particulars	R	S	Particulars	R	S
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Cash A/c (final payment)	32,550	62,550	By Balance b/d	30,000	60,000
	32,550	62,550	By Realisation A/c (profit)	2,550	2,550
				32,550	62,550

## CASH ACCOUNT

Receipts	Rs.	Payments	Rs.
To Balance b/d	6,000	By Realisation A/c (expenses)	1,500
To Bank A/c (withdrawal)	3,000	By Realisation A/c (liabilities)	49,400
To Realisation A/c (assets realised)	1,47,000	By R's Loan A/c	10,000
		By R's Capital A/c	32,550
		By S's Capital A/c	62,550
	1,56,000		1,56,000

Notes: 1. Assets realised or taken over by the partners:

	Cash
	Rs.
Debtors	16,500
Stock	40,500
Building	90,000
	<u>1,47,000</u>

## 2. Liabilities paid or taken over by the partners:

	<i>Cash</i> Rs.
Creditors (Rs. 20,000 – Rs. 600)	19,400
R's Brother's Loan	30,000 <sup>3</sup>
	49,400

3. If nothing is mentioned, it should be assumed that outside liabilities are paid in full. Hence, R's Brother's loan is paid in full.
4. It should be remembered before the payment of partners' capital, profit or loss disclosed by realisation account is to be transferred to partners' capital accounts in their profit sharing ratio. Thus, partner's capital account will not be completed unless profit or loss from realisation account is transferred to it.

**साझेदार का दिवालिया हो जाना (Insolvency of a Partner)**

भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 की धारा 42 के अनुसार, किसी भी साझेदार को न्यायालय द्वारा दिवालिया घोषित कर दिए जाने पर फर्म का समापन हो जाता है। इस अवस्था में दिवालिया घोषित हुए साझेदार की पूंजी की न्यूनता (पूँजी खाते का डेबिट शेष) को अन्य ऋण चुकाने में समर्थ साझेदारों द्वारा वहन किया जाता है।

यदि फर्म में केवल दो ही साझेदार हों तथा उनमें से एक साझेदार दिवालिया हो गया हो, तब दिवालिया साझेदार की पूंजी की न्यूनता को दूसरे साझेदार द्वारा पूर्ण रूप से वहन करना होगा। परन्तु यदि फर्म का एक साझेदार दिवालिया हो जाए तथा फर्म में दो या अधिक साझेदार ऋण चुकाने में समर्थ (solvent) हों, उस समय यह समस्या उत्पन्न हो जाती है कि दिवालिया साझेदार का पूंजी की न्यूनता को उन साझेदारों द्वारा किस प्रकार तथा किसी अनुपात में वहन किया जाएगा। इस सम्बन्ध में गार्नर बनाम मर्रे (Garner Vs. Murray Case) जानकारी होना अत्यन्त अनिवार्य है। जो इस प्रकार है। एक इंगलिश फर्म के तीन साझेदार थे गार्नर, मर्रे एवं विल्किन्स। ये तीनों फर्म के लाभों एवं हानियों को समान अनुपात में विभाजित किया करते थे किन्तु उनकी पूंजी समान नहीं थी। न्यायालय द्वारा इस फर्म का समापन कर दिया गया। फर्म के समापन के समय फर्म की स्थिति निम्नलिखित प्रकार थी—

**Balance Sheet of the firm as on 30th June, 1900**

Garner's Capital	£ 2,500	Cash	£ 1,916
Murray's Capital	314	Wilkins-deficiency	263
		Loss on Realisation	635
	2,814		2,814

वसूली की हानि 636 £ (पौंड) हुई और इसे समान अनुपात में विभाजन के पश्चात् विल्किन्स के पूंजी खाते का डेबिट शेष £ 475 हो गया। विल्किन्स के दिवालिया घोषित होने से उनकी व्यक्तिगत सम्पत्तियों से कुछ भी प्राप्त न हो सका। गार्नर £ 475 की इस हानि को लाभ-हानि विभाजन-अनुपात अर्थात् समान अनुपात में बाँटना चाहते थे परन्तु मर्रे ने यह तर्क दिया कि विल्किन्स के दिवालिया होने के कारण हुई हानि व्यावसायिक हानि (Business Loss) ने होकर पूंजीगत हानि (Capital Loss) है, अतः इसे पूंजी के अनुपात में बाँटा जाना चाहिए। विवाद को न्यायिक जाँच के लिए अदालत में प्रस्तुत किया गया।

**न्यायालय का निर्णय—माननीय न्यायाधीश जायस ने निम्नलिखित निर्णय दिया:**

- (i) दिवालिया साझेदार के पूंजी खाते के डेबिट शेष (कमी) (Deficiency) को सभी शोधक्षम्य (गैर-दिवालिया) (Non-Insolvent) साझेदार अपनी पूंजी के अनुपात में विभाजित करेंगे।

- (ii) वसूली खाते (Realisation A/c) द्वारा दर्शायी गई हानि को समस्त साझेदार (दिवालिया साझेदार सहित) अपने लाभ-हानि विभाजन-अनुपात में बाँटेंगे तथा क्षोभक्षम्य (गैर-दिवालिया) साझेदार (Solvent Partners) अपने हिस्से की हानि नकद लायेंगे।

### पूँजी अनुपात का अर्थ (Meaning of Capital Ratio)

यदि साझेदारों के पूँजी खाते साझेदारी के अस्तित्व के पूर्ण काल में नियत (fixed) रहे हैं, तब ऋण चुकाने के समर्थ साझेदारों को मौलिक नियत पूँजी की दिवालिया साझेदार की पूँजी की न्यूनता को विभाजित करने के लिए आधारस्वरूप प्रयोग में लाया जाएगा।

यदि साझेदारों के पूँजी खाते परिवर्तनीय (fluctuating) हैं, तो इस स्थिति में दिवालिया साझेदार की पूँजी की न्यूनता को अन्य साझेदारों द्वारा, फर्म के आर्थिक चिट्ठे में प्रदर्शित पूँजी में संचयों एवं लाभ-हानि खाते आदि के सम्बन्ध में सभी आवश्यक समायोजनाओं के पश्चात्, समायोजित पूँजी (किन्तु भुगतान-प्राप्ति की समायोजना रहित) के अनुपात में वहन किया जाएगा। यदि लाभ-हानि खाते अथवा संचय कोष या सामान्य संचय आदि में कोई भी शेष उपस्थित है तो इन शेषों को समस्त साझेदारों के पूँजी खातों में उनके लाभ-विभाजन अनुपात में स्थानान्तरित कर दिया जाना चाहिए, ताकि उनके पूँजी खातों का वह अनुपात ज्ञात किया जा सके जिस अनुपात में ऋण चुकाने में समर्थ साझेदारों द्वारा दिवालिया साझेदार की पूँजी की न्यूनता को वहन करना होगा।

### गार्नर बनाम मर्रे वाद के नियमों की भारतवर्ष में प्रयुक्तता (Applicability of Garner Vs. Muray Case in India)

गार्नर एवं मर्रे वाद में प्रतिपादित किए गए नियम भारतीय वादों में प्रयुक्त किया जाते हैं, क्योंकि भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932, के अन्तर्गत कोई भी ऐसा प्रावधान नहीं है जो इन नियमों का विरोध करता हो। भारतीय साझेदारी अधिनियम की धारा 48 के अन्तर्गत वर्णन किया गया है कि साझेदारों द्वारा किए गए अनुबन्ध के अनुसार फर्म की हानियों को (पूँजी की न्यूनता सहित) सर्वप्रथम लाभों में से पूर्ण किया जाएगा, तत्पश्चात् पूँजी में से तथा अन्त में यदि आवश्यक हो तो, साझेदारों द्वारा व्यक्तिगत रूप से उस अनुपात में जिसके अनुसार वे लाभों का विभाजन करने के अधिकारी हैं। इस प्रकार, साझेदार की पूँजी की न्यूनता सहित फर्म की हानियों को पूर्ण करने के लिए सर्वप्रथम साझेदारों की पूँजी को पूर्ण रूप से प्रयोग में लाया जाना चाहिए तत्पश्चात् ही उनकी व्यक्तिगत सम्पत्तियों को प्रयोग में लाया जा सकेगा। तथापि, साझेदार साझेदारी संलेख के अन्तर्गत एक विशिष्ट प्रावधान रखते हुए एक निश्चित अनुपात नियत कर सकते हैं, जिस अनुपात में उनको दिवालिया साझेदार की पूँजी की न्यूनता को वहन करना होगा। यदि इसके विपरीत कोई अन्य अनुबन्ध साझेदारों के मध्य नहीं है तो भारतीय वादों में गार्नर बनाम मर्रे नियम प्रयुक्त होंगे।

अतः इस नियम का भारत में प्रयोग के सम्बन्ध में कहा जा सकता है:

1. दिवालिया साझेदार के पूँजी खाते के डेबिट शेष (कमी) को अन्य सक्षम साझेदारों में उनके पूँजी-अनुपात में ही विभाजित करना चाहिए।
2. परन्तु भारत में वसूली खाते की हानि को सक्षम साझेदारों द्वारा नकदी में लाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह बाद में उन्हें ही वापिस किया जाता है।

नोट: यदि प्रश्न को स्पष्ट रूप से गार्नर बनाम मर्रे के नियम के अनुसार हल करने के लिए कहा गया तो सक्षम साझेदार वसूली की हानि को नकदी में लायेंगे अन्यथा नहीं।

**Illustration 18:** गार्नर, मर्रे तथा विल्किन्स फर्म में बराबर के साझेदार हैं। फर्म के विघटन के पश्चात् परन्तु खातों के निपटारों से पूर्व की स्थिति निम्न है।

(Garner, Murray and Wilkins were equal partners. The following was the position after dissolution but before settlement of accounts:

Capital Accounts पूँजी खाते :	£	£	Cash Balance रोकड़ शेष	£
Garner गार्नर	2,500		Wilkins Capital विल्किन्स पूँजी	1,915
Murray मर्रे	314	2,814	Realisation Loss वसूली हानि	263
		2,814		636
				2,814

विल्किन्स दिवालिया हो गया और उसकी सम्पत्तियों से कुछ भी प्राप्त न हो सका। (Wilkins proved to be bankrupt and could not contribute anything towards his capital deficiency.)

You are required to give necessary ledger accounts so as to show the final distribution among partners. साझेदारों में अन्तिम विभाजन/बटवारा हेतु आवश्यक खाते तैयार कीजिए।

**समाधान (Solution) :**

#### REALISATION ACCOUNT

To Balance b/d (Loss)	£	636	By Loss transferred to Cap. A/cs:	£	
			Garner 1/3	212	
			Murray 1/3	212	
			Wilkins 1/3	212	636
		636			636

#### CAPITAL ACCOUNTS

Particulars	Garner	Murray	Wilkins	Particulars	Garner	Murray	Wilkins
	£	£	£		£	£	£
To Balance b/d	—	—	263	By Balance b/d	2,500	314	—
To Realisation A/c (Loss)	212	212	212	By Cash A/c (Loss brought in cash)	212	212	—
To Wilkins Capital (Deficit)	422	53	—	By Garner's Capital	—	—	422
To Cash A/c (F. Payment)	2,078	261	—	By Murray's Capital	—	—	53
	2,712	526	475		2,712	526	475

#### CASH ACCOUNT

To Balance b/d	£	1,915	By Garner's Capital	£	2,078
To Garner's Capital		212	By Murray's Capital		261
To Murray's Capital		212			
		2,339			2,339

- Note:** 1. Garner and Murray being solvent partners have brought their share of realisation loss in Cash.  
2. Wilkins Capital deficiency of £ 475 is borne by Garner and Murray in their Capital Ratio (before dissolution), i.e., £ 2,500 : £ 314.

**Illustration 19:** A, B, C and D were partners sharing and losses in the ratio of 3 : 3 : 2 : 2 respectively. The following is their Balance Sheet as at 31st December, 1998:

Liabilities		Rs.	Assets		Rs.
Creditors		31,000	Cash at Bank	Rs.	4,000
A's Loan		20,000	Debtors	32,000	
Capital Accounts:	Rs.		Less: Provision	<u>1,000</u>	31,000
A	40,000		Stock		20,000
B	<u>30,000</u>	70,000	Furniture		8,000
			Car		14,000
			Capital Accounts:		
			C	12,000	
			D	<u>32,000</u>	44,000
		<u>1,21,000</u>			<u>1,21,000</u>

It was decided to dissolve the firm with effect from 31st December, 1998 and B was appointed to liquidate the assets and pay the creditors. He was entitled to receive 5% commission on the amounts finally paid to others partners including loans if any. He was to bear the expenses of realisation which amounted to Rs. 500. The assets realised Rs. 54,000. Creditors were paid in full. In addition a sum of Rs. 5,000 was also paid to staff on retrenchment in full settlement of their claims.

D was insolvent and the partners accepted Rs. 7,400 from his estate in settlement.

Applying the rule in Garner v. Murray, prepare necessary ledger accounts. (B. Com. K.U. 2002)

**Solution:**

#### REALISATION ACCOUNT

	Rs.		Rs.
To Debtors	32,000	By Provision for Doubtful Debts	1,000
To Stock	20,000	By Creditors	31,000
To Furniture	8,000	By Bank (Assets Realised)	54,000
To Car	14,000	By Capitals: (Loss Transferred)	
To Bank (Creditors)	31,000	A's Capital A/c	7,200
To Bank (Compensation)	5,000	B's Capital A/c	7,200
		C's Capital A/c	4,800
		D's Capital A/c	4,800
	<u>1,10,000</u>		<u>1,10,000</u>

Dr.

#### CAPITAL ACCOUNTS

Cr.

Particulars	A	B	C	D	Particulars	A	B	C	D
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
To Bal. b/d	—	—	12,000	32,000	By Bal. b/d	40,000	30,000	—	—
To Realisation A/c (Loss)	7,200	7,200	4,800	4,800	By Loan	20,000	—	—	—
To D's Capital	16,800	12,600	—	—	By Bank				
To Bal. c/d	43,200	17,400	—	—	(Realisation Loss brought in Cash)	7,200	7,200	—	—
					By Bank	—	—	—	7,400
					By A's Capital 4/7	—	—	—	16,800
					By B's Capital 3/7	—	—	—	12,600
					By Bank	—	—	16,800	—
	<u>67,200</u>	<u>37,200</u>	<u>16,800</u>	<u>36,800</u>		<u>67,200</u>	<u>37,200</u>	<u>16,800</u>	<u>36,800</u>

To B's Capital A/c	1,714			By Bal. b/d	43,200	17,400	
To Bank	41,486	19,114		By A's Capital A/c (5/105 of 36,000)		1,714	
	43,200	19,114			43,200	19,114	

## BANK ACCOUNT

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	4,000	By Realisation A/c (Creditors)	31,000
To Realisation A/c	54,000	By Realisation A/c (Compensation)	5,000
To A's Capital A/c (Realisation Loss brought in Cash)	7,200	By A's Capital A/c	41,486
To B's Capital A/c (Realisation Loss Brought in Cash)	7,200	By B's Capital A/c	19,114
To C's Capital A/c	16,800		
To D's Capital A/c	7,400		
	96,600		96,600

- Note:** 1. Since C has a debit balance in his Capital Account on the date of dissolution, he is not required to bear any proportion of the loss due to D's insolvency. Only A and B would have to share the deficiency of D in the ratio of 4 : 3.
2. As C is not insolvent, he will bring his debit balance in cash.
3. Commission payable to B has been calculated as under:

	Rs.
Balance of A's Capital A/c (Before allowing Commission)	43,700
Less: Amount of realisation loss brought in Cash by A	7,200
	36,000

$$\text{Commission} = 36,000 \times \frac{5}{105} = \text{Rs. } 1,714 \text{ (Approx.)}$$

**Illustration 20:** अ, ब तथा स फर्म के साझेदार हैं जो लाभों को बराबर अनुपात में बाँटें हैं। 31 मार्च, 1993 को समाप्त होने वाले वर्ष को फर्म का चिट्ठा निम्न है।

A, B and C are partners in a firm sharing profits and losses equality. Their Balance Sheet as on 31st March, 1993 has been as follows:

	Rs.		Rs.
Sundry Creditors विविध लेनदार	32,000	Cash in hand रोकड़ हस्त	4,000
General Reserve सामान्य संचय	9,000	Machinery मशीनरी	20,000
Capital पूँजी		Furniture फर्नीचर	8,000
अ A 8,000		Debtors देनदार	20,000
स C 6,000	14,000	B's Capital (debit balance)	3,000
	55,000	पूँजी-ब (डेबिट शेष)	55,000

The firm is dissolved. B is insolvent and is unable to contribute anything in payment of his debt to the firm. Machinery realised Rs. 15,000, furniture Rs. 3,200 and debtors Rs. 12,000. Creditors were paid at a discount of 5%. Prepare the necessary accounts in the books of the firm according to Garner Vs. Murray Rule:

- (i) When capitals are fixed, and  
(ii) When capitals are fluctuating

फर्म का समापन हो गया। 'ब' दिवालिया हो गया तथा वह फर्म के दायित्वों का भुगतान करने में असमर्थ है। मशीनरी 15,000 रु., फर्नीचर 32,00 रु. तथा देनदारों से 12,000 रु. वसूल हुए। लेनदारों को 5% कम पर भुगतान किया जाएगा। गार्नर बनाम मर्रे नियम को ध्यान में रखते हुए आवश्यक खाते तैयार कीजिए यदि

- (i) जब पूँजी खाते स्थिर हो।  
(ii) जब पूँजी खाते परिवर्तनशील हो।

**Solution:**

**REALISATION ACCOUNT**

	Rs.		Rs.
To Machinery A/c	20,000	By Creditors A/c	32,000
To Furniture A/c	8,000	By Cash A/c:	
To Debtors A/c	20,000	Machinery	15,000
To Cash A/c (creditors paid Rs. 32,000 – 1,600)	30,400	Furniture	3,200
		Debtors	12,000
		By Loss on Realisation transferred to:	30,200
		A (1/3)	5,400
		B (1/3)	5,400
		C (1/3)	5,400
	78,400		16,200
			78,400

(a) When capitals are fixed:

**Cash Account**

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	4,000	By Realisation A/c (creditors paid)	30,400
To Realisation A/c (assets realised)	30,200	By A's Capital A/c	7,914
To A's Capital A/c	5,400	By C's Capital A/c	6,686
To C's Capital A/c	5,400		
	45,000		45,000

**PARTNERS' CAPITAL ACCOUNTS**

	A Rs.	B Rs.	C Rs.		A Rs.	B Rs.	C Rs.
To Balance b/d	—	3,000	—	By Balance b/d	8,000	—	6,000
To Realisation A/c (Loss)	5,400	5,400	5,400	By General Reserve A/c	3,000	3,000	3,000
To B's Capital A/c (B's deficiency in 4 : 3 ratio)	3,086	—	2,314	By Cash A/c	5,400	—	5,400
To Cash A/c	7,914	—	66,86	By A's Capital A/c	—	3,086	—
	16,400	8,400	14,400	By C's Capital A/c	—	2,314	—
					16,400	8,400	14,400

**Note:** (i) Journal entry for cash brought in by solvent partners A and C to make up their share of loss on realisation is as follows:

Cash Account	Dr.	10,800	
To A's Capital A/c			5,400
To C's Capital A/c			5,400

(Being cash brought in by A and C to make up their share of loss on realisation)

(ii) Journal entry for capital deficiency of B of Rs. 5,400 to be borne by A and C in the ratio of their fixed capitals of Rs. 8,000 : 6,000 or 4 : 3, is as follows:

A's Capital A/c	Dr.	3,086	
C's Capital A/c	Dr.	2,314	
To B's Capital A/c			5,400

(Being B's deficiency of Rs. 5,400 borne by A and C in 4 : 3 ratio)

(iii) Share of capital deficiency of B to be borne by A and C has been calculated as follows:

Rs.

$$\text{A's share of deficiency} = 5,400 \times \frac{4}{7} = \text{Rs. } 3,086$$

$$\text{C's Share of deficiency} = 5,400 \times \frac{3}{7} = \text{Rs. } 2,314$$

(b) When capitals are fluctuating:

CASH ACCOUNT

To Balance b/d	Rs. 4,000	By Realisation A/c (creditors paid)	Rs. 30,400
To Realisation A/c (Assets realised)	30,200	By A's Capital A/c	8,030
To A's Capital A/c	5,400	By C's Capital A/c	6,570
To C's Capital A/c	5,400		
	<u>45,000</u>		<u>45,000</u>

PARTNERS' CAPITAL ACCOUNTS

	A	B	C		A	B	C
	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Balance b/d	—	3,000	—	By Balance b/d	8,000	—	6,000
To Realisation A/c (loss)	5,400	5,400	5,400	By General Reserve A/c	3,000	3,000	3,000
To B's Capital A/c				By Cash A/c	5,400	—	5,400
(B's deficiency in				By A's Capital A/c	—	2,970	—
11 : 9 ratio)	2,970	—	2,430	By C's Capital A/c	—	2,430	—
To Cash A/c	8,030	—	6,570				
	<u>16,400</u>	<u>8,400</u>	<u>14,400</u>		<u>16,400</u>	<u>8,400</u>	<u>14,400</u>

Note: B's capital deficiency amounting to Rs. 5,400 is to be borne by A and C in the ratio of their capitals of 11,000 : 9,000 or 11 : 9 as calculated below:

	A	C
	Rs.	Rs.
Capital balance	8,000	6,000
Share of General Reserve	3,000	3,000
Adjusted Capital	<u>11,000</u>	<u>9,000</u>

## साझेदारी फर्म का कम्पनी को विक्रय (Sale of Firm to a Company)

भारतीय कम्पनी अधिनियम 1956, के अन्तर्गत कम्पनियों को अनेक सुविधाएँ अथवा छूटे (Exemptions) प्राप्त हैं जैसे सीमित दायित्व, अंशों का हस्तांतरण, स्थाई अस्तित्व, जोखिम का बँटवारा, आयकर में छूट, बड़ी मात्रा में उत्पादन तथा पूँजी के विशाल साधन जिनका लाभ उठाने के लिए साझेदार अपनी फर्म को कम्पनी में परिवर्तित करा लेते हैं। परिवर्तित (Conversion) कराने का मुख्य उद्देश्य साझेदारी व्यवसाय में उनका असीमित दायित्व होता है। अतः कभी-कभी साझेदारी व्यवसाय का विक्रय किसी संयुक्त पूँजी कम्पनी को कर दिया जाता है या साझेदारी फर्म एक संयुक्त पूँजी कम्पनी में परिवर्तित हो जाती है। इसे साझेदारी व्यवसाय का कम्पनी को विक्रय अथवा फर्म का कम्पनी में परिवर्तन (Sale of Business to a company or conversion of firm into company) कहते हैं। इस दशा में साझेदारी फर्म को विक्रेता तथा विद्यमान कम्पनी (Existing Company) अथवा नवीन स्थापित कम्पनी (New Company) को क्रेता कहते हैं। साझेदारी का कम्पनी में परिवर्तन के पश्चात् साझेदारी फर्म का विघटन या समापन हो जाता है तथा सभी साझेदार कम्पनी के अंशधारी (Shareholders) बन जाते हैं। क्रेता कम्पनी द्वारा विक्रेता फर्म को उसका व्यवसाय क्रय करने के प्रतिफलस्वरूप चुकाया गया मूल्य क्रय मूल्य (Purchase Consideration) कहलाता है। क्रय मूल्य की गणना तीन तरीकों से की जा सकती है (i) एक मुश्त भुगतान (Lump Sum Method) (ii) शुद्ध भुगतान विधि (Net Payment Method) (iii) शुद्ध सम्पत्ति विधि (Net Assets Method) आदि। जिसका विस्तृत वर्णन इस प्रकार है:

(i) एक मुश्त भुगतान विधि (Lump Sum Method): इस विधि में क्रय मूल्य की कुल राशि स्पष्ट रूप से दी हुई होती है। उदाहरण के लिए, यदि ए लिमिटेड, एक फर्म के व्यवसाय को 2,00,000 रु. में क्रय करने को सहमत होती है तो यह एक मुश्त भुगतान का उदाहरण है। ऐसी दशा में यह मान लिया जाएगा किम यह राशि केवल साझेदारों के लिए दी गई है क्योंकि व्यवसाय (Business) क्रय करने का अर्थ विक्रेता की सभी सम्पत्तियों और दायित्वों को क्रय करने से है।

(ii) शुद्ध भुगतान विधि (Net Payment Method): साझेदारी फर्म के साझेदारों के लिए दिए सभी भुगतान क्रय मूल्य में सम्मिलित किए जाते हैं। ये भुगतान अंशों, ऋणपत्रों अथवा नकदी में हो सकते हैं। यदि विक्रेता द्वारा फर्म को चिट्ठे में दिखाए गई सम्पत्तियों तथा दायित्व के बदले 50,000 रु. नकद (Cash), 40,000 रु. के 10% वाले पूर्वाधिकार अंश तथा 60,000 रु. के समता अंश (प्रत्येक का मूल्य 10 रु.) क्रेता को देगी। इस दशा में क्रय मूल्य 1,50,000 रु. (50,000 + 40,000 + 60,000) होगा।

(iii) शुद्ध सम्पत्ति विधि (Net Assets Method): इस विधि में क्रय मूल्य की गणना क्रेता कम्पनी द्वारा ली गई समस्त सम्पत्तियों के सहमत मूल्य को जोड़कर उसमें से क्रेता कम्पनी द्वारा लिए गए दायित्वों के सहमत मूल्य को घटाकर की जाती है। सूत्र के रूप में:

Purchase Consideration Sundry Assets (taken over by purchasing Co. at an agreed value)

– Sundry Liabilities (taken over by purchasing Co. at an agreed value)

इस विधि से क्रय मूल्य की गणना करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए:

- (i) केवल उन्हीं सम्पत्तियों का सहमत मूल्य जोड़ना है जिन्हें क्रेता कम्पनी ले रही है।
- (ii) केवल उन्हीं दायित्वों का सहमत मूल्य घटाना है जिन्हें क्रेता कम्पनी ले रही है।
- (iii) प्रायः सम्पत्तियों में रोकड़ को शामिल किया जाता है परन्तु यदि रोकड़ को नहीं लिया गया है तो इसे शामिल नहीं किया जाता है। ख्याति (Goodwill) यद्यपि एक अदृश्य (Intangible) सम्पत्ति है परन्तु यह एक मूल्यवान (Valuable) सम्पत्ति है। अतः इसे सम्पत्तियों में शामिल किया जाता है। पूर्वदत्त व्यय (Prepaid Expenses) को भी सम्पत्तियों में शामिल किया जाता है।
- (iv) कृत्रिम सम्पत्तियों (Fictitious Assets) अथवा ऐसे व्ययों को जो अपलिखित नहीं किए गए हैं जैसे लाभ हानि खाते के डेबिट शेष, विज्ञापन व्यय आदि को कभी भी सम्मिलित नहीं किया जाता है।

## लेखांकन विधि (Accounting Treatment)

विक्रेता फर्म की पुस्तकों में लेखे (Entries in the books of Vendors firm): सम्पत्तियों और दायित्वों के हस्तांतरण के फलस्वरूप हुए लाभ-हानि की गणना के लिए एक वसूली खाता (Realisation Account) खोला जाता है। पुस्तकों को बन्द करने के लिए विक्रेता फर्म की पुस्तकों में निम्न प्रविष्टियाँ की जाती हैं:

### 1. सभी सम्पत्तियों का वसूली खाते (Realisation Account) में हस्तांतरण करने पर:

Realisation A/c Dr.  
To Sundry Assets (Individually)

(For transfer to various assets taken over by the purchasing Co. at book values.)

इस प्रविष्टि को बनाते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए:

- (हूअ) यदि क्रेता कम्पनी नकद और बैंक शेष को नहीं लेती है तो इन्हें वसूली खाते में हस्तांतरित नहीं करना चाहिए।
- (हूब) कृत्रिम सम्पत्तियों जैसे लाभ-हानि खाते के डेबिट शेष, विज्ञापन व्यय आदि को वसूली खाते में हस्तांतरित नहीं करना चाहिए। इन्हें साझेदारों के पूँजी खाते में उनके लाभ वितरण अनुपात में बाँट कर हस्तांतरित किया जाता है।
- (स) ख्याति एवं अन्य अदृश्य सम्पत्तियों (Intangible Assets) जैसे पूर्वदत्त व्यय, व्यापार चिन्ह, एकस्व अधिकार (Patent Rights) को स्थिति वितरण में दिए गए मूल्यों पर वसूली खाते में अवश्य ही हस्तांतरण कर देना चाहिए।
- (द) यदि किसी सम्पत्ति पर कोई आयोजन बनाया गया है तो ऐसी सम्पत्ति को इसके सकल मूल्य (Gross Value) पर ही वसूली खाते में हस्तांतरित किया जाता है और इसके आयोजन को दायित्वों के साथ हस्तांतरित किया जात है। मान लीजिए 1,00,000 रु. के कुल देनदार (Debtors) हैं जिन पर 5,000 रु. को आयोजन बनाया हुआ है, तो ऐसी दशा में देनदारों को 1,00,000 रु. पर ही वसूली खाते में हस्तांतरित किया जाएगा और 5,000 रु. के आयोजन को दायित्वों के साथ अलग से वसूली खाते में हस्तांतरित किया जाएगा।

### 2. सभी दायित्वों का वसूली खाते में हस्तांतरण करने पर:

Liabilities A/c (Individually) Dr.  
To Realisation A/c

(For transfer to various liabilities taken over by the purchasing Co. at book values.)

यह ध्यान रखना चाहिए कि संचित लाभों जैसे कि लाभ-हानि खाते का क्रेडिट शेष, सामान्य संचय आदि को भी वसूली खाते में हस्तांतरित नहीं किया जाता है। इन्हें सीधे ही साझेदारी के पूँजी खाते उनके लाभ वितरण अनुपात में बाँटकर लिखा जाता है।

### 3. क्रेता कम्पनी द्वारा लिए जाने वाले क्रय मूल्य के लिए:

Purchasing Company Dr.  
To Realisation A/c

(For purchase consideration dur.)

## 4. क्रय मूल्य प्राप्त होने पर:

Bank A/c	Dr.
Shares in Purchasing Co. A/c	Dr.
To Purchasing Company	
(For purchase consideration received.)	

## 5. जिन सम्पत्तियों को क्रेता कम्पनी नहीं लिया हो उन सम्पत्तियों को बेचकर प्राप्त धनराशि के लिए:

Bank A/c	Dr.
Realisation A/c	Dr. (in case of loss on the sale of such assets)
To Assets A/c	
(For cash recovered on sales of assets)	

## 6. जिन दायित्वों को क्रेता कम्पनी ने नहीं लिया है तो उसके भुगतान के लिए:

Liabilities A/c (Individually)	Dr.
Realisation A/c	Dr. (if excess payment is made)
To Bank A/c	
(For liabilities met)	

## 7. (हूहूअ) समापन व्ययों के भुगतान के लिए (यदि यह विक्रेता फर्म के द्वारा स्वयं वहन किए जाते हैं):

Realisation A/c	Dr.
To Bank A/c	
(For payment of expenses of liquidation)	

(ब) यदि समापन व्यय का भुगतान क्रेता कम्पनी ने करना स्वीकार कर लिया है तो इन व्ययों के लिए कोई भी प्रविष्टि न की जाए।

## 8. किसी ऐसे दायित्व के उत्पन्न होने व उसका भुगतान के लिए जो चिट्ठे में नहीं दिखाया गया है:

Realisation A/c	Dr.
To Bank A/c	
(For the payment of contingent liabilities)	

## 9. वसूली खाते में हुए लाभ के लिए:

Realisation A/c	Dr.
To Partners' Capital A/c	Dr.
(For profit on realisation transferred to partner's capital a/c)	

## 10. वसूली खाते में हुई हानि के लिए:

Partners' Capital A/c	Dr.
To Realisation A/c	
(For loss on realisation transferred)	

## 11. साझेदारों की भुगतान करने पर:

Partners' Capital A/c	Dr.
To Bank A/c	
To Shares in Purchasing Co.	
(For cash and shares distributed amongst partners.)	

## क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में लेखे (Entries in the Books of Purchasing Company)

क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में निम्नलिखित प्रविष्टियाँ बनायी जाती हैं:

### 1. क्रय प्रतिफल का लेखा करने के लिए:

Business Purchase A/c Dr.  
To Vendoer's firm A/c  
(For purchase consideration becoming due.)

### 2. ली गई सम्पत्तियों और दायित्वों का लेखा करने के लिए:

(i) यदि निम्नलिखित प्रविष्टि में क्रेडिट पक्ष को जोड़ डेबिट पक्ष के से अधिक है तो ऐसे आधिपक्य को ख्याति मानते हुए ख्याति खाते में डेबिट किया जाता है:

Sundry Assets A/c (Individually) Dr. (at revised valus, if any, otherwise at book value.  
Goodwill A/c (Balancing Figure) Dr. (Missing Figure)  
To Sundry Liabilities A/c (Individually) (at revised values, if any, otherwise at book value)  
To Business Purchase A/c (with the purchase consideration)  
(For assets and liabilities taken over Goodwill will be the balancing figure)

(ii) यदि उपर्युक्त प्रविष्टि में डेबिट पक्ष का जोड़ क्रेडिट पक्ष के जोड़ से अधिक आता है तो ऐसे आधिक्य से Capital Reserve A/c को क्रेडिट किया जाता है। ऐसी दशा में उपर्युक्त प्रविष्टि निम्न प्रकार बनाई जायेगी:

Sundry Assets A/c (Individually) (excluding Goodwill) Dr. (at revised values,  
if any, other wise at book value)  
To Sundry Liabilities A/c (Individually) (at revised values, if any, otherwise  
at a book value)  
To Business Purchase A/c (Missing Figure) (with the purchase consideration)  
To Capital Reserve (Balancing Figure)  
(For assets and Liabilities taken over capital reserve will be  
the balance figure)

### 3. क्रय मूल्य के भुगतान पर:

Vendor's Firm A/c Dr. (with the purchase consideration)  
To Share Capital A/c (with the face value)  
To Bank A/c  
(For purchase consideration received)

टिप्पणी: (i) यदि अंशों का आबंटन प्रीमियम पर किया जाता है, तो उपर्युक्त प्रविष्टि में 'प्रतिभूति प्रीमियम खाते (Securities Premium A/c)' का क्रेडिट किया जाएगा। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि कम्पनी (संशोधन) अधिनियम 1999 के अनुसार, अब 'Share Premium A/c' के स्थान पर 'Securities Premium A/c' प्रतिस्थापित कर दिया गया है।

(ii) यदि अंशों का आबंटन कटौती पर किया जाता है तो उपरोक्त प्रविष्टि में अंश कटौती खाते को डेबिट किया जाएगा।

### 4. क्रेता कम्पनी द्वारा विक्रेता फर्म के समापन व्ययों का भुगतान करने पर:

Goodwill A/c or Capital Reserve A/c Dr.  
To Bank

### 5. क्रेता कम्पनी के लिए Formation Expenses करने पर:

Preliminary Expenses A/c Dr.  
To Bank

6. यदि प्रश्न में ख्याति खाता और पूँजी संचय खाता दोनों हो, तो ख्याति को पूँजी संचय से अपलिखित किया जा सकता है।

Capital Reserve A/c  
To Goodwill A/c

Dr.

**Illustration 21**—अनिल तथा बिन्नी साझेदारी फर्म के साझेदार लाभों को समानुपात में बाँटते थे। 31 मार्च, 1992 को फर्म को चिट्ठा निम्न था।

Anil and Binny were partners in a firm sharing profits and Losses equally. Their Balance Sheet as on 31st March, 1992 stood as under:

Liabilities	Rs.	Assets	Rs.
Capitals पूँजी		Premises भवन	88,000
Anil अनिल	1,20,000	Machinery मशीनरी	50,000
Binny बिन्नी	80,000	Stock स्टॉक	44,000
Creditors लेनदार	14,800	Debtors देनदार	17,500
		Bank बैंक	11,000
		Investments (considered valueless)	4,300
		विनियोग (मूल्य रहित)	
	2,14,800		2,14,800

A limited company with an authorised capital Rs. 5 lakhs in Equity Shares of Rs. 10 each was formed to acquire the business of the partnership. The firm agreed to pay the creditors. The company took over the whole concern with the exception of the bank balance and investments for Rs. 2,40,000 payable in 20,000 Equity Shares of Rs. 10 each and balance in cash. The expenses on realisation amounted to Rs. 200.

Close the books of the firm by preparing the necessary ledger accounts.

साझेदारी फर्म का व्यवसाय प्राप्त करने के उद्देश्य से सीमित दायित्व वाली कम्पनी का 5 लाख रु. की अधिकृत पूँजी (प्रत्येक समता अंश की कीमत 10 रु.) के साथ निर्माण किया गया फर्म लेनदारों को भुगतान करने के लिए सहमत हो गई। कम्पनी ने बैंक शेष तथा विनियोगों को छोड़कर सभी सम्पत्तियाँ 2,40,000 रु. में प्राप्त की। इसके बदले कम्पनी ने 20,000 रु. समता अंश (प्रति अंश 10 रु.) तथा शेष नकद देना है। समापन खर्च 200 रु. हुए।

आवश्यक खाते बनाते हुए फर्म के खाते बन्द कीजिए।

#### REALISATION ACCOUNT

	Rs.		Rs.
To Premises A/c	88,000	By Purchasing Company (Purchase Consideration)	2,40,000
To Machinery A/c	50,000		
To Stock A/c	44,000		
To Debtors A/c	17,500		
To Bank A/c (Expenses)	200		
To Profit on Realisation transferred to:			
Anil (1/2)	20,150		
Binny (1/2)	20,150		
	40,300		
	2,40,000		2,40,000

## BANK ACCOUNT

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	11,000	By Creditors A/c	14,800
		By Realisation A/c	200
To Purchasing Company	40,000	By Anil's Capital A/c	21,050
		By Binny's Capital A/c	14,950
	51,000		51,000

## CREDITORS ACCOUNT

	Rs.		Rs.
To Bank A/c	14,800	By Balance b/d	14,800
	14,800		14,800

## PURCHASING COMPANY

	Rs.		Rs.
To Realisation A/c (Purchase Consideration)	2,40,000	By Shares A/c	2,00,000
	2,40,000	By Bank A/c	40,000
	2,40,000		2,40,000

## SHARES ACCOUNT

	Rs.		Rs.
To Purchasing company	2,00,000	By Anil's Capital A/c	1,16,950
		By Binny's Capital A/c	83,050
	2,00,000		2,00,000

## PARTNERS' CAPITAL ACCOUNTS

	Anil Rs.	Binny Rs.		Anil Rs.	Binny Rs.
To Investments A/c (Valueless)	2,150	2,150	By Balance b/d	1,20,000	80,000
To Shares A/c	1,16,950	83,050	By Realisation A/c (Profit)	20,150	20,150
To Bank A/c	21,050	14,950			
	1,40,150	1,00,150		1,40,150	1,00,150

## Notes:

- (i) Investments considered to be values are to be transferred to partners' capital account by way of loss in their profit sharing ratio.
- (ii) 20,000 Equity Shares of Rs. 10 each received from purchasing company have been divided between Anil and Binny in their final claims ratio of 1,38,000 (i.e., 1,20,000 + 20,150 - 2,150) and 98,000 (i.e., 80,000 + 20,150 - 2,150) or 69 : 49.

Number of shares received by:

$$(a) \text{ Anil} = 20,000 \times \frac{69}{118} = 11,695 \text{ shares of Rs. 10 each}$$

$$(b) \text{ Binny} = 20,000 \times \frac{49}{118} = 8,305 \text{ shares of Rs. 10 each}$$

**Illustration 22**—31 दिसम्बर, 1998 को A, B तथा C का स्थिति विवरण निम्न प्रकार था:

The Balance Sheet of A, B and C stood as follows on 31st Dec., 1998:

	Rs.		Rs.
लेनदार (Creditors)	17,000	बैंक में रोकड़ (Cash at Bank)	6,200
देय विपत्र (Bills Payable)	1,200	देनदार (Debtors)	20,000
पूँजी खाते (Capital A/cs)		स्कन्ध (Stock)	22,000
A	20,000	संयन्त्र एवं यन्त्र (Machinery and Plant)	15,000
B	20,000	उपस्कर (Furniture)	1,500
C	10,000	ख्याति (Goodwill)	4,500
संदिग्ध ऋण के लिये आयोजन (Prov. for Doubtful Debts)	1,000		
	69,200		69,200

यह निश्चय हुआ कि व्यापार एक्स कम्पनी लि. को इस शर्त पर बेच दिया जाए कि कम्पनी क्रय-मूल्य का पूर्ण भुगतान में 6,000 पूर्णदत्त अंश, प्रत्येक 10 रु. के आबंटित करे। कम्पनी ने देय विपत्र के अतिरिक्त कुल दायित्व तथा बैंक से रोकड़ के अतिरिक्त कुल सम्पत्ति ले ली। साझेदार लाभालाभ को 1/2, 1/3 तथा 1/6 के अनुपात में बाँटते हैं।

फर्म की पुस्तकों में साझेदारों को अन्तिम भुगतान दिखाने के लिए आवश्यक प्रविष्टियाँ तथा लेखे तैयार कीजिए। कम्पनी की पुस्तकों में भी रोजनामचे की प्रविष्टियाँ तथा चिट्ठा बनाइये।

**Solution:**

**In Books of Firm (Vendor)  
JOURNAL**

		Rs.	Rs.
Realisation A/c	Dr.	63,000	
To Debtors A/c			20,000
To Stock A/c			22,000
To Machinery & Plant A/c			15,000
To Furniture A/c			1,500
To Goodwill A/c			4,500
(For assets taken over by the X Co. Ltd. transferred to realisation a/c)			
Creditors A/c	Dr.	17,000	
Provision for Doubtful Debts A/c	Dr.	1,000	
To Realisation A/c			18,000
(For liabilities taken over by the X Co. Ltd transferred to realisation a/c)			
X Co. Ltd	Dr.	60,000	
To Realisation A/c			60,000
(For purchase consideration due from X Co. Ltd.)			
Shares in X Co. Ltd.	Dr.	60,000	
To X Co. Ltd.			60,000
(For purchase consideration receive)			

Bills Payable A/c To Bank A/c (For bills payable paid off)	Dr.	1,200	1,200
Realisation A/c To A's Capital A/c To B's Capital A/c To C's Capital A/c (For profit on realisation transferred to partner's a/cs)	Dr.	15,000	7,500 5,000 2,500
A's Capital A/c B's Capital A/c C's Capital A/c To Shares in X Co. Ltd. (For Shares in X Co. Ltd. distributed amongst partners in the ratio of adjusted capital i.e. 27,500 : 25,000 : 12,500 or 11 : 10 : 5)	Dr. Dr. Dr.	25,380 23,080 11,540	60,000
A's Capital A/c B's Capital A/c C's Capital A/c To Bank A/c (Distribution of bank balance amongst the partners)	Dr. Dr. Dr.	2,120 1,920 960	5,000

**Ledger Accounts**  
**REALISATION ACCOUNT**

To Sundry Debtors A/c	Rs. 20,000	By Creditors A/c	Rs. 17,000
To Stock A/c	22,000	By Provision for Doubtful Debts A/c	1,000
To Machinery and Plant A/c	15,000	By X Co. Ltd. (Purchase consideration)	60,000
To Furniture A/c	1,500		
To Goodwill A/c	4,500		
To Profit transferred to Capital A/cs:			
A      3/6      7,500			
B      2/6      5,000			
C      1/6      2,500			
	15,000		
	78,000		78,000

**PARTNER'S CAPITAL ACCOUNT**

Particulars	A	B	C	Particulars	A	B	C
	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Balance c/d (Adjusted Capital)	27,500	25,000	12,500	By Balance b/d	20,000	20,000	10,000
	27,500	25,000	12,500	By Realisation A/c	7,500	5,000	2,500
					27,500	25,000	12,500
To Shares in X Co. Ltd.	25,380	23,080	11,540	By Balance b/d (Adjusted Capital)	27,500	25,000	12,500
To Bank A/c (Final Payment)	2,120	1,920	960				
	27,500	25,000	12,500		27,500	25,000	12,500

## BANK ACCOUNT

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	6,200	By Bills Payable	1,200
		By A's Capital A/c	2,120
		By B's Capital A/c	1,920
		By C's Capital A/c	960
	6,200		6,200

## X CO. LTD.

	Rs.		Rs.
To Realisation A/c	60,000	By Shares in X Co. Ltd.	60,000

## SHARES IN X CO. LTD. ACCOUNT

	Rs.		Rs.
To X Co. Ltd.	60,000	By A's Capital A/c	25,380
		By B's Capital A/c	23,080
		By C's Capital A/c	13,540
	60,000		60,000

टिप्पणी: सूचना के अभाव में, क्रय मूल्य का साझेदारों में उनकी समायोजित पूँजी अनुपात में बटवारा, जोकि 27,500 : 25,000 : 12,500 अर्थात् 11 : 10 : 5 बनता है। अतः

$$ए = 60,000 \times \frac{11}{26} = 25,384.62 \text{ या } 25,380 \text{ रु.}$$

$$बी = 60,000 \times \frac{10}{26} = 23,076.92 \text{ या } 23,080 \text{ रु.}$$

$$सी = 60,000 \times \frac{5}{26} = 11,538.46 \text{ या } 11,540 \text{ रु.}$$

साझेदारों को कम्पनी के पूर्ण अंश देने के लिए उनके भागों को समायोजित करना आवश्यक है क्योंकि कम्पनी अंश पर कीमत 10 रु. प्रति अंश है, अतः हिस्से की राशि 10 रु. पर भाग हो जाए। इसलिए साझेदारों के क्रय प्रतिफल हिस्से 5 रु. में Round off कर दिया गया है।

## In the books of X Ltd (Purchasing Co.)

## JOURNAL

		Rs.	Rs.
Business Purchase A/c	Dr.	60,000	
To Vendor's Firm A/c			60,000
(For purchase consideration becoming due)			
Debtors A/c	Dr.	20,000	
Stock A/c	Dr.	22,000	
Machinery A/c	Dr.	15,000	
Furniture A/c	Dr.	1,500	

Goodwill A/c (Banking figure)	Dr.	19,500	
To Creditors A/c			17,000
To Provision for Doubtful Debts			1,000
To Business Purchase A/c			60,000
(For assets and liabilities taken over by X Co. Ltd. and record of purchases price)			
Vendor's Firm A/c	Dr.	60,000	
To Share Capital A/c			60,000
(For purchase consideration price)			

## BALANCE SHEET

	Rs.		Rs.
Share Capital:		Fixed Assets:	
6,000 Equity shares of Rs. 10 each	60,000	Goodwill	19,500
Current Liabilities:		Machinery & Plant	15,000
Creditors	17,000	Furniture	1,500
		Current Assets:	
		Debtors	20,000
		Less: Provision for Doubtful Debts	1,000
		Stock	22,000
	<u>77,000</u>		<u>77,000</u>

### सम्पत्तियों का क्रमिक भुगतान प्राप्त करना तथा खण्ड वितरण (Gradual Realisation of Assets and Piecemeal Distribution)

साझेदारी फर्म के समापन के अन्तर्गत सम्पत्तियों का भुगतान प्राप्त करना, दायित्वों का भुगतान करना तथा साझेदारों के दावों का निपटारा करना आदि कार्यों का समावेश होता है। फर्म के समापन की तिथि में ही समस्त सम्पत्तियों का भुगतान प्राप्त कर लेना व्यावहारिक दृष्टिकोण से सम्भव नहीं होता विशेषरूप से देनदारों आदि। अतः समापित फर्म की सम्पत्तियों का भुगतान प्राप्त करने में पर्याप्त समय लग जाता है तथा इसी को सम्पत्तियों का 'क्रमिक भुगतान करना' कहा जाता है।

क्रमिक भुगतान प्राप्ति की दशा में, सम्पत्तियों को विक्रय करके नकद राशि में भुगतान प्राप्त किया जाता है। वास्तविक व्यवहार के अन्तर्गत, यह अप्राकृतिक व्यवहार होगा कि सर्वप्रथम तो समस्त सम्पत्तियों का भुगतान प्राप्त कर लिया जाए एवं तत्पश्चात् भुगतान किया जाना आरम्भ किया जाए। अतः जैसे जैसे क्रमिक भुगतान प्राप्त होता जाता है उसी प्रकार क्रमिक भुगतान भी किया जाना उपयुक्त होता है। इस प्रकार, क्रमिक भुगतान किए जाने को अथवा क्रमिक वितरण को ही 'खण्ड-वितरण' कहा जाता है।

**खण्ड-वितरण के अन्तर्गत भुगतान का क्रम (Order of payments under Piecemeal Distribution):** खण्ड-वितरण के अन्तर्गत, सम्पत्तियों से प्राप्त धनराशि में से भुगतान प्राप्ति से सम्बन्धित व्ययों को घटाकर शेष राशि को वितरित किया जाता है। इस प्रकार के वितरण का क्रम भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 की धारा 48 (b) के अनुसार होना चाहिए जो कि निम्न प्रकार से है—

- बाहय लेनदारों/दायित्वों का भुगतान,
- साझेदारों के ऋणों का भुगतान,
- साझेदारों का पूँजी का भुगतान तथा
- साझेदारों को उनके लाभ विभाजन अनुपात में आधिक्य का भुगतान।

A, B और C की पूँजी क्रमवार 12,000 रु., 24,000 रु. तथा 36,000 रु. है। जबकि उनका लाभ-विभाजन अनुपात 2 : 2 : 1 है। कोष (Reserve) खाते में बाकी 8,000 रु. हैं। बाहरी देय के निपटारे के पश्चात् पहली प्राप्ति से 45,000 रु. प्राप्त हुए। इसको साझेदारों में बाँटना है। साझेदारों के समायोजित दावे इस प्रकार होंगे—

	A (2/5) Rs.	B (2/5) Rs.	C (1/5) Rs.	Total Rs.
Capital Balance	12,000	24,000	36,000	72,000
Add Genral Reserve (2 : 2 : 1)	3,200	3,200	1,600	8,000
Adjusted Capitals	15,200	27,200	37,600	80,000

अब समस्या यह उत्पन्न होती है कि प्राप्ति का बटवारा किस अनुपात में किया जाए। यदि इसका बँटवारा लाभ-हानि विभाजन अनुपात में किया जाता है और आगे और प्राप्ति न हो तो इस दशा में एक साझेदार को हानि तथा दूसरे को लाभ हो सकता है। इस प्रकार यदि इसे पूँजी अनुपात में बाँटा जाए तो एक को लाभ तथा दूसरे को हानि हो सकती है अतः लाभ-हानि अथवा पूँजी अनुपात में बाँटना उचित नहीं है।

इस समस्या का समाधान करने के लिए खण्ड-वितरण हेतु निम्नलिखित दो विधियों में से किसी एक विधि को अपनाया जा सकता है।

- आनुपातिक पूँजी विधि जिसे आधिक्य पूँजी विधि (Surplus Capital Method) या लब्धि विधि (Quotient Method) भी कहा जाता है, तथा
- अधिकतम सम्भावित हानि विधि।

(a) **आनुपातिक पूँजी विधि (Proportionate Capital Method):** इस विधि के अन्तर्गत आनुपातिक पूँजी की तुलना साझेदारों की पूँजी के आधिक्य का निर्धारण न्यूनतम अंशदान प्रति इकाई के आधार पर किया जाता है। जिस भी साझेदार की पूँजी उसके लाभ विभाजन अनुपात के सन्दर्भ में अधिक होती है उसी को सर्वप्रथम उसकी अधिक पूँजी का भुगतान किया जाता है। इस प्रकार समस्त साझेदारों की पूँजी उनके लाभ विभाजन अनुपात में कर दी जाती है। तत्पश्चात्, उपलब्ध धनराशि को साझेदारों के मध्य उनके लाभ विभाजन अनुपात में वितरित कर दिया जाता है।

## पूँजी के आधिक्य की गणना करने के लिए उठाए जाने वाले चरण

### (Steps to be Taken to Calculate Surplus Capital)

- सर्वप्रथम आर्थिक चिट्ठे में प्रदर्शित साझेदारों की पूँजी के अन्तर्गत साझेदारों के चालू खातों के शेष, अवितरित लाभों के सम्बन्ध में समायोजनाएं कर ली जानी चाहिए (साझेदारों के ऋणों को छोड़ कर, क्योंकि उनका पहले से ही भुगतान हो चुका है)
- समयोजित पूँजी को साझेदारों के अपने-अपने लाभ विभाजन अनुपात की इकाईयों से भाग देकर प्रति इकाई अंशदान का निर्धारण किया जाना चाहिए। उदाहरणार्थ यदि A, B एवं C साझेदार  $\frac{2}{6} : \frac{2}{6} : \frac{1}{6}$  अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं, तो उनकी लाभ विभाजन इकाईयाँ 2, 2 एवं 1 हैं।
- प्राप्त लाभ विभाजन इकाईयों से न्यूनतम प्रति इकाई अंशदान के आधार पर प्रत्येक साझेदार के लिए आवश्यक पूँजी की गणना करनी चाहिए।
- इस पूँजी की प्रथम चरण द्वारा निर्धारित पूँजी की तुलना करके आधिक्य ज्ञात किया जाना चाहिए। जिस भी साझेदार की चरण (ii) के अनुसार पूँजी सबसे कम है उसका निराकरण कर दिया जाना चाहिए।
- इस चरणों को पुनर्आवर्ति उस समय तक की जाएगी जब तक एक साझेदार की पूँजी के अतिरिक्त अन्य सभी साझेदारों की पूँजी का निराकरण न हो जाए। जिस साझेदार की पूँजी का निराकरण नहीं हो पाता है, उसकी

अपेक्षाकृत सबसे अधिक पूँजी होती है।

(vi) अन्त से आरम्भ करने हुए, अन्तिम आधिक्य का सर्वप्रथम भुगतान किया जाना चाहिए। तत्पश्चात् अगले (next) आधिक्य का भुगतान किया जाना चाहिए तथा इसी प्रकार समस्त आधिक्य पूँजी का भुगतान कर दिया जाना चाहिए।

(vii) इस प्रकार चरण (vi) के पश्चात् समस्त साझेदारों की पूँजियां उनके लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार शेष रह जाएगी अतः इनका भुगतान लाभ विभाजन अनुपात में किया जा सकता है।

उदाहरण (पृष्ठ संख्या ?) को आधार मानते हुए वितरण करने हेतु धनराशि का वितरण इस प्रकार होगा:

	A (2/5) Rs.	B (2/5) Rs.	C (1/5) Rs.	Total Rs.
Adjusted Capitals (Total)	15,200	27,200	37,600	80,000
Profit Sharing Ratio	2	2	1	
Capital contributed per unit of profit share	(7,600)	(13,600)	(37,600)	
Proportionate capital on the basis of A's lowest contribution	15,200	15,200	7,600	38,000
Surplus Capitals	Nil	12,000	30,000	42,000
Profit Sharing Ratio		2	1	
Surplus capital per unit of profit share	Nil	(6,000)	(30,000)	
Proportionate surplus on the basis of lowest contributions of B	—	12,000	6,000	18,000
Absolute Surplus	—	Nil	24,000	24,000

Thus, the scheme of distribution to partners shall be as follows:

(i) Upto Rs. 24,000 to C for absolute surplus.

(ii) Upto Rs. 18,000 (i.e., 12,000 + 6,000) next to B and C in the ratio of 2 : 1 for ordinary surplus.

(iii) Upto Rs. 38,000 (i.e., 15,200 + 15,200 + 7,600) next to A, B and C in the ratio of 2 : 2 : 1 for capital (proportionate).

(iv) Balance remaining (being profit on realisation) to A, B and C in the profit sharing ratio 2 : 2 : 1.

So, the amount of cash available of Rs. 45,000 will be distributed as follows:

	A	B	C	Total
Adjusted Capitals	15,200	27,200	37,600	80,000
Less First Rs. 24,000 to C for absolute surplus	—	—	24,000	24,000
	15,200	27,200	13,600	56,000
Less next Rs. 18,000 to B and C for ordinary surplus in 2 : 1 ratio	—	12,000	6,000	18,000
	15,200	15,200	7,600	38,000
Less balance Rs. 3,000 for proportionate capital to A, B and C in 2 : 2 : 1 ratio	1,200	1,200	600	3,000
Balance unpaid (being loss on realisation in 2 : 2 : 1 ratio)	14,000	14,000	7,000	35,000

(b) अधिकतम सम्भावित हानि विधि अथवा काल्पनिक हानि विधि (Maximum Possible Loss Method or Notional Loss Method): इस विधि के अनुसार सम्पत्तियों से प्राप्त प्रत्येक भुगतान को अन्तिम प्राप्त भुगतान माना जाता है तथा कुल पूँजी के योग में से उपलब्ध राशि को घटा कर अधिकतम सम्भावित हानि को ज्ञात किया जाता है। इस काल्पनिक अर्थात् नाममात्र की हानि को साझेदारों के मध्य उनके लाभ विभाजन अनुपात में विभाजित कर दिया जाता है। नाममात्र

की हानि को घटाने के पश्चात् शेष रहे पूँजी के शेषों का भुगतान कर दिया जाता है। यदि नाममात्र की हानि का भाग साझेदार की पूँजी से अधिक होता है, तब इस हानि अथवा न्यूनता को अन्य साझेदारों के मध्य गार्नर बनाम मर्रे नियम के अनुसार विभाजित कर दिया जाता है।

उपरोक्त उदाहरण (पृष्ठ संख्या ?) को आधार मानते हुए वितरण करने हेतु उपलब्ध धनराशि Rs. 45,000 को इस विधि के अन्तर्गत निम्न प्रकार से वितरण किया जाएगा—

### Illustration 23

	A	B	C	Total
Adjusted Capitals	15,200	27,200	37,600	80,000
Loss Maximum Possible loss:				
Total Capitals 80,000				
(-) Cash available 45,000				
35,000 divided in 2 : 2 : 1 ratio	14,000	14,000	7,000	35,000
Amount at credit	1,200	13,200	30,600	45,000
Cash Available paid	1,200	13,200	30,600	45,000
Balance unpaid being loss on realisation in 2 : 2 : 1 ratio	14,000	14,000	7,000	35,000

उदाहरण: अ, ब तथा स साझेदार लाभों तथा हानियों को समानुपात में बाँटते हैं। उन्होंने फर्म को समाप्त करने का निर्णय लिया। 1 अप्रैल, 1992 को फर्म का चिट्ठा इस प्रकार था:

A, B and C are in partnership sharing profits and losses equally. They decide to dissolve the firm with effect from 1st April, 1992 when their Balance Sheet stood as follows:

	Rs.		Rs.
Sundry Creditors लेनदार	16,000	Debtors देनदार	60,000
Capital Accounts: पूँजी खाते		Stock स्टॉक	28,000
(A) अ	36,000	Cash in hand हस्त रोकड़	4,000
(B) ब	24,000		
(C) स	16,000		
	92,000		92,000

Assets were realised gradually. Realisation after expenses were:

(i) प्रथम वसूली (first realisation) Rs. 31,500

(ii) द्वितीय वसूली (second realisation) Rs. 28,900

(iii) तृतीय वसूली (third realisation) Rs. 15,600

निम्नलिखित विधियों में रोकड़ का वितरण कीजिए:

Show the distribution of cash under:

(a) Proportionate Capital Method (आनुपातिक पूँजी विधि)

(b) Maximum Possible Loss Method (अधिकतम सम्भावित हानि विधि)

**Solution:****(a) Proportionate Capital Method:****CALCULATION OF SURPLUS CAPITAL:**

	A Rs.	B Rs.	C Rs.
Total Capitals	36,000	24,000	16,000
Profit Sharing Ratio	1	1	1
Capital contribution per unit of profit share	(36,000)	(24,000)	(16,000)
Proportionate capital on the basis of C's lowest contribution	16,000	16,000	16,000
Surplus Capitals	20,000	8,000	Nil
Profit sharing ratio	1	1	—
Surplus capital per unit of profit share	(20,000)	(8,000)	—
Proportionate surplus on the basis of lowest contribution of B	8,000	8,000	—
<b>Absolute Surplus</b>	<b>12,000</b>	<b>—</b>	<b>—</b>

**STATEMENT SHARING DISTRIBUTION OF CASH**

	<i>Sundry Creditors Rs.</i>	<i>A's Capital Rs.</i>	<i>B's Capital Rs.</i>	<i>C's Capital</i>
Amount due	16,000	36,000	24,000	16,000
Cash in hand paid to creditors	4,000	—	—	—
Balance due	12,000	36,000	24,000	16,000
1st realisation Rs. 31,500				
Rs. 12,000 paid to creditors	12,000	—	—	—
Rs. 12,000 paid to A for absolute surplus	—	12,000	—	—
Rs. 7,500 paid to A and B equally for ordinary surplus	—	3,750	3,750	—
Balance due	—	20,250	20,250	16,000
2nd realisation Rs. 28,900				
Rs. 8,500 paid to A and B equally for balance of ordinary surplus	—	4,250	4,250	—
Balance due	—	16,000	16,000	16,000
Rs. 20,400 (Rs. 28,900 – 8,500) divided among all partners in profit sharing ratio	—	6,800	6,800	6,800
Balance due	—	9,200	9,200	9,200
3rd realisation Rs. 15,600 divided among all partners in profit sharing ratio				
		5,200	5,200	5,200
Balance unpaid for (or loss on realisation)		4,000	4,000	4,000

**(b) Maximum Possible Loss Method:**

## STATEMENT SHOWING DISTRIBUTION OF CASH

	<i>Sundry Creditors</i>	<i>A's Capital</i>	<i>B's Capital</i>	<i>C's Capital</i>
	Rs.	Rs.	Rs.	
Amount due	16,000	36,000	24,000	16,000
Cash in hand Rs. 4,000 paid to Sundry Creditors	4,000	—	—	—
Balance due	12,000	36,000	24,000	16,000
1st realisation Rs. 31,500				
Rs. 12,000 paid to creditors (Balance available Rs. 19,500)	12,000	—	—	—
Balance due	—	36,000	24,000	16,000
Maximum possible loss (Total capitals Rs. 76,000 – cash available Rs. 19,500) Rs. 56,500 allocated to partners in profit sharing ratio		18,833	18,833	18,834
Amount at Credit		17,167	5,167	(-) 2,834
C's deficiency Rs. 2,834 allocated to A and B in the ratio of 36,000 : 24,000 or 3 : 2		(-) 1,700	(-) 1,134	(+) 2,834
Amount at credit and cash available paid		15,467	4,033	—
Balance due (Total capital less cash paid)		20,533	19,967	16,000
2nd realisation Rs. 28,900				
Maximum possible loss: Rs. 56,500 (20,533 + 19,967 + 16,000) – Rs. 28,900 = Rs. 27,600 allocated to A, B and C in profit sharing ratio		9,200	9,200	9,200
Amount at credit and cash available paid		11,333	10,767	9,200
Balance due		9,200	9,200	9,200
3rd realisation Rs. 15,600				
Maximum possible loss on realisation Rs. 27,600 – Rs. 15,600 = Rs. 12,000 allocated to all partners in profit sharing ratio		4,000	4,000	4,000
Amount at credit and cash available paid		5,200	5,200	5,200
Balance unpaid (being loss on realisation)		4,000	4,000	4,000